उर्दू का परिचयात्मक व्याकरण

उर्दू का परिचयात्मक व्याकरण

रविन्द्र गर्गेश
चन्द्रशेखर

क़ौमी काउन्सिल बराए फ़रोग़-ए-उर्दू ज़बान
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, माध्यमिक एंव उच्च शिक्षा विभाग, भारत सरकार
पश्चिमी खंड न. 1, विंग न. 6, राम कृष्ण पुरम, नई दिल्ली - 110066

© कौमी काउन्सिल बराए फ़रोग़-ए-उर्दू ज़बान, नई दिल्ली

उर्दू का परिचयात्मक व्याकरण

रविन्द्र गर्गेश

चन्द्रशेखर

प्रथम संस्करण	:	अगस्त 2005
मूल्य	:	रू. 56
प्रतियाँ	:	3000
पब्लिकेशन सं.	:	1232

ISBN : 81-7587-100-8

लेसर टाईप सेटिंग : मल्टी लिंगवल सोल्यूशन्स
मुद्रण : एस. नारायण एंड सन्स, बी.-88, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फ़ेज़-II, नई दिल्ली-110020

कौमी काउन्सिल बराए फ़रोग़-ए-उर्दू ज़बान
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, माध्यमिक एंव उच्च शिक्षा विभाग, भारत सरकार
पश्चिमी खंड न. 1, विंग न. 6, रा.कृ. पुरम, नई दिल्ली - 110066

प्राक्कथन

कौमी काउन्सिल बराए फरोग–ए–उर्दू जबान, उर्दू भाषा के विकास, विस्तार एवं प्रसार के लिए स्थापित मानव संसाधन विकास मंत्रालय, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, भारत सरकार की एक स्वायत्त संस्था है। शिक्षा के आधुनिकीकरण के संदर्भ में काउन्सिल का उत्तरदायित्व वैज्ञानिकी एवं तकनीकी विकास तथा नई विचार धारा से संबंधित पाठ्य सामग्री भी उपलब्ध कराना है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए काउन्सिल ने दूरस्थ पद्धति से उर्दू सिखाने के लिए एक सर्टिफ़िकेट कोर्स आरंभ करने का निश्चय किया है। विभिन्न विश्वविद्यालयों, संस्थानों एवं हमारे स्वयं काउन्सिल में कार्यरत, चुने हुए विद्वानों से एक विशेषज्ञ कार्यदल का गठन किया गया। प्रो. गोपी चन्द नारंग की अध्यक्षता में इस कार्यदल ने इस सामग्री को जाँचा और इस पर विचार विमर्श किया। आशा की जाती है कि इससे दूरस्थ पद्धति द्वारा उर्दू सीखने की व्यापक माँग को पूरा किया जा सकेगा।

प्रस्तुत पुस्तक दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. रविन्द्र गर्गेश तथा डॉ. चन्द्रशेखर के द्वारा लिखी गई है। इसमें भाषा के विन्यास पर विभिन्न प्रकार से विवेचन किया गया है। कमेटी ने कोशिश की है कि प्रस्तुत पुस्तक को यथासंभव साधारण रूप में पेश किया जाए। जहां जहां तकनीकी शब्दावली को प्रयोग में लाया गया है वहां वहां उसे साधारण शब्दों में समझाया भी गया है। विवेचन के लिए साधारण एवं आसानी से समझ में आ जाने वाली भाषा अपनाई गई है।

आशा है कि सभी आवश्यक तत्व जिनको ध्यान मे रखते हुए यह पुस्तक तैयार की गई है इसमें उपलब्ध होंगे और यह पुस्तक उर्दू के सीखने वालों के लिए मूल्यवान सिद्ध होगी।

डॉ. एम. हमीदुल्लाह भट्

निदेशक

विषय सूची

खंड 1 — 9

- इकाई 1 उर्दू की वाक्य सरचना — 10
- इकाई 2 सज्ञा पदबंध — 17
- इकाई 3 क्रिया पदबंध — 22

खंड 2 — 28

- इकाई 1 सज्ञा — 29
- इकाई 2 सर्वनाम — 43
- इकाई 3 विशेषण — 58
- इकाई 4 सख्यांक — 70

खंड 3 — 78

- इकाई 1 वर्तमानकाल, भूतकाल (सामान्य, घटमान और सभावनार्थ तथा भविष्य रूप) — 79
- इकाई 2 पूर्णकालिक क्रिया रूप — 91
- इकाई 3 आश्रित, संभाव्य, आज्ञार्थक, भावार्थक एव वृत्ति — 100
- इकाई 4 सकर्मक, अकर्मक, व्युत्पन्न सकर्मक तथा प्रेरणार्थक क्रिया रूप — 109

खंड 4 119

इकाई 1 परसर्ग 120

इकाई 2 कर्म वाच्य रचना 134

इकाई 3 सामान्य, संयुक्त एवं संयोजी क्रियाएं 139

इकाई 4 क्रिया विशेषण 144

खंड 5 156

इकाई 1 उर्दू वाक्य अभिरचना – 1 157

इकाई 2 उर्दू वाक्य अभिरचना – 2 165

इकाई 3 संयुक्त वाक्य 176

इकाई 4 सम्मिश्र वाक्य 186

खंड 1

इस खंड में आप उर्दू के वाक्य–विन्यास के बारे में पढ़ेंगे। आप जानते है कि बोलते या लिखते समय हम अपनी इच्छानुसार शब्दों का क्रम तय नहीं कर सकते क्योंकि भाषा का अपना एक ढाचा होता है। किसी भी भाषाई ढाचे को जानने के लिए हमें उस भाषा की वाक्य संरचना को समझना पड़ता है। वाक्य संरचना को हम पदबंधों के गठन और योजन से देखते है। उर्दू के पदबंध वाक्य–विन्यास को हम इस खंड में संज्ञा पदबंध तथा क्रिया पदबंध इकाईयों में पढ़ेंगे। आगामी खंडों मे वाक्य–विन्यास से संबंधित सभी घटकों पर प्रकाश डाला जाएगा। व्याकरण संबंधी सभी विषयों को उदाहरणों के द्वारा समझाया जाएगा।

इस खंड को तीन इकाईयों में विभाजित किया गया है।

इकाई 1 : उर्दू की वाक्य संरचना

इकाई 2 : संज्ञा पदबंध

इकाई 3 : क्रिया पदबंध

प्रत्येक इकाई के अंत मे स्वयं–परीक्षण अभ्यास के रूप मे अभ्यास–1 दिया गया है जिसे इकाई के पठन उपरान्त पूरा करना है। अभ्यास–1 के प्रश्नो की कुंजी खंड के अन्त मे दी गई है। स्वयं परीक्षण अभ्यास के अतिरिक्त अभ्यास–2 दिया गया है जिसके उत्तर विद्यार्थी एक अलग पृष्ठ पर लिख कर काउन्सिल को भेजें। प्रयुक्त शब्दो के अर्थ शब्दावली के रूप मे पुस्तक के अंत मे दिए गए है।

इकाई 1
उर्दू की वाक्य संरचना

संरचना

1.1.0 उद्देश्य

1.1.1 भूमिका

1.1.2 वाक्य संरचना

1.1.3 कर्ता तथा विधेय

1.1.4 कर्ता–क्रिया अन्विति

1.1.0 उद्देश्य

इस इकाई को ध्यानपूर्वक पढ़ने के उपरांत आप निम्नलिखित बातें समझ पाएंगे

- उर्दू की बुनियादी वाक्य संरचना
- कर्ता तथा विधेय की संकल्पना
- कर्ता – क्रिया अन्विति
- कर्म का वाक्य में स्थान एवं प्रकार्य

1.1.0 भूमिका

आप जानते हैं कि उर्दू बोलते अथवा लिखते समय हम अपनी इच्छानुसार शब्दों का क्रम नहीं बना सकते। यह इसलिए है कि बोलने तथा लिखने में शब्दो की एक पृथक अभिरचना होती है। यही अभिरचना शैली हम सभी इस्तेमाल करते हैं। अगर हम इस बुनियादी अभिरचना को बदल दें तो संभवतः वाक्य उचित न

लगे अथवा स्वीकार्य न हो। इस इकाई में हम उर्दू की वाक्य संरचना पर प्रकाश डालेंगे।

सभी व्याकरणिक कोटियां जैसे संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, क्रिया–विशेषण आदि सभी वाक्य संरचना में अपने यथोचित स्थान पर आती हैं। वास्तव में इन सभी कोटियों की परिभाषा वाक्य में इनके प्रकार्य से स्पष्ट हो जाती है। अतः यह पाठ उर्दू के बुनियादी वाक्य संरचना के विशलेषण से शुरू होता है।

1.1.2 वाक्य संरचना

सभी भाषाएं संरचना से संबंधित तत्वों को आधार बनाकर देखी जाती है। भाषा विशेष के व्याकरण की रचना में वाक्य सबसे प्रमुख इकाई मानी गई है। नीचे लिखे दो वाक्यों को देखिए

(1) لڑکا آیا

लड़का आया

(2) لڑکا آم کھاتا ہے

लड़का आम खाता है

वाक्य (1) में لڑکا (लड़का) संज्ञा तथा آیا (आया) क्रिया है। वाक्य के प्रारंभ में प्रयुक्त संज्ञा कर्ता तथा क्रिया रूप क्रिया ही कहलाती है। वाक्य (2) में शब्द لڑکا (लड़का) तथा آم (आम) संज्ञाएं हैं क्रिया रूप کھاتا ہے (खाता है) है। इस वाक्य में क्रिया करने वाली संज्ञा को 'कर्ता', لڑکا (लड़का), तथा की गई क्रिया کھاتا ہے (खाता है) को 'क्रिया' और अन्य संज्ञा آم (आम) जिस पर क्रिया की गई हो को '**कर्म**' कहते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि उर्दू वाक्य के दो संरचनात्मक रूप हैं

1. कर्ता क्रिया

अथवा

2. कर्ता कर्म क्रिया

1.1.3 कर्ता एवं विधेय

परंपरानुसार वाक्य–संरचना के दो भाग हैं कर्ता तथा विधेय। नीचे दिए गए वाक्य देखिए :

लड़का आया

لڑکا آیا (1)

लड़की आई

لڑکی آئی (2)

वाक्य (1) तथा (2) में संज्ञा لڑکا (लड़का) और لڑکی (लड़की) क्रमशः कर्ता तथा क्रिया रूप آیا/آئی (आया/आई) विधेय हैं। एक अन्य वाक्य देखिए :

لڑکی آم کھاتی ہے (3)

लड़की आम खाती है

वाक्य (3) में لڑکی (लड़की) कर्ता तथा آم کھاتی ہے (आम खाती है) विधेय हैं। अतः 1. 2 इकाई में हम ने कर्ता–क्रिया अथवा कर्ता–कर्म–क्रिया घटकों पर आधारित उर्दू वाक्य–संरचना का वर्णन पढ़ा है। अच्छा यही है कि हम कर्ता–विधेय के स्थान पर वाक्य को उपरोक्त घटकों के रूप को प्रयोग में लाएं ताकि क्रिया एवं कर्म इकाइयों का स्पष्ट ज्ञान हो सके।

1.1.4 कर्ता–क्रिया अन्विति

उर्दू में क्रिया (तथा विशेषण भी) लिंग द्योतक (स्त्री लिंग अथवा पुल्लिग) के साथ प्रयुक्त होती है। सामान्यतः लिंग द्योतक (मार्कर) कर्ता के लिंग अनुरूप होते हैं। सभी कर्ता (संज्ञाएं) या तो पुल्लिग होते हैं अथवा स्त्रीलिंग। नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़ें :

لڑکا آیا (1)

लड़का आया

لڑکی آئی (2)

लड़की आई

دروازہ کھلا (3)

दरवाजा खुला

کھڑکی کھلی (4)

खिड़की खुली

ध्यान से देखें कि वाक्य (1) तथा (3) में क्रिया के अंत में लिंग द्योतक /आ/ आया है। यह पुल्लिंग मार्कर (द्योतक) है। यह द्योतक

सजीव जैसे لڑکا (लड़का) तथा निर्जीव जैसे, دروازہ (दरवाज़ा) दोनों के लिए है। वाक्य के क्रिया रूप में स्त्रीलिंग द्योतक 'ی' /ई/ का प्रयोग हुआ है अतः सजीव संज्ञा के स्थान पर स्त्रीलिंग द्योतक जैसे لڑکی (लड़की) के साथ, तथा निर्जीव संज्ञा کھڑکی (खिड़की) के साथ प्रयोग में लाया गया है। इसका कारण यह है कि لڑکا (लड़का) तथा دروازہ (दरवाज़ा) दोनों पुल्लिंग हैं और لڑکی (लड़की) तथा کھڑکی (खिड़की) स्त्रीलिंग हैं।

एक अन्य प्रकार की अन्विति कर्ता बहुवचन और क्रिया (तथा विशेषण भी) के बीच में भी इसी प्रकार से बनती हैं। उदाहरणतः नीचे दिए गए वाक्य देखिए

(5) لڑکے آئے

लड़के आए

(6) دروازے کھلے

दरवाज़े खुले

(7) لڑکیاں آئیں

लड़कियाँ आईं

(8) کھڑکیاں کھلیں

खिड़कियाँ खुलीं

ऊपर लिखे सभी वाक्यों में क्रिया तथा संज्ञा के साथ बहुवचन द्योतक जुड़ा हुआ है। इसमें से संज्ञा के साथ जुड़े बहुवचन द्योतक का विवेचन खंड 2 की प्रथम इकाई में किया जाएगा। अपितु इतना बताना काफी है कि संज्ञा के साथ जुड़े ے /ए/ से पुल्लिंग बहुवचन का पता चलता है जैसे لڑکے (लडके) तथा آئے (आए) एवं کھلے (खुले) तथा ے /ए/ क्रिया के साथ जुड़कर भी पुल्लिंग बहुवचन का द्योतक बनता है। लेकिन स्त्रीलिंग बहुवचन द्योतक یاں /यां/ है जैसे, لڑکیاں (लडकियाँ) तथा کھڑکیاں (खिड़कियाँ)। इसी प्रकार क्रिया के अन्त में ئیں /ईं/ जुड़ने से स्त्रीलिंग बहुवचन बनता है जैसे آئیں (आईं) तथा کھلیں (खुलीं)। कर्ता–क्रिया अन्विति को निम्नलिखित वाक्यों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है :

(9) لڑکا آم کھاتا ہے

लड़का आम खाता है

(10) لڑکی آم کھاتی ہے

लड़की आम खाती है

वाक्य (9) तथ (10) में क्रिया के पुल्लिंग एंव स्त्रीलिंग द्योतक कर्ता–लिंग को दर्शाते हैं न कि कर्म–लिंग को, जैसे कि ऊपर लिखित वाक्य (10) में कर्म अर्थात آم (आम) पुल्लिंग परन्तु क्रिया कर्ता के अनुसार स्त्रीलिंग है।

अभ्यास – 1

---

1. नीचे लिखे वाक्यों में कर्ता, कर्म तथा क्रिया रूपों की पहचान कर दिए गए खाली स्थान में लिखें :

   لڑکا گیا　　**लड़का गया**　　**(क)**

   कर्ता : ....

   क्रिया : ....

   لڑکا سیب کھاتا ہے　　**लड़का सेब खाता है**　　**(ख)**

   कर्ता : ....

   क्रिया : ....

   कर्म : ....

   حامد کتاب پڑھتا ہے　　**हामिद किताब पढ़ता है**　　**(ग)**

   कर्ता : ....

   क्रिया : ....

   कर्म : ....

2. नीचे लिखे वाक्यो के बहुवचन रूप ख़ाली स्थान में लिखें :

   एकवचन　لڑکا کیلا کھاتا ہے　　लड़का केला खाता है　　(क)

   बहुवचन ....

   एकवचन　لڑکی سیب کھاتی ہے　　लड़की सेब खाती है।　　(ख)

   बहुवचन ....

3. नीचे के वाक्यो में कर्ता तथा विधेय की पहचान कर दिए गए ख़ाली स्थान में लिखें :

حامد گیا	**हामिद गया**	(क)

कर्ता : ....

विधेय: ....

لڑکا آم کھاتا ہے	**लड़का आम खाता है**	(ख)

कर्ता : ....

विधेय : ....

4. नीचे के वाक्यों में दिए गए ख़ाली स्थान में लिखें कि कर्ता तथा क्रिया के बीच लिंग अन्विति है या नहीं :

हां	नहीं		
....	....	لڑکی آیا	(क)
....	....	لڑکا آئی	(ख)
....	....	حامد سیب کھاتا ہے	(ग)
....	....	سیما کتاب پڑھتی ہے	(घ)

अभ्यास – 2

---

1. नीचे लिखे वाक्यों में कर्ता तथा विधेय की पहचान करके लिखे :

(क) حامد سیب کھاتا ہے

कर्ता : ....

विधेय : ....

(ख) لڑکا گیا

कर्ता : ....

विधेय : ....

2. नीचे के वाक्यों को कर्ता–क्रिया अन्विति के अनुसार लिखें :

لڑکا	آئی
حامد	کھلی
سیما	جاتا ہے
دروازہ	آیا
کھڑکی	کھلا

3. नीचे दिए गए शब्दों से कर्ता–क्रिया अथवा कर्ता–कर्म–क्रिया घटकों वाले तीन वाक्य बनाइए :

آیا کتاب حامد کھاتی ہے احمد
پڑھتی ہے پڑھتا ہے سیما کھاتا ہے آم

....

....

....

....

इकाई 2

संज्ञा पदबंध

संरचना :

1.2.0 उद्देश्य
1.2.1 भूमिका
1.2.2 केवल संज्ञा से बना संज्ञा पदबंध
1.2.3 संज्ञा एवं विशेषण से निर्मित संज्ञा पदबंध
1.2.4 संज्ञा एवं विशेषक पदबंधों से निर्मित संज्ञा पदबंध
1.2.5 कर्ता पदबंध बतौर कर्ता, मुख्य कर्म एवं गौण कर्म

1.2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के उपरांत आप वाक्य के घटकों में संज्ञा पदबंध का महत्त्व समझ लेंगे। इसके अतिरिक्त आप

- संज्ञा पदबंध की अभिरचना समझ सकेंगे
- जान पायेंगे कि संज्ञा पदबंध में उचित स्थान कर्ता अथवा कर्म घटकों का है
- संज्ञा पदबंध में व्याकारणिक घटक जैसे संज्ञा तथा विशेषण का स्थान भी जान लेंगे

1.2.1 भूमिका

आप इकाई–1 में पढ़ चुके हैं कि वाक्य के दो भाग होते हैं। संज्ञा पदबंध तथा क्रिया पदबंध। इस इकाई में आप संज्ञा पदबंध के विषय में पढ़ेंगे। क्रिया पदबंध के विषय में इकाई–3 में विवेचन होगा। संज्ञा पदबंध वाक्य की वह इकाई है जो कर्ता तथा कर्म दोनों रूपों में कार्य करती है।

1.2.2 केवल संज्ञा से बना संज्ञा पदबंध

वाक्य की इकाई के रूप में संज्ञा पदबंध, जो प्रायः कर्ता अथवा कर्म के घटकों से बनता है, एक संज्ञा जैसे, لڑکا (लड़का), لڑکی (लड़की) अथवा कुछ अन्य जातिवाचक या व्यक्तिवाचक संज्ञा अथवा सर्वनाम होते हैं। जैसे,

وہ	آپ	ہم	تم	میں
वो	आप	हम	तुम	मैं

(संज्ञा की व्याख्या खंड–2 की इकाई–1 में सर्वनाम की खंड़ – 2 की इकाई – 2 में की जाएगी)

संज्ञा पदबंधों को प्रारंभ करने वाले शब्द पदबंध प्रमुख कहलाते हैं। कभी–कभी यह एकल शब्द के रूप में प्रयुक्त होते हैं जैसे;

(1) احمد آیا

अहमद आया

(2) لڑکی انار کھاتی ہے

लड़की अनार खाती है

वाक्य (1) तथा (2) में احمد (अहमद) और لڑکی (लड़की) संज्ञा हैं जो कि दो अलग–अलग वाक्यों में कर्ता के रूप में कार्य कर रहे हैं। वाक्य (2) में انار (अनार) संज्ञा है जो कर्म रूप है। यह एकल शब्द अपने–आप में संज्ञा पदबंध हैं।

1.2.3 संज्ञा तथा विशेषण से निर्मित संज्ञा पदबंध (संप.)

संज्ञा पदबंध (संप.) में संज्ञा (सं.) परिवर्तित होकर बृहत संज्ञा पदबंध बन सकता है। इसको बृहत रूप देने का एक तरीका यह है कि इससे पूर्व एक विशेषक (विशेषण=वि.) जोड़ दिया जाए, जैसे,

(1) لڑکا ٹھنڈا پانی پیتا ہے

सं. वि. सं.

संप.

लड़का ठंड़ा पानी पीता है

(2) دادی گرم چائے پیتی ہے

सं. वि. सं.

संप.

दादी गर्म चाय पीती है

वाक्य (1) तथा (2) में ٹھنڈا (ठंडा) तथ گرم (गर्म) विशेषण हैं। پانی (पानी) तथा چائے (चाय) के पूर्व इन विशेषणों के जुड़ने से संज्ञा, संज्ञा पदबंध में अर्थात विशेषण+संज्ञा में परिवर्तित हो जाती है।

1.2.4 संज्ञा एवं विशेषक पदबंधों से निर्मित संज्ञा पदबंध

संज्ञा पदबंध अन्य शब्दों से भी बन सकता है, जैसे संज्ञा तथा विशेषण पदबंध जो संज्ञा से पूर्व संयोजित किया गया हो। विशेषण पदबंध विशेषण और क्रिया विशेषण के संयोजन से बन सकता है जिसका प्रधान शब्द विशेषण ही होता है। उदाहरणत :

(10) بازار میں بہت اچھا سامان بکتا ہے

बाजार मे बहुत अच्छा सामान बिकता है

(2) لڑکا بہت اچھی کتاب پڑھتا ہے

लड़का बहुत अच्छी किताब पढ़ता है

वाक्य (1) मे विशेषक पदबंध بہت اچھا (बहुत अच्छा) तथा (2) मे بہت اچھی (बहुत अच्छी) है। ये विशेषण अपनी संज्ञा के साथ मिलकर संज्ञा पदबंध बनते हैं।

1.2.5 संज्ञा पदबंध बतौर कर्ता, मुख्य कर्म एवं गौण कर्म

यह उल्लेखनीय बात है कि संज्ञा पदबंध कर्ता, मुख्य कर्म तथा गौण कर्म के रूप मे भी कार्य करता है। नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से देखें :

(1) لڑکا لڑکی کو کتاب دیتا ہے

लड़का लड़की को किताब देता है

इस वाक्य में कर्ता, मुख्य कर्म तथा गौण कर्म सभी एक वचन संज्ञा अर्थात لڑکا (लड़का), لڑکی (लड़की) तथा کتاب (किताब) हैं। यह सब भी अपने आप में संज्ञा पदबंध हैं। नीचे लिखे एक अन्य वाक्य को पढ़ें :

(2) حامد چھوٹی بہن کو ایک اچھا تحفہ دیتا ہے

हामिद छोटी बहन को एक अच्छा तोहफ़ा देता है

वाक्य (2) में मुख्य कर्म तथा गौण कर्म अपने–अपने विशेषक तथा

संज्ञा से मिलकर बने हैं। ایک اچھا تحفہ (एक अच्छा तोहफ़ा) एवं چھوٹی بہن (छोटी बहन)। यह दोनों कर्म रूप भी संज्ञा पदबंध हैं।

अभ्यास – 1

1. नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञा पदबंधो को पहचानें तथा दिए गए ख़ाली स्थान में भरें :

لمبی لڑکی یہاں رہتی ہے

....

نیک آدمی ہمارے گھر آیا

....

حامد کتاب پڑھتا ہے

....

2. नीचे के वाक्यों में कर्ता रूपी संज्ञा पदबंध जोड़ें :

..................گھر جاتا ہے

..................کھانا کھاتا ہے

..................بازار جاتا ہے

3. नीचे के वाक्यों में ख़ाली स्थान भर कर वाक्य पूरा करें :

حامد ....گھر لایا

رادھا..................کھاتی ہے

سیما..................دھوتی ہے

अभ्यास – 2

1. नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञा पदबंध की पहचान करें। और उसे खाली स्थान में भरें :

لڑکا آیا

احمد کتاب پڑھتا ہے

حامد موہن کو تحفہ دیتا ہے

2. नीचे लिखे शब्दों से तीन वाक्य बनाएं :

آم کھاتا ہے دیتا ہے کتاب

آیا کو موہن حامد

....

....

....

3. नीचे के वाक्यों में गौण कर्म तथा मुख्य कर्म की पहचान करें :

احمد موہن کو کتاب دیتا ہے

मुख्य कर्म : ....

गौण कर्म : ....

موہن حامد کو خط لکھتا ہے

मुख्य कर्म : ....

गौण कर्म : ....

....

अथवा कर्ता–कर्म–क्रिया पर भी आधारित होती है जैसे,

(2) لڑکا آم کھاتا ہے

लड़का आम खाता है

यह समझना ज़रूरी है कि वाक्य (1) में कोई कर्म नहीं है जबकि वाक्य (2) में एक कर्म है। कर्म का वाक्य में होना या न होना क्रिया के रूप पर निर्भर करता है। यह कहा जा सकता है कि क्रिया के दो रूप होते हैं **अकर्मक** तथा **सकर्मक**। जिस वाक्य में अकर्मक क्रिया हो उसमें केवल कर्ता होता है, और जिस वाक्य में सकर्मक क्रिया हो उसमें कर्ता और कर्म दोनों होते हैं। अतः वाक्य (1) में एकल संज्ञा لڑکا (लड़का) है और इसमें कोई कर्म नहीं है। क्योंकि क्रिया آیا (आया) अकर्मक क्रिया है। वाक्य (2) में کھاتا ہے (खाता है) सकर्मक क्रिया है जिसके साथ दो संज्ञाएं لڑکا (लड़का) तथा آم (आम) का प्रयोग हुआ है। इनमें से एक संज्ञा कर्ता की द्योतक है तथा दूसरी कर्म की। अतः इस वाक्य में لڑکا (लड़का) कर्ता है तथा آم (आम) कर्म का द्योतक है।

1.3.5 क्रिया पदबंध तथा मुख्य एवं गौण कर्म

उर्दू वाक्य संरचना में एक अन्य प्रकार की क्रिया पदबंध भी है जिसे द्विकर्मक कहते हैं। क्रियाएं जैसे لکھنا (लिखना) और دینا (देना) इसी कोटि से संबंधित हैं। नीचे लिखे वाक्य पढ़ें :

(1) لڑکا لڑکی کو کتاب دیتا ہے

लड़का लड़की को किताब देता है

(2) حامد موہن کو خط لکھتا ہے

हामिद मोहन को ख़त लिखता है

वाक्य (1) तथा (2) में क्रमशः दो कर्म لڑکی (लड़की) और کتاب (किताब) तथा موہن (मोहन) और خط (ख़त) हैं। इन दोनों वाक्यों में मुख्य कर्म کتاب (किताब) और خط (ख़त) है क्योंकि नीचे दिये गए प्रश्न का उत्तर उन पर आता है

(3) لڑکا کیا دیتا ہے؟

लड़का क्या देता है?

حامد کیا لکھتا ہے؟ (4)

हामिद क्या लिखता है?

वाक्य (1) तथा (2) में गौण कर्म لڑکی (लड़की) तथा موہن (मोहन) हैं क्योंकि नीचे दिए गए प्रश्न का उत्तर उन पर आता है।

لڑکا کسے کتاب دیتا ہے؟ (5)

लड़का किसे किताब देता है?

حامد کسے خط لکھتا ہے؟ (6)

हामिद किसे ख़त लिखता है?

गौण कर्म अतिरिक्त संज्ञा होती है जो वाक्य के अंत में आवश्यक नहीं होती। उदाहरणतः निम्नलिखित वाक्य देखिए :

لڑکے نے کتاب دی (7)

लड़के ने किताब दी

حامد نے خط لکھا (8)

हामिद ने ख़त लिखा

यद्यपि यह बात ध्यान देने की है कि उर्दू में गौण कर्म पहले तथा मुख्य कर्म बाद में आता है। ऐसी विभक्तियों मे वाक्य संरचना कर्ता–गौणकर्म–मुख्य कर्म–क्रिया पर आधारित होगी।

अभ्यास – 1

1. नीचे लिखे वाक्यों में अकर्मक अथवा सकर्मक क्रिया की पहचान करें :

सकर्मक / अकर्मक	احمد کھاتا کھاتا ہے	(क)
सकर्मक / अकर्मक	لڑکا دوڑتا ہے	(ख)
सकर्मक / अकर्मक	وارث گھر آتا ہے	(ग)
सकर्मक / अकर्मक	لڑکی کتاب پڑھتی ہے	(घ)

2. मुख्य एवं गौण कर्म की पहचान कर दिए गए स्थान मे लिखें :

(क) احمد موہن کو اردو پڑھاتا ہے

अहमद मोहन को उर्दू पढ़ाता है

मुख्य कर्म :

गौण कर्म :

(ख) عادل موہن کو کتاب دیتا ہے
आदिल मोहन को किताब देता है

मुख्य कर्म :

गौण कर्म :

(ग) سیما سارا کو تحفہ دیتی ہے
सीमा सारा को तोहफ़ा देती है

मुख्य कर्म :

गौण कर्म :

अभ्यास – 2

---

1. नीचे दिए गए वाक्यों में अकर्मक/सकर्मक की पहचान करें :

(क) لڑکی آئی

(ख) سیما سیب کھاتی ہے

(ग) موہن غزل سنتا ہے

2. नीचे दिए गए शब्दों से पन्द्रह वाक्य बनाइए :

بازار	چلا	گیا	آیا	کھاتا ہے
سیب	گاتی ہے	کہتا ہے	پڑھتی ہے	سنتا ہے
گانا	غالب	احمد	ریحانہ	غزل
شعر	کتاب	سیما	موہن	پان

3. नीचे दिए गए वाक्यों में मुख्य कर्म एवं गौण कर्म की पहचान करके लिखें :

(क) احمد کتاب پڑھتا ہے

(ख) حامد موہن کو غزل سناتا ہے

(ग) سیما خط لکھتی ہے

(घ) لڑکی پھول لائی

अभ्यास – 1 के उत्तर

खंड – 1

इकाई – 1

1 (क) कर्ता : لڑکا   (ख) कर्ता : لڑکا   (ग) कर्ता : حامد

क्रिया : گیا   क्रिया : کھاتا ہے   क्रिया : پڑھتا ہے

2 (क) لڑکے کیلے کھاتے ہیں   (ख) لڑکیاں سیب کھاتی ہیں

3. (क) कर्ता : حامد   (ख) कर्ता : لڑکا

विधेय : گیا   विधेय : آم کھاتا ہے

4. (क) नहीं   (ख) नहीं   (ग) हाँ   (घ) हाँ

इकाई – 2

1. (क) لمبی لڑکی   (ख) نیک آدمی، ہمارے گھر   (ग) کتاب، حامد

2 (क) ذہین لڑکا   (ख) چھوٹا بھائی   (ग) بڑا لڑکا

3. (क) میٹھے آم   (ख) لال سیب   (ग) زیادہ کپڑے

इकाई – 3

1. (क) सकर्मक   (ख) अकर्मक

(ग) अकर्मक   (घ) सकर्मक

2 (क) मुख्य कर्म اردو   (ख) मुख्य कर्म کتاب

गौण कर्म موہن   गौण कर्म موہن

(ग) मुख्य कर्म تحفہ

(घ) सकर्मक سارا

....

खंड 2

इस खंड मे आप उर्दू की संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा संखॉक विषयों को पढ़ेगे। यह सभी घटक संज्ञा पदबंधों की रचना में महत्वपूर्ण हैं। वस्तुतः संज्ञा पदबंध में संज्ञा तथा सर्वनाम प्रधान घटक हैं जबकि विशेषण और संख्यांक में संज्ञा विशेषक का कार्य करते हैं।

इस खंड में निम्नलिखित इकाईयाँ हैं :

इकाई 1 : संज्ञा

इकाई 2 : सर्वनाम

इकाई 3 : विशेषण

इकाई 4 : संख्यॉक

प्रत्येक इकाई के अंत में स्वयं–परीक्षण अभ्यास के रूप में अभ्यास–1 दिया गया है, जिसे इकाई के पठन उपरान्त पूरा करना है। अभ्यास–1 प्रश्नों की कुंजी खंड के अंत में दी गई है। स्वयं परीक्षण अभ्यास के अतिरिक्त अभ्यास –2 दिया गया है। जिसके उत्तर विद्यार्थी एक अलग पृष्ठ पर लिख कर काउन्सिल को भेजें। प्रयुक्त शब्दों के अर्थ शब्दावली के रूप में पुस्तक के अंत में दिये गए हैं।

इकाई 1

संज्ञा

संरचना

2.1.0 उद्देश्य

2.1.1 भूमिका

2.1.2 संज्ञा

2.1.3 लिंग

2.1.3.1 संज्ञा – पुल्लिंग

2.1.3.2 संज्ञा – स्त्रीलिंग

2.1.4 संज्ञा के प्रकार

2.1.4.1 व्यक्तिवाचक संज्ञा

2.1.4.2 जातिवाचक संज्ञा

2.1.5 वचन तथा कारक

2.1.5.1 एकवचन संज्ञा : कारक रूप

2.1.5.2 बहुवचन संज्ञा : कारक रूप

2.1.0 उद्देश्य

ध्यानपूर्वक इस इकाई को पढ़ने पर आप निम्नलिखित बातें समझेंगे :

- संज्ञा की पहचान
- लिंग भेद में संज्ञा के रूपों की पहचान
- संख्यॉक में संज्ञा के रूपों की पहचान

- विभिन्न कारकों में संज्ञा के रूपों की पहचान
- संज्ञा के अन्य रूपों की पहचान

2.1.1 भूमिका

आप जानते हैं कि संज्ञा पदबंध में संज्ञा प्रधान घटक होती है। इस इकाई में आप संज्ञा के लिंग भेद, वचन तथा अन्य कारकों संबंधी संज्ञा के रूपों के विषय मे पढ़ेंगे। इसके अतिरिक्त आप विभिन्न प्रकार की संज्ञाओं से भी अवगत होंगे।

2.1.2 संज्ञा

किसी भी भाषा की शब्दावली मे संज्ञा एक महत्त्वपूर्ण कोटि है। यह संज्ञा पदबंध का प्रधान घटक होती है। उर्दू में संज्ञा के लिंग, वचन तथा कारक रूप संबंधी विभिन्न पर प्रत्यय हैं। संज्ञा की मुख्य कोटियों मे जातिवाचक, व्यक्तिवाचक, भाववाचक तथा द्रव्यवाचक संज्ञाएँ हैं, उदाहरणत :

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	द्रव्यवाचक	भाववाचक
لکھنؤ، گنگا	میز، کرسی	کتاب، دروازہ	خوشی، غم
गंगा, लखनऊ	कुर्सी, मेज़	दरवाज़ा, किताब	ग़म, ख़ुशी

2.1.3 लिंग

उर्दू में संज्ञा मुख्यत: दो भागों में विभाजित की जाती है: पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग। यह विभाजन ऐच्छिक है। यह विभाजन अर्थ से प्रेरित नहीं है जैसे پھل (फल) शब्द पुल्लिंग है लेकिन آگ (आग) स्त्रीलिंग है। इसी प्रकार دکان (दुकान) और زمین (ज़मीन) स्त्रीलिंग है परन्तु مکان (मकान) और سورج (सूरज) पुल्लिंग है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि इनके लिंग भेद में न तो अर्थ आधार है न ही प्राकृतिक लिंग: जैसे سورج (सूरज) उस तरह से पुल्लिंग नहीं है जैसे, लड़का, कुत्ता तथा घोड़ा पुल्लिंग है जबकि زمین (ज़मीन) उस तरह से स्त्रीलिंग नहीं है जैसे, लड़की, गाय तथा घोड़ी स्त्रीलिंग है। अत: उर्दू में अर्थ संज्ञा का लिंग निर्धारण नहीं करता।

2.1.3.1 संज्ञाएँ

संज्ञा की लिंग श्रेणी में पुल्लिंग कोटि महत्वपूर्ण है जिसे दो भागों में

विभाजित किया जा सकता है :

(1) संज्ञा जिसका प्रत्यॉंत (आ) हो

(2) संज्ञा जिसका प्रत्यॉंत (आ) न हो

(1) प्रत्यॉंत पर समाप्त होने वाले (आ) पुल्लिंग

کھیرا	کتا	گھوڑا	دادا	چاچا	لڑکا	کپڑا	لوہا	جوتا
खीरा	कुत्ता	घोड़ा	दादा	चाचा	लड़का	कपड़ा	लोहा	जूता

नीचे लिखे शब्द देखें :

بچہ	قلعہ	راستہ
बच्चा	क़िला	रास्ता

प्रत्यॉंत लिखित रूप में उपरलिखित शब्द ह (ह्) पर समाप्त होते हैं लेकिन बोलते समय इनका उच्चारण /आ/ होता है।

(2) /आ/ पर समाप्त न होने वाली पुल्लिंग संज्ञाएँ :

कुछ पुल्लिंग संज्ञाएँ व्यंजन पर समाप्त होती हैं तो कुछ अन्य स्वरों पर /ई/ अथवा /ऊ/

(क) व्यंजन प्रत्यॉंत वाली संज्ञाएँ :

سوال	اتوار	پل	تالاب	شہر	کاغذ
सवाल	ऐतवार	पुल	तालाब	शहर	काग़ज़
بندر	گھر	کھیت	آرام	مذاق	سال
बंदर	घर	खेत	आराम	मज़ाक़	साल

(ख) /ई/ प्रत्यॉंत वाले पुल्लिंग :

بھائی	سپاہی	دھوبی	آدمی	پانی
भाई	सिपाही	धोबी	आदमी	पानी

(ग) /ऊ/ प्रत्यॉंत वाले पुल्लिंग :

آڑو	کچالو	بھالو	آلو
आड़ू	कचालू	भालू	आलू

2.1.3.2 स्त्रीलिंग संज्ञाएँ

स्त्रीलिंग संज्ञाएँ दो भागों में विभाजित की जा सकती हैं

(1) /ई/ प्रत्यांत वाली संज्ञाएँ

(2) /ई/ से अंत न होने वाली संज्ञाएँ

(1) /ई/ प्रत्याँत वाली संज्ञाएँ

کرسی	جوتی	بلی	گھوڑی	دادی	چاچی	لڑکی
कुर्सी	जूती	बिल्ली	घोड़ी	दादी	चाची	लड़की
ندی	ٹوپی	چھڑی	گاڑی	گھنٹی	کشتی	کھڑکی
नदी	टोपी	छड़ी	गाड़ी	घंटी	कश्ती	खिड़की
		الماری	کہانی	ہندی	انگریزی	دلّی
		अल्मारी	कहानी	हिन्दी	अंग्रेजी	दिल्ली

(2) बग़ैर /ई/ प्रत्याँत वाली स्त्रीलिंग संज्ञाएँ

कुछ स्त्रीलिंग संज्ञाएँ व्यंजन और कुछ अन्य स्वरो जैसे /आ/ /ऊ/ तथा /ए/ पर समाप्त होती हैं।

(क) व्यंजन प्रत्याँत वाली स्त्रीलिंग संज्ञाएँ :

آگ	گیند	کتاب	ناک	عورت	آنکھ
आग	गेंद	किताब	नाक	औरत	आँख
دیوار	زمین	تاریخ	جیب	دوکان	تصویر
दीवार	जमीन	तारीख़	जेब	दुकान	तस्वीर
		روح	دوات	پولیس	پنسل
		रूह	दवात	पोलिस	पेंसिल

(ख) /आ/ प्रत्याँत वाली स्त्रीलिंग संज्ञाएँ

بوا	گنگا	جمنا	ڈبیا	کتیا	ہوا	دوا
बुआ	गंगा	जमुना	डिबिया	कुतिया	हवा	दवा

(ग) /ऊ/ वाली स्त्रीलिंग संज्ञाएँ :

روہو	گیہوں	جورو	بہو	لو
रोहू(मछली)	गेहूँ	जोरू	बहू	लू

2.1.4 संज्ञा के प्रकार

संज्ञाओं को व्यक्तिवाचक और जातिवाचक वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

2.1.4.1 व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ

व्यक्तिवाचक संज्ञा वह संज्ञा वर्ग है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति–विशेष, स्थान–विशेष, वस्तु–विशेष आदि के नाम का पता चले।

(1) व्यक्ति–विशेष सूचक व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ :

رادھا	سارا	حامد	رام	احمد
राधा	सारा	हामिद	राम	अहमद
شبنم	اقبال	غالب	حنا	راشد
शबनम	इक़बाल	ग़ालिब	हिना	राशिद

(2) स्थान–विशेष सूचक व्यक्ति वाचक संज्ञाएँ :

جامع مسجد	دلّی	چار مینار	تاج محل
जामा मस्जिद	दिल्ली	चार मीनार	ताज महल
برلا مندر	جمنا	نرمدا	آگرہ
बिरला मन्दिर	जमुना	नर्मदा	आगरा

2.1.4.2 जातिवाचक संज्ञाएँ

जातिवाचक संज्ञा को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है :

गणनीय एवं अगणनीय

गणनीय संज्ञाएँ वे हैं जो गिनी तथा पृथक की जा सकती हैं और जिनके इससे पूर्व संख्या लिखी जा सकती हैं, जैसे;

एक	ایک
दो	دو
तीन	تین

आदि। तदुपरॉंत इनको मानववाचक/अमानववाचक, वाचक तथा भाववाचक संज्ञाओं में विभाजित किया जा सकता है, उदाहरणत :

	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
मानववाचक	چچا चचा	چچی चची
	لڑکا लड़का	لڑکی लड़की
अमानववाचक	کتا कुत्ता	بلی बिल्ली
	مرغا मुर्गा	مرغی मुर्गी
द्रव्यवाचक	پنکھا पंखा	کرسی कुर्सी
	دروازہ दरवाज़ा	کھڑکی खिड़की
भावार्थक / भाववाचक	جھگڑا झगड़ा	ہنسی हँसी
	بدلہ बदला	خوشی ख़ुशी

2.1.5 वचन तथा कारक

उर्दू में संज्ञा एकवचन तथा बहुवचन होती है। इनके पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के रूप भी भिन्न हो सकते हैं।

उर्दू में बहुवचन के तीन रूप हैं :

1. कृतकारक 2. उत्तरकारक 3. संबोधककारक

रूप–1 में आमतौर पर संज्ञाएँ वाक्य के कर्ता के रूप में होती हैं जबकि रूप–2 में परसर्ग से पूर्व आने वाली संज्ञाएँ हैं। परसर्ग की व्याख्या परसर्ग संबंधी इकाई में की जाएगी। फ़िलहाल इतना जान लेना काफ़ी है कि कुछ व्याकरणिक तत्व जैसे, سے (से), میں (में) तथा اوپر (ऊपर) आदि परसर्ग कहलाते हैं। रूप–2 की संज्ञाएँ प्रायः वाक्य में दूसरी अथवा तीसरी संज्ञा के रूप में प्रयुक्त

होती हैं, उदाहरणत :

چچا لڑکے کو دیکھتا ہے

चचा लड़के को देखता है

چچا (चचा) रूप (1) है तथा لڑکے (लडके) रूप (2) में परसर्ग کو (को) के उपरॉत आता है। रूप 3 (संबोधन हेतु) रूप 2 जैसा होता है, जैसे

اے لڑکے (ए लडके)

2.1.5.1 एकवचन संज्ञा : कारक रूप

रूप 1 : कर्ता के रूप में संज्ञा

उदाहरण :

(1) لڑکا کھیلتا ہے

लडका खेलता है

(2) بچہ آم کھاتا ہے

बच्चा आम खाता है

वाक्य में संज्ञाऍं لڑکا (लडका) तथा بچہ (बच्चा) रूप 1 में प्रकट होते है।

रूप 2 : (इतरकारक) कर्म के रूप में संज्ञा

रूप 2 (इतरकारक) में संज्ञा के उपरॉत सदैव परसर्ग आता है, जैसे :

کا	سے	پر	کو
का	**से**	**पर**	**को**

नीचे के वाक्यों को देखिए

(3) لڑکے کو آم دو

(तुम)लडके को आम दो

(4) بچے سے کتاب لو

(तुम) बच्चे से किताब लो

इनमें संज्ञाऍं لڑکے (लडके) بچے (बच्चे) रूप 2 में हैं। नीचे के वाक्यों को

देखिए जिनमें रूप 3 की संज्ञाएँ बताई गई हैं।

रूप 3: कर्म अथवा संबोधन के रूप में

रूप 3 (एकवचन) में संज्ञा जिनका प्रत्यॉत /आ/ है रूप 2 की जैसी ही है, जैसे لڑکے سے کہو (लडके से कहो) !اے لڑکے (ए लडके)। शब्द لڑکے (लडके) दोनों अभिव्यक्तियों में एक जैसा है परन्तु दोनों में इसका प्रकार्य भिन्न है। यह जान लेना चाहिए कि बगैर 'आ' वाले रूपों में रूप 1, 2 तथा 3 के एकवचन रूपों में कोई फर्क नहीं है, जैसे

لڑکی آم کھاتی ہے (5)

लडकी आम खाती है

تم لڑکی سے کہو (6)

तुम लडकी से कहो

لڑکی! آم کھا (7)

लडकी! आम खा

रूप 3 में لڑکی (लडकी) संबोधन कर्ता के रूप मे है। इसी प्रकार कुछ शब्द जैसे بندر (बंदर), نائی (नाई) आदि के रूप 1, 2 और 3 एक जैसे होते हैं।

2.1.5.2 बहुवचन संज्ञाएँ : कारक

वाक्य में विभिन्न स्थानानुसार संज्ञाओं के रूपों को कारक कहा गया है। जैसे, संज्ञा का संबोधन रूप (कारक) एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति को संबोधन करने का रूप है।

आइए अब बहुवचन पढ़े, इनके भी संज्ञा के तीन भिन्न रूप देखे जा सकते हैं। दी गई तालिका देखें :

	रूप 1 (मुख्य कर्म)	रूप 2 (गौण कर्म)	रूप 3 (संबोधन)
/आ/ प्रत्यय़ॉत पुल्लिंग संज्ञा :	لڑکا	لڑکے	لڑکے !
एकवचन	**लडका**	**लडके**	**लडके!**
	لڑکے	لڑکوں	لڑکو !
बहुवचन	**लडके**	**लडकों**	**लडको!**

बगैर /आ/ प्रत्ययाँत पुल्लिंग संज्ञा :

एकवचन	گھر घर	گھر घर	–
बहुवचन	گھر घर	گھروں घरों	–

/ई/ प्रत्ययाँत स्त्रीलिंग संज्ञा :

एकवचन	لڑکی लड़की	لڑکی लड़की	لڑکی ! लड़की!
बहुवचन	لڑکیاں लड़कियाँ	لڑکیوں लड़कियों	لڑکیو ! लड़कियो!

बगैर /ई/ प्रत्ययाँत /आ/

प्रत्ययाँत स्त्रीलिंग संज्ञा :

एकवचन	چڑیا चिड़िया	چڑیا चिड़िया	–
बहुवचन	چڑیاں चिड़ियाँ	چڑیوں चिड़ियों	–

व्यंजन प्रत्ययाँत स्त्रीलिंग संज्ञा :

एकवचन	کتاب किताब	کتاب किताब	–
बहुवचन	کتابیں किताबें	کتابوں किताबों	–

ध्यान से निम्न पुल्लिंग संज्ञाओं को देखिए, इनके रूप कुछ अलग हैं :

	रूप 1	रूप 2	रूप 3
व्यंजन प्रत्ययाँत पुल्लिंग संज्ञा:			
एकवचन	بندر **बंदर**	بندر **बंदर**	بندر **बंदर**
बहुवचन	بندر **बंदर**	بندروں **बंदरों**	بندرو **बंदरो**

/ई/ प्रत्ययाँत पुल्लिंग संज्ञाः

एकवचन	نائی नाई	نائی नाई	نائی नाई
बहुवचन	نائی नाई	نائیوں नाईयों	نائیو नाईयो

/उ/ प्रत्ययाँत पुल्लिंग संज्ञा :

एकवचन	بابو बाबू	بابو बाबू	بابو बाबू
बहुवचन	بابو बाबू	بابوؤں बाबूओं	بابوؤ बाबूओ

ऊपर के सभी शब्दों का शब्दान्त /आ/ नहीं है।

उदाहरणतः

لڑکا کھانا کھاتا ہے   रूप 1   (1)

लडका खाना खाता है

لڑکے کو کھانا دو   रूप 2   (2)

लडके को खाना दो

لڑکے ! جلدی لکھ   रूप 3   (3)

लड़के! जल्दी लिख

لڑکے کھانا کھاتے ہیں   रूप 1   (4)

लडके खाना खाते हैं   मुख्य कर्म – बहुवचन

لڑکوں کو کھانا دو   रूप 2   (5)

लडको को खाना दो   गौण कर्म – बहुवचन

لڑکو ! جلدی لکھو   रूप 3   (6)

लडको! जल्दी लिखो   कर्ता बहुवचन

لڑکی کھانا کھاتی ہے   रूप 1   (7)

लडकी खाना खाती है   मुख्य कर्म – एक वचन

لڑکی کو کھانا دو   रूप 2   (8)

लडकी को खाना दो   गौण कर्म – एक वचन

(9) रूप 3 لڑکی ! جلدی لکھ

लडकी । जल्दी लिख संबोधन – एक वचन

(10) रूप 1 لڑکیاں کھانا کھاتی ہیں

लडकियाँ खाना खाती हैं मुख्य कर्म

(11) रूप 2 لڑکیوں کو کھانا دو

लड़कियों को खाना दो गौण कर्म – बहुवचन

(12) रूप 3 لڑکیو ! جلدی لکھو

लडकियो। जल्दी लिखो संबोधन – बहुवचन

(13) रूप 1 چڑیا ۔ دانہ چگتی ہے

चिड़िया दाना चुगती है मुख्य कर्म – एकवचन

(14) रूप 2 چڑیا کو دانہ دو

चिड़िया को दाना दो गौण कर्म – एकवचन

(15) रूप 1 چڑیاں دانہ چگتی ہیں

चिड़ियाँ दाना चुगती हैं मुख्य कर्म – एकवचन

(16) रूप 2 چڑیوں کو دانہ دو

चिड़ियों को दाना दो गौण कर्म – बहुवचन

(17) रूप 1 میز چھوٹی ہے

मेज छोटी है मुख्य कर्म – बहुवचन

(18) रूप 2 میز کو رکھ دو

मेज को रख दो गौण कर्म – एकवचन

(19) रूप 1 میزیں چھوٹی ہیں

मेजें छोटी हैं मुख्य कर्म – बहुवचन

(20) रूप 2 میزوں کو رکھ دو

मेजों को रख दो गौण कर्म – बहुवचन

ऊपर लिखे उदाहरणों मे संज्ञा तथा क्रिया के विभिन्न रूपों को ध्यान से देखें। आप देख सकते हैं कि संज्ञा का लिंग तथा वचन क्रिया के रूप को

निर्धारित करता है। इसी को कर्ता–क्रिया अन्विति कहते हैं। अर्थात संज्ञा के लिंग एवं वचन क्रिया को भिन्न रूप प्रदान करते हैं, जैसे

(21) لڑکا سیب کھاتا ہے

लडका सेब खाता है

(22) لڑکے سیب کھاتے ہیں

लडके सेब खाते हैं

(23) لڑکی سیب کھاتی ہے

लडकी सेब खाती है

ध्यान दें कि एकवचन संज्ञा के प्रत्ययाँत /आ/ तथा /ई/ से मुख्य क्रिया का प्रत्ययाँत भी /आ/ तथा /ई/ ही होता है। इसके अतिरिक्त (सहायक क्रिया) एकवचन ہے (है) तथा बहुवचन ہیں (हैं) में बदल जाता है। अतः उर्दू वाक्य बनाने से पूर्व संज्ञा का लिंग एवं वचन का पता होना आवश्यक है।

अभ्यास – 1

1. नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञा की पहचान करें और उसे खाली स्थान में लिखें :

(क) حامد بازار جاتا ہے

....

(ख) موہن کرکٹ کھیلتا ہے

....

(ग) احمد کتاب خریدتا ہے

....

(घ) بادشاہ قیمتی تاج پہنتا ہے

....

2. नीचे के खाली स्थानों को दिए गए शब्दों की पुल्लिंग संज्ञाओं से भरें :

تخت، تاج، آم، سپاہی، مداری، کھیل، بھالو

(क) شہزادہ .... پر بیٹھا

(ख) بادشاہ نے ....پہنا

(ग) .... نے .... دکھایا

(घ) ....نے ناچ دکھایا

(च) .... گھر آیا

(छ) احمد نے ....کھایا

3. नीचे दी गई स्त्रीलिंग संज्ञाएँ निम्नलिखित वाक्यों के खाली स्थानों में भरें :

دوا کھڑکی گاڑی دیوار

(क) گھر کی .... گر گئی

(ख) اسپتال میں .... بھی ملتی ہے

(ग) .... وقت پر نہیں آئی

(घ) کمرے کی .... نہیں کھلی

4. नीचे दिए गए पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग शब्दों को उचित स्थान पर लिखें :

کرسی گھر ندی آلو پگڑی

پاجامہ بلی بکری کاغذ قلم

पुल्लिंग : ....

स्त्रीलिंग : ....

5. नीचे लिखे वाक्यों में व्यक्तिवाचक एवं जातिवाचक संज्ञाओं की पहचान कर उचित स्थान पर लिखें :

(क) آگرہ قدیم شہر ہے

व्यक्तिवाचक : ....

जातिवाचक : ....

(ख) دلّی ہندستان کی راجدھانی ہے

व्यक्तिवाचक : ....

जातिवाचक : ....

(ग) شبنم مدرسے میں پڑھتی ہے

व्यक्तिवाचक : ....

व्यक्तिवाचक : ....

(घ) قطب مینار بہت اونچی عمارت ہے

व्यक्तिवाचक : ....

जातिवाचक : ....

अभ्यास – 2

1 नीचे लिखी पुल्लिंग संज्ञाओं से पाँच वाक्य बनाएं :

چچا دادا گھڑا تالا گھوڑا

2. निम्नलिखित में स्त्रीलिंग संज्ञा पहचान करके लिखें

(1) اس ندی میں بہت مچھلیاں ہیں

(2) دکان میں کتابیں بکتی ہیں

(3) ڈال پر بلی بیٹھی ہے

(4) دادی نے دال پکائی ہے

3 नीचे लिखी भाववाचक संज्ञाओं से पाँच वाक्य बनाएं :

خوشی جھگڑا فساد ہنسی مذاق فراق

4 नीचे लिखे शब्दो के बहुवचन लिखे :

کرسی بلی کتاب گھوڑا عورت

....

इकाई 2
सर्वनाम

संरचना :

2.2.0 उद्देश्य

2.2.1 भूमिका

2.2.2 सर्वनाम

2.2.3 पुरुषवाचक सर्वनाम

2.2.4 संकेतवाचक सर्वनाम

2.2.5 निजवाचक सर्वनाम

2.2.6 संबंधवाचक सर्वनाम

2.2.7 अनिश्चयवाचक सर्वनाम

2.2.8 प्रश्नवाचक सर्वनाम

2.2.9 विकारीकारक

2.2.0 उद्देश्य

इस इकाई को ध्यानपूर्वक पढ़ने के उपरांत आप निम्नलिखित बातें समझ सकेंगे :

- उर्दू सर्वनाम की पहचान।

- सर्वनाम के विभिन्न रूपों की जानकारी।
- सर्वनाम के विभिन्न प्रकार्यों संबंधी जानकारी।
- कर्तृकारक, अविकारीकारक एवं इतरकारक, विकारी कारक सर्वनामों की पहचान।

2.2.1 भूमिका

इस इकाई में आप को उर्दू सर्वनाम तथा सर्वनाम के विभिन्न प्रकारों की जानकारी मिलेगी। सर्वनाम व्यक्ति एवं वस्तु दोनों के लिए प्रयुक्त होते हैं। सर्वनाम का प्रयोग स्वयं अथवा अन्य की ओर संकेत के लिए भी होता है। प्रश्न पूछने तथा वाक्यों के संयोजन में भी सर्वनाम का इस्तेमाल किया जाता है। महत्वपूर्ण घटक होते हुए भी इनके रूप कम है क्योंकि सर्वनाम कुछ सीमित शब्दों का एक समूह है।

2.2.2 सर्वनाम

संज्ञा अथवा संज्ञा पदबंध के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला शब्द परिभाषिक तौर पर सर्वनाम कहलाता है। इसके विभिन्न प्रकार हैं। विभिन्न प्रकारों के कारण यह विभिन्न नामों से जाना जाता है, जैसे पुरूषवाचक, संकेतवाचक, निजवाचक, अनिश्चयवाचक तथा प्रश्नवाचक सर्वनाम।

सर्वनाम के रूप 1 (कर्ताकारक अर्थात बिना परसर्ग वाला कर्ता) तथा रूप 2 (इतरकारक अर्थात परसर्ग वाला कर्ता) में विभिन्न रूप हैं। आईए इन सर्वनामों की सभी उप–कोटियों को देखें।

2.2.3 पुरुषवाचक सर्वनाम

जब सर्वनाम संबोधन कर्ता (उत्तम पुरुष), श्रोता (मध्यम पुरुष) अथवा अन्य व्यक्तियों से संबधित हो तो यह पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाता है। उर्दू में पुरुषवाचक सर्वनाम निम्नलिखित हैं :

میں	ہم	تو / تم	آپ
मैं	हम	तुम / तू	आप
وہ	وہ لوگ	یہ آدمی	وہ لوگ
वो	वे लोग	ये आदमी	वे लोग

नीचे दिया गया संवाद पढ़िए :

احمد: کیا تم نے اردو کی کتاب پڑھ لی ہے؟
अहमद : क्या तुमने उर्दू की किताब पढ़ ली है?

سارا: ہاں، میں نے یہ کتاب پڑھ لی ہے
सारा : हाँ। मैं ने यह किताब पढ़ ली है।

احمد: تم اب یہ کتاب سرلا کو دے دو
अहमद : तुम अब यह किताब सरला को दे दो।

سارا: وہ تو یہ کتاب پہلے ہی پڑھ چکی ہے
सारा : वो तो यह किताब पहले ही पढ़ चुकी है।

کیا تم شاعری کی کتاب لا سکتے ہو؟
क्या तुम शायरी की किताब ला सकते हो?

احمد: ہاں، میں شاعری کی کتاب لے آؤں گا
अहमद : हाँ, मैं शायरी की किताब ले आऊँगा।

ऊपर लिखे संवाद में आप देखेंगे कि سارا (सारा) और احمد (अहमद) ने सर्वनाम وہ (वो), تم (तुम), میں (मैं) का इस्तेमाल किया है। تم (तुम) सर्वनाम कभी احمد (अहमद) तो कभी سارا (सारा) की ओर इशारा करता है। अतः यह बात और है कि एक ही सर्वनाम संदर्भ के अनुसार अनेक पुल्लिंग अथवा स्त्रीलिंग के लिए भी इस्तेमाल हो सकता है। नीचे की तालिका में पुरूषवाचक सर्वनाम देखिए:

व्यक्ति	एकवचन	बहुवचन	आदरसूचक
उत्तम पुरुष	میں	ہم	–
मध्यम पुरुष	تم تو	تم (لوگ)	آپ
अन्य पुरुष	یہ وہ	وہ (لوگ) یہ (لوگ)	وہ

(क) میں (मैं) के स्थान पर ہم (हम) लेखक, संपादक तथा आम बोल चाल में इस्तेमाल होता है।

(ख) تو (तू) (खुदा के लिए) प्रार्थना में संबोधन के लिए प्रयोग होता है।

(ग) تم (तुम) का इस्तेमाल एक अथवा अनेक व्यक्तियों के लिए हो सकता है। अक्सर यह परिचित हम उम्र लोगों से संबोधन के लिए प्रयोग होता है।

(घ) آپ (आप) एकवचन तथा बहुवचन के लिए सम्मान सूचक सर्वनाम है। इसका प्रयोग यदा–कदा अन्य पुरूष के लिए भी हो जाता है, जैसे آپ نے فرمایا (आप ने फरमाया)

2.2.4 संकेतवाचक सर्वनाम

किसी वस्तु अथवा व्यक्ति विशेष की ओर संकेत करने वाले सर्वनाम संकेतवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। उर्दू मे करीबी वस्तु अथवा व्यक्ति के लिए یہ (ये) तथा दूर के लिए وہ (वो) सर्वनाम का इस्तेमाल होता है।

(2) नीचे लिखे संवाद को पढ़िए

یہ کیا ہے؟
ये क्या है?

یہ کتاب ہے
ये किताब है।

یہ کیا (چیزیں) ہیں؟
ये क्या (चीजें) हैं?

یہ کتابیں ہیں
ये किताबे हैं।

وہ کیا ہے؟
वो क्या है?

وہ دوات ہے
वो दवात है।

وہ کیا (چیزیں) ہیں؟
वो क्या (चीजें) हैं?

وہ دواتیں ہیں
वो दवातें हैं।

وہ کون ہے؟
वो कौन है?

وہ لڑکا ہے
वो लड़का है।

وہ کون (لوگ) ہیں؟
वो कौन (लोग) है?

وہ لڑکے ہیں
वो लड़के है।

یہ کون ہے؟
ये कौन है?

یہ میرا دوست ہے
ये मेरा दोस्त है।

उपरोक्त संवाद में इस्तेमाल हुए सर्वनाम संकेतवाचक सर्वनाम कहलाते है। इन सर्वनामों अर्थात یہ (ये) और وہ (वो) के रूप पुरुषवाचक सर्वनाम وہ (वो) और یہ (ये) के अनुरूप हैं। अतः जब इन सर्वनामों का प्रयोग कर्ता के स्थान पर होगा तो यह रूप 1 से संबंधित होंगे।

इन संकेतवाचक सर्वनामों के बाद जब परसर्ग کو (को), کا (का), نے (ने) आदि आएगे तो इनका संबंध रूप 2 से होगा। इनके एकवचन तथा बहुवचन रूप अलग-अलग है। एकवचन मे اِس (इस) तथा اُس (उस) और इनके बहुवचन اِن (इन) तथा اُن (उन) है, जैसे .

(3) नीचे दिए गए संवाद को पढ़िए :

اِس کا نام کیا ہے؟
इसका नाम क्या है?

اِس کا نام احمد ہے
इसका नाम अहमद है।

اُس کا نام کیا ہے؟
उस का नाम क्या है?

اُس کا نام موہن ہے

उसका नाम मोहन है।

اِن کو کیا کہتے ہیں؟

इनको क्या कहते है?

اِن کو کپڑے کہتے ہیں

इनको कपडे कहते हैं।

اُن کو کیا کہتے ہیں؟

उनको क्या कहते हैं?

اُن کو دکانیں کہتے ہیں

उनको दुकाने कहते हैं।

बहुवचन (रूप 2) में भी संकेतवाचक सर्वनाम اُنھوں (उन्हों) सज्ञा के बाद इस्तेमाल नहीं हो सकता। अतः

اِنھوں نے کہا

के स्थान पर

اِن لوگوں نے کہا

प्रयुक्त होता है।

2.2.5 निजवाचक सर्वनाम

वह सर्वनाम जो वाक्य में स्वयं के लिए प्रयुक्त सर्वनाम के उपरांत आता है निजवाचक सर्वनाम कहलाता है।

(4) नीचे दिया गया संवाद पढ़िए :

یہ کام تم کیسے کروگے؟

ये काम तुम कैसे करोगे?

یہ کام میں خود کروں گا

ये काम मैं खुद करूँगा।

تم یہ کام اپنے آپ نہ کرو تو اچھا ہے

तुम यह काम अपने आप न करो तो अच्छा है।

ध्यान से देखिए कि خود (खुद) और اپنے آپ (अपने आप) सर्वनाम میں (मैं) और تم (तुम) अथवा वाक्य के तार्किक कर्ता अपने कार्य का पता देते हैं। ये निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जब कोई स्वयं बिना किसी की मदद के करे तब इस सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।

اپنے آپ / خود	میں
खुद / अपने आप	मैं
اپنے آپ / خود	تم
खुद / अपने आप	तुम
اپنے آپ / خود	آپ
खुद / अपने आप	आप
اپنے آپ / خود	آپ
खुद / अपने आप	आप
اپنے آپ / خود	یہ
खुद / अपने आप	ये
اپنے آپ / خود	وہ
खुद / अपने आप	वो

(एकवचन के अतिरिक्त बहुवचन के लिए भी इस्तेमाल होता है)

2.2.6 संबंधवाचक सर्वनाम

जिस सर्वनाम से वाक्य में आई संज्ञा अथवा संज्ञा से संबंध स्थापित हो उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं।

(5) नीचे लिखे संवाद को देखिए :

میں حامد سے بات کر رہا تھا جو کل بنارس جائے گا (1)

मैं हामिद से बात कर रहा था जो कल बनारस जाएगा।

(2) جو سفید گاڑی وہاں کھڑی ہے وہ حامد کی ہے

जो सफेद गाडी वहाँ खडी है वो हामिद की है।

ध्यान से देखिए कि جو (जो) वाक्य 1 में तथा وہ (वो) और جو (जो) वाक्य–2 की संज्ञा से संबंधित है। वाक्य–1, में جو (जो) का संबंध حامد (हामिद) से और वाक्य 2 मे وہ (वो) और جو (जो) का संबध سفید گاڑی وہاں کھڑی ہے (सफेद गाडी वहाँ खडी है) से है। अतः इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि इन सर्वनामों का संबंध वाक्यों में प्रयुक्त संज्ञा अथवा संज्ञा पदबंध से है। भिन्न वाक्यों मे प्रकार्य अधीन उप–प्रकार्य का संबधसूचक सर्वनाम के माध्यम से परिचय कराना है। इन सर्वनामों का प्रकार्य भिन्न वाक्यों मे अधीन वाक्य को परिचित कराना है। रूप–1, (कर्ता कारक) मे आए جو (जो) का ही प्रकार्य है। रूप–2, (कर्तृकारक) वाक्य में इस सर्वनाम के पश्चात परसर्ग की अथवा کا का प्रयोग किया जाता है। नीचे दी गई तालिका देखिए

	रूप 1	रूप 2	रूप 3
एकवचन	جو	جس	جس نے
बहुवचन	جو	جن	جنھوں نے

उदाहरणतः

(3) جس کتاب کو تم پڑھ رہے ہو وہ بہت اچھی ہے

जिस किताब को तुम पढ़ रहे हो वो बहुत अच्छी है।

(4) جس نے یہ کتاب لکھی ہے وہ میرا دوست ہے

जिसने यह किताब लिखी है वो मेरा दोस्त है।

(5) جس کتاب کا ذکر آپ نے کیا وہ بہت دلچسپ ہے

जिस किताब का जिक्र आपने किया वो बहुत दिलचस्प है।

(6) جن کو آپ نے بلایا ہے وہ کتنے بجے آئیں گے

जिनको आपने बुलाया है वो कितने बजे आएँगे।

(7) جنھوں نے فارم بھرے تھے ان کا نمبر آ گیا ہے

जिन्होंने फार्म भरे थे उनका नंबर आ गया है।

2.2.7 अनिश्चयवाचक सर्वनाम

वह सर्वनाम जो किसी वस्तु या ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जो बिना लिंग भेद अथवा वचन के हो, अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाता है। کچھ (कुछ) और کوئی (कोई) ऐसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं जिनसे संज्ञा के लिंग भेद अथवा वचन का पता नहीं चलता। ऐसे शब्द अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

नीचे लिखे वाक्य देखिए :

(1) دیکھو، کوئی آ رہا ہے

देखो, कोई आ रहा है

(2) اس کے پاس کچھ نہیں ہے

उसके पास कुछ नहीं है

सर्वनाम के रूप में शब्द کوئی (कोई) किसी व्यक्ति के अर्थ में तथा کچھ (कुछ) किसी वस्तु के लिए इस्तेमाल होता है। नकारात्मक वाक्यों में کوئی نہیں (कोई नहीं) का अर्थ कोई नहीं तथा کچھ نہیں (कुछ नहीं) का अर्थ कुछ नहीं के लिए प्रयुक्त होता है।

(3) یہاں کوئی نہیں ہے

यहाँ कोई नहीं है

(4) وہ کچھ نہیں کرے گا

वो कुछ नहीं करेगा

2.2.8 प्रश्नवाचक सर्वनाम

प्रश्नसूचक सर्वनाम को प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

(4) नीचे लिखे संवाद को पढ़िए :

وہ کون ہے؟

वो कौन है?

وہ ساجد ہے

वो साजिद है।

مگر اس کے پاس کیا ہے؟

मगर उसके पास क्या है?

اس کے پاس بہت سے کاغذ ہیں

उसके पास बहुत से कागज़ हैं।

देखिए कि इस संवाद में सर्वनाम کون (कौन) तथा کیا (क्या) है। इन सर्वनामों का प्रकार्य प्रश्न करना है। अतः ये प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं। सर्वनाम के तौर पर کیا (क्या) का अर्थ 'क्या' तथा کون (कौन) का अर्थ 'कौन' है, जैसा कि रूप--2, (परसर्ग से पूर्व) में नीचे दिखाया गया है

	रूप 1	रूप 2
एकवचन	کون	کس
बहुवचन	کون	کن کنھوں

उदाहरणत :

(1) یہ کتاب کس کی ہے؟

ये किताब किस की है?

(2) یہ کپڑے کن کے ہیں؟

ये कपडे किन के हैं?

(3) اتنے کپ کنھوں نے توڑے ہیں؟

इतने कप किन्होंने तोडे हैं?

(4) یہ کون ہے؟

यह कौन है?

(5) یہ کون ہیں؟

ये कौन हैं?

2.2.9 सर्वनाम कर्ता एवं तिर्यक रूप

अभी तक आपने उन सर्वनामों के विषय में पढा जिनके उपरॉत परसर्ग नहीं आता और जो कर्ता के स्थान पर आते हैं ऐसे सर्वनामों को कर्तृकारक/अविकारी कारक कहते हैं। जिनके सर्वनामों के उपरांत परसर्ग आता है उन्हें तिर्यक रूप एवं इतरकारक/विकारी कारक कहते हैं।

(7) नीचे दिए गए संवाद को पढ़िए :

(6) یہ کام تجھ سے اکیلے نہیں ہوگا

यह काम तुझ से अकेले नहीं होगा।

(7) اسے ہم سب مل کر کریں گے

इसे हम सब मिलकर करेंगे।

(8) کیوں بھائی مجھ پر بھروسا نہیں کیا؟

क्यों भाई मुझ पर भरोसा नहीं क्या?

(9) نہیں تم پر بھروسا ہے لیکن اس کی ذمہ داری
اکیلی تم پر نہیں بلکہ ہم سب کی ہے

नहीं, तुम पर भरोसा है लेकिन इसकी जिम्मेदारी अकेली तुम पर नहीं बल्कि हम सबकी है।

ध्यान से देखिए ہم سب کی (हम सबकी), تمھاری (तुम्हारी), تجھ (तुझ), مجھ (मुझ), ہم (हम) आदि पुरूषवाचक सर्वनाम हैं जिनको परसंग, जैसे, کو ، نے ، پر और سے (से) पहले इस्तेमाल किया गया है। ये सर्वनाम रूप–2 अर्थात तिर्यक रूप से संबंधित हैं। कर्ता रूप तिर्यक रूप मे कैसे बदलता है। आइए नीचे की तालिका मे देखें :

		कर्ता	*तिर्यक / उत्तर*
उत्तम पुरुष (एकवचन)	(मैं / मुझ)	میں	مجھ
उत्तम पुरुष (बहुवचन)	(हम / हम)	ہم	ہم
मध्यम पुरुष (एकवचन)	(तू / तुझ)	تو	تجھ
मध्यम पुरुष (बहुवचन)	(तुम / तुम)	تم	تم
तृतीय पुरुष (एकवचन)	(ये / वो / इस / उस)	یہ/وہ	اِس/اُس
तृतीय पुरुष (बहुवचन)	(ये / उन / इन)	یہ/وہ	اِن/اُن

पुरुषवाचक सर्वनाम آپ (आप), जिसका इसतेमाल नम्रता के लिए मध्यम पुरूष एकवचन एवं बहुवचन के लिए होता है, का तिर्यक रूप भी वही रहता है।

آپ نے، آپ کو، آپ میں، آپ سے، آپ کا، آپ پر

कर्ता रूप मे آپ (आप) की स्थिति उत्तम पुरूष एवं मध्यम पुरूष के एकवचन तथा बहुवचन ہم (हम) और تم (तुम) की भाँति ही रहती है।

अभ्यास – 1

1. नीचे लिखे वाक्यों में सर्वनाम की पहचान कर दिए गए खाली स्थान में लिखें :

(क) احمد کو میں جانتا ہوں

....

(ख) وہ سیما کو گھر لایا

....

(ग) تم مدرسہ میں پڑھو

....

(घ) ہم اردو لکھنا جانتے ہیں

....

2. उचित सर्वनाम से खाली स्थान भरें :

(क) .... آج یہاں نہیں آیا

(ख) .... ہمارے گھر میں رہتے ہو

(ग) .... اردو پڑھنا لکھنا جانتا ہوں

(घ) .... سب مل کر بازار گئے تھے

3. नीचे के वाक्यों में संकेतवाचक / प्रश्नवाचक सर्वनाम पहचानें और खाली स्थान मे लिखें :

(क) وہ آدمی کہاں گیا؟

....

(ख) یہ لڑکی کس کی بہن ہے؟

....

(ग) وہ لوگ کیا کرتے ہیں؟

....

(ख) یہ بچے یہاں اردو پڑھنے آتے ہیں

....

4. संकेतवाचक सर्वनाम से खाली स्थान भरें :

(क) ....لڑکا گھر جا رہا ہے

(ख) ....کار کس کی ہے؟

(ग) .... بچہ اس اسکول میں پڑھتا ہے

(घ) اس سے پہلے ....اس محلّے میں رہتے تھے

5 नीचे के वाक्यों मे निजवाचक सर्वनाम पहचान कर दिए गए खाली स्थान में लिखे :

(क) میں خود اس کام کو کر رہا ہوں

....

(ख) تم اپنے آپ اردو پڑھنے کی کوشش کرو

....

(ग) ہم آج خود مدرسہ گئے تھے

....

(घ) کل شام تم خود میرے گھر آجانا

....

6. नीचे के वाक्यों को प्रश्नवाचक / अनिश्चयवाचक सर्वनाम भरकर पूरा करें :

(क) واہ! ....خوبصورت بات کہی

(ख) ہم اُن کو.............. تکلیف دینا نہیں چاہتے

(ग) اس کتاب کی قیمت .... ہے

(घ) یہ لڑکا .... کا بیٹا ہے

अभ्यास – 2

1. नीचे के वाक्यों को दिए गए सर्वनामों में से उचित सर्वनाम के द्वारा पूरा करें :

ہم، آپ، تم، تمھیں، اُنھیں، اِنھیں، مجھے

(क) ....ان پر رحم کھانا چاہئے

(ख) .... اس ملک کا مستقبل ہیں

(ग) ....اس شہر سے چلے جانا پڑا

(घ) .... گھر سے باہر کب گئے

(च) اِن دنوں .... میں نے نہیں دیکھا ہے

2. नीचे के वाक्यों में संकेतवाचक / प्रश्नवाचक सर्वनाम बताएं :

(क) وہ لوگ آج کل یہاں نہیں آتے

(ख) وہ کیا کھا رہے ہیں؟

(ग) یہ بچے کہاں جا رہے ہیں؟

(घ) وہ عورتیں یہاں کب آئی تھیں؟

3. नीचे के वाक्यों में सर्वनामों की पहचान करके उनके नीचे रेखा खींचें :

(क) وہ لڑکا مجھ سے پڑھتا ہے

(ख) یہ استاد ہمیں اُردو سکھاتے ہیں

(ग) ہمارا گھر اس جگہ سے کافی دور ہے

(घ) تمھیں میرے گھر آنا چاہئے

(च) میں تیرے ساتھ بازار جاؤں گا

(छ) کل اس کو دلّی جانا ہے

(ज) میں تمھارے دوست کو وہاں بھیج رہا ہوں

4. नीचे के वाक्यों में कर्ता/तिर्यक कारक भर कर पूरा करें :

(क) .... اُردو پڑھنی ہے

(ख) .... آج میرے گھر آنا ہے

(ग) .... کام نہیں آتا ہے

(घ) .... کارخانہ میں کیا بنتا ہے؟

(च) .... ان کے ساتھ پٹیالہ جانا ہے

(छ) .... حیدرآباد میں تم سے ملاقات ہوئی

....

इकाई 3

विशेषण

संरचना :

2.3.0 उद्देश्य

2.3.1 भूमिका

2.3.2 विशेषण

2.3.3 गुण वाचक तथा विधेय विशेषण

2.3.4 विशेषण के दो मुख्य रूप

2.3.5 व्युत्पन्न विशेषण

2.3.6 कर्तृकारक

2.3.7 तुलना कोटि : तर–तम भाव

2.3.8 सर्वनामरूपी विशेषण

2.3.9 विशेषण उपवाक्य

2.3.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढने के उपरांत आप

- विशेषण कोटि को जान जाएँगे
- वाक्य में विशेषण को पहचान पाएँगे
- विशेषण के विभिन्न रूपों को जान जाएँगे
- सर्वनाम को विशेषण रूपी काम करते देख पाएँगे
- कृदंत विशेषण की रचना को समझ पाएँगे

2.3.1 भूमिका

विशेषण संज्ञा के विशेषक होते हैं। उर्दू के वाक्यों में विशेषणं का रूप स्थिति अनुसार परिवर्तनशील है। इस इकाई में विशेषण की व्याख्या संदर्भ अनुसार इसके रूप एवं व्याकारणिक स्थिति पर आधारित होगी। कुछ परिभाषिक शब्द जैसे, संज्ञा एवं सर्वनाम आदि जो विशेषण का प्रकार्य करते हैं उन पर भी इसी इकाई में चर्चा होगी।

2.3.2 विशेषण

आप जानते हैं कि विशेषण संज्ञा के अर्थ को उजागर करता है इसी कारण विशेषण संज्ञापदबंध का भाग है। प्रायः उर्दू में विशेषण संज्ञा से पूर्व आता है यद्यपि संज्ञा के उपरांत भी कुछ कारकों में आता है, विशेषतः क्रिया पदबंध में जैसा कि हम इसी इकाई में पढेंगे। कुछ विशेषणों के रूप लिंग एंव वचन के अनुसार बदलते भी हैं। कुछ अन्य कोटियों के शब्द जैसे, संज्ञा, सर्वनाम आदि को भी विशेषण के रूप मे पढेंगे।

2.3.3 गुणवाचक तथा विधेयवाचक विशेषण

विशेषण दो भागों में विभाजित किया जा सकता है, गुणवाचक तथा विधेयवाचक। गुणवाचक संज्ञा से पूर्व तथा विधेयवाचक संज्ञा के उपरौंत प्रयुक्त होते है। नीचे दिए गए उदाहरण देखें :

(1) ساجد اچھا لڑکا ہے
साजिद अच्छा लडका है।

(2) ساجد کے پاس نیلی قمیض ہے
साजिद के पास नीली कमीज है।

(3) ساجد لال موٹر سائیکل لایا ہے
साजिद लाल मोटर साइकिल लाया है।

(4) یہ لڑکا اچھا ہے
यह लडका अच्छा है।

(5) ساجد کی قمیض نیلی ہے
साजिद की कमीज नीली है।

(6) ساجد کی موٹر سائیکل لال ہے

साजिद की मोटर साइकिल लाल है।

देखिए कि (1), (2), (3) वाक्यों में विशेषण اچھا (अच्छा), نیلی (नीली) तथा لال (लाल) संज्ञाएं لڑکا (लडका), قمیض (कमीज) तथा موٹر سائیکل (मोटर साईकल) के पूर्व आते हैं जबकि यही विशेषण वाक्य (4),(5),(6) में क्रमशः संज्ञा के उपरांत प्रयुक्त होते हैं। अतः (1) (2) तथा (3) के विशेषण गुणवाचक तथा (4), (5) तथा (6) के विधेयवाचक कहलाते हैं।

2.3.4 विशेषण के दो मुख्य रूप

ध्यानपूर्वक देखिए कि विशेषण کالا (काला–एकवचन पुल्लिंग) संज्ञा के लिंग एवं वचन अनुसार کالا (काला), کالے (काले) तथा کالی (काली–एकवचन स्त्रीलिंग) के रूपों में परिवर्तित होता है जबकि विशेषण لال (लाल) उपरोक्त रूपों में अर्थात لال (लाल), لالے (लाले) तथा لالی (लाली) में नहीं बदलता। इस आधार पर हम उर्दू विशेषण को दो मुख्य भागों मे बॉट सकते हैं کالا (काला) एवं لال (लाल) कोटि के विशेषण। प्रथम जिनके रूप बदल जाते हैं और द्वितीय जिनमें कोई परिवर्तन नहीं आता।

नीचे के वाक्यों को देखिए :

(1) وہ کپڑا کالا ہے

वह कपड़ा काला है।

(2) وہ ساڑی کالی ہے

वो साड़ी काली है।

(3) وہ کپڑا لال ہے

वो कपड़ा लाल है।

(4) وہ لال ساڑی ہے

वो लाल साडी है।

(5) وہ کالے کپڑے ہیں

वो काले कपडे हैं।

(6) وہ ساڑیاں کالی ہیں

वो साड़ियां काली हैं।

(7) وہ لال کپڑے ہیں

वो लाल कपडे हैं।

(8) وہ لال ساڑیاں ہیں

वो लाल साड़ियाँ हैं।

2.3.5 व्युत्पन्न विशेषण

विशेषण को एक दूसरी नजर से भी देखा जा सकता है, वो विशेषण जो व्युत्पन्न हैं और वो जो व्युत्पन्न नहीं हैं। जो व्युत्पन्न विशेषण नहीं हैं वे कोशागत विशेषण कहलाते हैं क्योंकि वे शब्द कोश का भाग बन जाते हैं, अव्युत्पन्न विशेषण के उदाहरण हैं اچھا (अच्छा), لمبا (लम्बा) और تندرست (तंदरुस्त) जैसे शब्द। कभी कभी व्युत्पन्न विशेषण बनाने के लिए संज्ञा आदि शब्दों में والا (वाला) जोडना पडता है।

2.3.5.1 والا (वाला) संरचना

والا (वाला) संरचना शाब्दिक रूप अथवा संज्ञा के साथ हो सकती है जैसे آنے والا کل (आने वाला कल)। इसमें शब्द آنے (आने) क्रिया آنا (आना) से बना है तथा पूर्ण रूप آنے والا (आने वाला) کل (कल) का विशेषक है।

नीचे के वाक्यों को देखिए :

چلتی ہوئی مشین

चलती हुई मशीन

دوڑنے والی گاڑی

दौडने वाली गाडी

گرتے ہوے پتے

गिरते हुए पत्ते

گرتی ہوئی دیوار

गिरती हुई दीवार

گرم کی ہوئی چاے

गर्म की हुई चाय

پھیلے ہوے کپڑے

फैले हुए कपड़े

ساڑی والی عورت

साडी वाली औरत

کتاب والی لڑکی

किताब वाली लडकी

لمبی ناک والا آدمی

लम्बी नाक वाला आदमी

इन उदाहरणों में کتاب (किताब), ساڑی (साडी) तथा ناک (नाक) संज्ञा है। والا (वाला) जुडने के उपरांत ये शब्द لڑکی (लडकी), عورت (औरत) तथा آدمی (आदमी) संज्ञाओं के विशेषक में परिवर्तित हो जाते हैं।

2.3..5.2 कृदंत विशेषण

व्युत्पन्न विशेषण कृदंत विशेषण भी कहलाते हैं। कृदंत विशेषण की व्युत्पत्ति क्रिया से होती है। ये कृदंत उपवाक्य के समान होते हैं। नीचे दिए गए उदाहरण देखिए :

پھل دیتے ہوئے حمیدہ بولی

फल देते हुए हमीदा बोली

इसमें कृदंत پھل دیتے ہوئے (फल देते हुए) है। प्रत्येक कृदंत विशेषण के रूप में काम कर सकता है। ہونا (होना) क्रिया रूप से युक्त कृदंत विशेष कृदंत उपवाक्य बनता है, जैसे

روتا ہوا بچہ

रोता हुआ बच्चा।

گرتے ہوئے پتے

गिरते हुए पत्ते।

پھل کھاتے ہوئے بچے

फल खाते हुए बच्चे।

भूतकालिक कृदंत विशेषण से कार्य के समापन अथवा प्रक्रिया का पता चलता है।

یہاں لوگ بیٹھے ہیں لوگ کھانا کھا چکے ہیں

यहां लोग बैठे हैं लोग खाना खा चुके हैं।

یہاں بیٹھے ہوئے لوگ کھانا کھا چکے ہیں

यहां बैठे हुए लोग खाना खा चुके हैं।

2.3.6 कर्ता एवं तिर्यक

पिछले भाग में आपने पढा कि केवल स्त्रीलिंग विशेषण जब बिना परसर्ग वाले कर्ता के रूप में प्रयुक्त होते हैं तब उनके रूप परिवर्तित नहीं होते। इस

भाग में विशेषण को स्त्रीलिंग कर्ता और परसर्ग کو (को) के साथ देखेंगे। पहले नीचे के रूपों को देखें :

संज्ञा (पुल्लिंग)	कर्तकारक (रूप)	तिर्यक रूप (रूप)
एकवचन	اچھا لڑکا अच्छा लड़का	اچھے لڑکے (کو) अच्छे लडके (को)
बहुवचन	اچھے لڑکے अच्छे लडके	اچھے لڑکوں (کو) अच्छे लडकों (को)

اچھا (अच्छा) जैसे शब्द रूप केवल एकवचन कर्ता के साथ आते हैं तथा इसमें कोई परसर्ग नहीं प्रयुक्त होता। लेकिन जब اچھا (अच्छा) का परिवर्तित रूप اچھے (अच्छे) बनता है तो इसके उपरांत परगर्स जैसे کو (को) इस्तेमाल होगा। कर्ता बहुवचन रूप में कर्ता لڑکے (लडके) है जबकि तिर्यक रूप لڑکوں (लडकों) बनेगा। यद्यपि स्त्रीलिंग संज्ञा में जब तिर्यक विशेषण लगेगा तब भी कोई विशेषण शब्द रूप नहीं बदलेगा। स्त्रीलिंग संज्ञा जब विशेषण द्वारा विशेषक बनाएगी तो यह اچھی (अच्छी) जैसे शब्द पर नही परिवर्तित होगी।

संज्ञा (स्त्रीलिंग)	कर्ता (रूप)	तिर्यक (रूप)
एकवचन	اچھی لڑکی अच्छी लडकी	اچھی لڑکی (کو) अच्छी लडकी (को)
बहुवचन	اچھی لڑکیاں अच्छी लडकियां	اچھی لڑکیوں (کو) अच्छी लडकियों (को)

2.3.7 तुलना कोटि

अक्सर विशेषण में तुलना अवस्था तीन प्रकार की होती हैं। साधारण (सामान्य), तरभाव (तुलन) तथा तम भाव (उत्तम अवस्था)। उर्दू में यह भाव अवस्थाएं व्याकर्णिक हैं अर्थात उनमें अभिहित अंत प्रत्यय नहीं होते सिवाय कुछ रूढि बद्ध उदाहरणों के, जैसे :

سب سے اچھا	زیادہ اچھا	اچھا	بدترین	بدتر	بد
सबसे अच्छा	ज्यादा अच्छा	अच्छा	बदतरीन	बदतर	बद

رام کی قمیض شیام کی قمیض سے بہتر ہے

राम की कमीज श्याम की कमीज से बेहतर है।

یہ میز بہتر ہے

यह मेज बेहतर है।

आमतौर पर بہتر (बेहतर – अच्छे के स्थान पर) अच्छा अथवा बढिया के लिए इस्तेमाल होता है। इसका प्रयोग हम

بہت بہتر

बहुत बेहतर

के रूप में भी देखते हैं जोकि व्याकर्णिक तौर पर गलत हैं।

उर्दू में तुलना (तरभाव) दिखाने के लिए سے (से) का इस्तेमाल होता है। سے (से) के बाद विशेषण आता है। अतः वाक्य–विन्यास होता है: संज्ञा –سے +विशेषण, जैसे ,

(1) وہ احمد سے چھوٹا ہے

वो अहमद से छोटा है।

(2) یہ کتاب پہلی کتاب سے اچھی ہے

ये किताब पहली किताब से अच्छी है।

उर्दू में سے के अलावा, फारसी–अरबी से उद्धरित, نسبتاً और بہ نسبت (बनिस्बत) भी इस्तेमाल करते है, जैसे :

(3) حامد کی بہ نسبت اختر زیادہ پڑھا لکھا ہے

हामिद की बनिस्बत अख्तर ज्यादा पढा लिखा है।

नीचे के वाक्यों को गौर से देखिए :

(4) رادھا دونوں لڑکیوں سے بڑی ہے

राधा दोनों लडकियों से बडी है।

(5) دونوں لڑکیوں میں رادھا بڑی ہے

दोनों लडकियों में राधा बडी है।

देखिए कि तमभाव वाक्य (5) अतिशय की ओर इशारा करता है जबकि (6) मे तुलनात्मक भाव की अभिव्यक्ति है।

तमभाव को سب سے (सबसे) और ترین (तरीन) से भी व्यक्त किया जाता है :

(6) یہ سب سے اچھا مکان ہے
ये सबसे अच्छा मकान है।

(7) یہ بہترین شہر ہے
ये बेहतरीन शहर है।

2.3.8 इज़ाफ़त (संयोजक चिन्ह)

फारसी प्रभावानुसार उर्दू में भी यदा–कदा संज्ञा के उपरांत विशेषण का प्रयोग किया जाता है। इनमें संबंध बनाने हेतु जेर (इ या ए स्वर के चिन्ह) लगाते हैं। यह संयोजक चिन्ह होता है, जैसे ,

इज़ाफ़त सहित	इज़ाफ़त के बग़ैर
مردِ نیک मर्दे–नेक	نیک مرد नेक मर्द
عہدِ زریں अहदे–जर्री	زریں عہد जर्री अहद
دلِ غمگین दिले–गमगीन	غمگین دل गमगीन दिल
شبِ تاریک शबे–तारीक	تاریک شب तारीक शब

2.3.9 विशेषण रूपी सर्वनाम

कुछ सर्वनाम विशेषण के तौर पर भी इस्तेमाल होते हैं। इसमें महत्वपूर्ण कोटि संकेतवाचक तथा अनिश्चय वाचक सर्वनामों की है जो विशेषण के रूप में इस्तेमाल होते हैं।

जैसा कि सर्वनाम संबंधी इकाई (2.2) में बताया गया है कि یہ (ये) निकट वर्ती तथा وہ (वो) दूरवर्ती अर्थों में इस्तेमाल होते हैं। नीचे लिखे वाक्यों को पढिये

(1) یہ لڑکا ایک کتاب لایا ہے
ये लड़का एक किताब लाया है।

(2) وہ لڑکی ایک کتاب لائی ہے

वो लडकी एक किताब लाई है।

संकेतवाचक विशेषण وہ/یہ (वो/ये) हमेशा एकल संज्ञा لڑکا/لڑکی (लडका/लडकी) आदि के लिए इस्तेमाल होते हैं। इसी तरह अनिश्चय वाचक सर्वनाम जैसे کوئی (कोई) अथवा کچھ (कुछ) का प्रकार्य भी विशेषण के रूप में होता है विशेषतः जब वे संज्ञा को विशेषण में परिवर्तित कर देते हैं, जैसे :

(3) آپ سے ملنے کوئی شخص آیا ہے

आपसे मिलने कोई शख्स आया है।

(4) مجھے کچھ کتابیں چاہئیں

मुझे कुछ किताबे चाहिए।

ऊपर लिखे वाक्यो में کوئی और شخص किसी आदमी के अर्थ में इस्तेमाल हुए हैं। अतः उन्होंने شخص और کتابیں संज्ञा को क्रमशः विशेषक बना दिया है।

2.3.10 विशेषण कारक

विशेषण प्रकार्य आश्रित उपवाक्य भी कहलाता है। आश्रित उपवाक्य की संरचना वाक्य की तरह ही होती है। लेकिन संपूर्ण अर्थ के लिए यह अन्य वाक्य अथवा उपवाक्य पर निर्भर होता है, जैसे

(1) وہ بچوں کو دیکھ رہا ہے بچے میدان میں کھیل رہے ہیں

वो बच्चों को देख रहा है बच्चे मैदान में खेल रहे हैं।

(2) وہ ان بچوں کو دیکھ رہا ہے جو میدان میں کھیل رہے ہیں

वो उन बच्चों को देख रहा है जो मैदान में खेल रहे हैं।

ऊपर लिखे वाक्य (2) में جو میدان میں کھیل رہے ہیں आश्रित उपवाक्य है जो संज्ञा بچوں (बच्चों) का विशेषक बनती है।

अभ्यास – 1

1. निम्नलिखित वाक्यों में विशेषण को पहचान कर दिए गए खाली स्थान में लिखें :

(क) گھر میں ایک بڑا حوض ہے

....

(ख) مدرسہ میں ذہین بچے پڑھتے ہیں

....

(ग) چاندنی چوک میں عمدہ و نفیس چیزیں ملتی ہیں

....

2. खाली स्थान भरें

(क) احمد ....طالب علم ہے

(ख) ساجد .... گھرانے سے تعلق رکھتا ہے

(ग) بچہ ....چیزیں پسند نہیں کرتا

(घ) .... کالج میں اردو کے بہترین استاد پڑھاتے ہیں

3. दिए गए वाक्यों मे सामान्य (तरभाव)/तुलना / अतिशय (तमभाव) कोटि के विशेषणों को रेखांकित करे :

(क) یہ جگہ بہتر ہے

(ख) اس ہوٹل میں عمدہ ترین غذا ملتی ہے

(ग) اس بازار میں بہت مہنگی چیزیں بکتی ہیں

(घ) یہ بچہ اپنی کلاس کا ذہین ترین طالب علم ہے

(च) عموماً کند بچے اچھے نمبر نہیں لا پاتے

4. नीचे लिखे शब्दों के तुलन (तरभाव) और अतिशय भाव (तम भाव) विशेषण बनाकर उनसे अपने वाक्य बनाए :

خوب ، اہم ، سخت ، پسندیدہ ، بلند ، تیز

5. संज्ञा में والا، والے، والی जोडकर आवश्यक परिवर्तन के साथ वाक्य बनाएं :

(क) ....سبزی بیچ رہا تھا

....

(ख) ....دکان پر نہیں تھا

....

(ग) ....تانگہ چھوڑ کر بھاگ گیا

....

(घ) ....لوگ چھوٹی چھوٹی باتوں کا بُرا نہیں مانتے

....

(च) ....ہمیشہ اچھا کام کرتے ہیں

....

अभ्यास – 2

1. तुलन कोटि (तर भाव) के विशेषण लगाकर नीचे दिए गए वाक्यों को पूरा करें :

(क) یہ باغ اُس باغ سے .... ہے

(ख) انسان دوستی ہر امر .... ہے

(ग) ہندستان دوسرے ملکوں سے .... ہے

(घ) احمد تمام طالب علموں سے .... نہیں ہے

2. नीचे दिए गए वाक्यों को पूरा करें तथा विशेषण पदबंध के नीचे रेखांकित करें :

(क) ....بہترین داستانیں قلمبند کیں

(ख) ....کی اہم کتابیں اُردو بازار میں ملتی ہیں

(ग) .... خراب عادتوں نے تباہ کردیا

(घ) .... کے زمانے میں مشہور و معروف عمارات بنائی گئیں

3. नीचे लिखी तुलन कोटि के विशेषणों से वाक्य बनाएं :

کے آگے، کے سامنے، کے مقابلے

4. नीचे दिए गए विशेषणों से वाक्य बनाएं :

حسین شجاع امیر بے ایمان تیزرفتار تلخ مضبوط

5. नीचे के शब्दों से तुलन (तर भाव) और अतिशय (तमभाव) कोटि के विशेषण बनाकर उनके वाक्य बनाएं :

نفیس حسین خراب تلخ شیریں

6. नीचे के शब्दों से दस वाक्य बनाएं :

اہل والا والے والی

....

इकाई 4

संख्यांक

संरचना :

2.4.0 उद्देश्य

2.4.1 भूमिका

2.4.2 संख्यॉक

2.4.3 गणन संख्या

2.4.4 क्रम सूचक

2.4.5 गुणात्मक

2.4.6 भिन्न / टुकड़ा

2.4.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढने के बाद आप

- प्रमुख संख्यॉक,
- संख्यॉक किस तरह विशेषण का कार्य करते हैं,
- गणन, क्रमसूचक एवं गुणात्मक संख्याओं, तथा
- संख्यॉक के प्रमुख कार्यों को जान पाएँगे

2.4.1 भूमिका

संख्यॉक एक अविकारी समूह है जो संख्याओं एवं अन्य गुण को निर्दिष्ट करता है। इस इकाई में संख्यॉक को परिभाषित किया जाएगा एवं उसका वाक्य

में क्या प्रकार्य है उस पर भी प्रकाश डाला जाएगा। इसके अलावा संख्यॉक के उपवर्गों को जैसे गणन, क्रमसूचक एवं गुणात्मक संख्याओं को भी उपयुक्त उदाहरणों के साथ स्पष्ट किया जाएगा।

2.4.2 संख्यॉक

उर्दू में संख्यॉक शब्दों का एक ऐसा समूह है जो मुख्यरूप से विशेषण के रूप मे प्रयुक्त होते हैं। जैसे چار دن (चार दिन), تین گنا منافع (तीन गुना मुनाफा), आदि सख्या, मात्रा एवं अन्य दूसरी इकाइयों को प्रदर्शित करता है। कभी कभी कुछ संख्यॉक जो गणनीय होते हैं अनिश्चयवाचक सर्वनाम के रूप में कार्य करते है, उदाहरण: سب (सब), بہت (अधिक), کچھ (कुछ)। संख्यॉक अनिश्चयवाचक एव निश्चयवाचक दोनों ही हो सकते हैं। निश्चयवाचक संख्यॉक, सख्या जैसे دس (दस), چار (चार), بیس (बीस) आदि हैं। अनिश्चयवाचक संख्यॉक साधारणतः काफी सामान्य होते हैं, जैसे : بہت سے (कई) تھوڑے سے (कुछ)। परन्तु इस इकाई में सिर्फ निश्चित संख्यांक को ही प्रदर्शित किया जाएगा जिसके कई उपवर्ग हैं, जैसे गणन, क्रमसूचक, गुणात्मक एवं भिन्न संख्याएँ।

2.4.3 गुणन संख्या

गणन संख्या संख्यॉक का एक ऐसा उपवर्ग है जो कि आधारभूत संख्याएँ जैस ایک (एक), دو (दो), تین (तीन), سو (सौ) आदि को व्यक्त करता है। ये सभी لال (लाल) की तरह के विशेषण हैं जो लिंग भेद को प्रदर्शित नहीं करते, उदाहरण :

ایک گھوڑا	ایک گھوڑی	تین میزیں	تین کرسیاں
एक घोड़ा	एक घोडी	तीन मेजें	तीन कुर्सियां

ایک (एक), एकवचन है एवं शेष सभी बहुवचन हैं। इस संख्याओं का रूप संज्ञा के लिंग अनुसार नहीं बदलता है। जैसे,

ایک لڑکا پڑھ رہا ہے

एक लड़का पढ रहा है।

ایک لڑکے کو بلاؤ

एक लडके को बुलाओ।

2.4.4 क्रमसूचक संख्यॉंक

क्रमसूचक संख्यॉंक संख्यावाचक की एक उपकोटि है जिससे किसी समुच्चय का अंश आदि निर्दिष्ट होता है।

पहले चार तथा छठा क्रमसूचक इस प्रकार हैं :

چھٹا	چوتھا	تیسرا	دوسرا	پہلا
छटा	चौथा	तीसरा	दूसरा	पहला

इनके अतिरिक्त किसी भी अन्य संख्या में واں (वॉं) जोड़कर उसे क्रमसूचक बनाया जा सकता है :

سوواں	اکیسواں،	دسواں،	ساتواں،	پانچواں
सौवां	इक्कीसवां	दसवां	सातवां	पांचवां

संज्ञा रूप अनुसार क्रमसूचक के लिंग भेद रूप भी परिवर्तित होते हैं जैसे, کالا (काला) रूप में पहले दर्शाया जा चुका है।

کالی بلی	کالے کپڑے	کالا کپڑا
काली बिल्ली	काले कपडे	काला कपडा
دسویں لڑکی	دسویں لڑکے	دسواں لڑکا
दसवीं लड़की	दसवें लडके	दसवां लड़का

2.4.5 गुणात्मक संख्यॉंक

गुणात्मक संख्यॉंक भी संख्यावाचक की एक उपकोटि है। नीचे लिखे शब्दों के संयोजन से इनको बनाया जाता है :

گنا	گنی،	بار،	دفعہ،	مرتبہ،
गुना	गुनी	बार	दफा	मर्तबा

(क) आकार अथवा मात्रा के लिए گنا (गुना) का संयोजन करते हैं, जैसे :

چارگنا (چوگنا)	تین گنا (تگنا)	دوگنا (دُگنا)
चौ गुना	तिगुना	दुगना

(ख) बारंबारता के लिए مرتبہ، دفعہ या بار का इस्तेमाल करते हैं, जैसे ,

پہلی مرتبہ	پہلی بار	ایک دفعہ
पहली मर्तबा	पहली बार	एक दफा

(ग) वस्त्र आदि की लडी अथवा बल को दर्शाने के लिए नीचे लिखे रूप इस्तेमाल में आते हैं :

اکہرا / اکہری	دوہرا / دوہری
इकहरा / इकहरी	दोहरा / दोहरी
چوہرا / چوہری	تہرا / تہری
चौहरा / चौहरी	तिहरा / तिहरी

अभ्यास – 1

(1) नीचे लिखे वाक्यों में गणनावाची संख्यावाचकों के नीचे रेखा खींचें :

(क) اس کتاب خانہ میں پانچ شعبے ہیں

(ख) بازار میں صرف چھ دکانیں ہیں

(ग) میدانِ جنگ میں سپاہیوں کی دس صفیں بنائی گئیں

(घ) دلی ابھی نو سو میل دور ہے

(च) حامد کو یہاں سے گئے گیارہ سال ہوگئے

(2) नीचे के वाक्यों में संख्यावाचक की उपकोटि पहचान कर दिए गए खाली स्थानों में लिखें :

(क) وہ آدمی پون بجے نہیں آیا ....

(ख) ٹرین ساڑھے سات بجے اسٹیشن پر پہنچی ....

(ग) اس نے سارے کالے کپڑے باہر پھینک دیئے ....

(घ) ہمارے گھر کی آدھی دیوار زمین میں دھنس گئی ....

(च) میرا بیٹا بارہویں درجے میں پڑھتا ہے ....

(3) नीचे के वाक्यों में दिए गए क्रमसूचक संख्यावाचकों को पहचानें और वाक्य बनाकर दिए गए खाली स्थानों में लिखें :

(क) چاند پر پہلا سیارہ امریکہ نے بھیجا تھا

....

....

(ख) دوسرا چور ابھی اس راستے سے بھاگ گیا ہے

....

....

(ग) وہ کرکٹ ٹیم کا بارہواں کھلاڑی تھا

....

....

(घ) آج مہینے کا سولہواں دن ہے

....

....

(च) پرسوں رمضان کا آخری روزہ تھا

....

....

(4) निम्नलिखित वाक्यों में गुणात्मक संख्यावाचक की पहचान कर उनके नीचे रेखा खींचें :

(क) شبیر کئی مرتبہ اس شہر میں آچکا ہے

(ख) احمد نے کئی گنا اناج گھر میں جمع کر رکھا ہے

(ग) پریم چند کے ناول میں کئی بار پڑھ چکا ہوں

(घ) اس دفعہ کا اول طالب علم ساجد رہا

(च) رام دُگنا دودھ پی گیا

(5) नीचे दिए गए शब्दों से वाक्य बनाएँ :

پانچ مرتبہ، دس گنا، دوسری بار، چھٹی دفعہ

اِکہرا، چوہرا، تہرا

अभ्यास – 2

(1) नीचे लिखे वाक्यों में गणनावाची संख्यावाचक पहचान कर उनसे नए वाक्य बनाएँ :

(क) میرے گھر میں چار کمرے ہیں

(ख) احمد کے علاوہ آٹھ لوگ اُردو میلے میں آئے

(ग) اس زمین کا ایک حصہ اسکول کے لیے مخصوص ہے

(घ) تمھارے بھائی کے پاس میری دس کتابیں ہیں

(च) ساجد کے گھر کی چھت دس فٹ سے اونچی ہے

(2) गणनावाची संख्यावाचक इस्तेमाल करते हुए पाँच वाक्य बनाएँ :

(3) नीचे दिए गए क्रमवाची संख्यावाचको से वाक्य बनाएँ :

بارھواں پہلا پانچواں سوواں پچیسواں

(4) नीचे दिए गुणात्मक संख्यावाचकों से वाक्य बनाएँ :

پون ساڑھے ڈھائی سوا ساڑھے چھ آدھا

دوتہائی پوناکپ سارےدن آدھی‌رات نصف‌صدی تین‌چوتھائی

....

अभ्यास – 1 उत्तर

खंड – 2

इकाई 1

(1) (क) حامد، بازار (ख) موہن، کرکٹ (ग) احمد، کتاب (घ) بادشاہ، تاج

(2) (क) تخت (ख) تاج (ग) مداری، کھیل (घ) بھالو
(च) سپاہی (छ) آم

(3) (क) دیوار (ख) دوا (ग) گاڑی (घ) کھڑکی

(4) पुल्लिंग संज्ञा گھر، آلو، پاجامہ، کاغذ، قلم
स्त्रीलिंग संज्ञा کرسی، ندی، پگڑی، بلی، بکری

(5) (क) जातिवाचक संज्ञा شہر (ख) जातिवाचक संज्ञा راجدھانی
व्यक्तिवाचक संज्ञा آگرہ व्यक्तिवाचक संज्ञा ہندستان
(ग) जातिवाचक संज्ञा مدرسہ (घ) जातिवाचक संज्ञा عمارت
व्यक्तिवाचक संज्ञा شبنم व्यक्तिवाचक संज्ञा قطب مینار

इकाई 2

(1) (क) میں (ख) وہ (ग) تم (घ) ہم

(2) (क) وہ (ख) تم (ग) میں (घ) ہم

(3) (क) وہ (ख) یہ (ग) وہ (घ) یہ

(4) (क) وہ (ख) یہ (ग) یہ (घ) ہم

(5) (क) خود (ख) اپنے آپ (ग) خود (घ) خود

(6) (क) کتنی (ख) کوئی (ग) کتنی (घ) کس

इकाई 3

(1) (क) بڑا (ख) ذہین (ग) عمدہ و نفیس (घ) بہترین

(2) (क) ذہین (ख) اچھے (ग) گھٹیا (घ) نامور

(3) (क) بہتر (ख) عمدہ ترین (ग) بہت مہنگی (घ) ذہین ترین

(च) اچھے، کند

(4) خوب تر، خوب ترین ، اہم تر ، اہم ترین، سخت تر، سخت ترین

پسندیدہ تر، پسندیدہ ترین ، بلند تر، بلند ترین، تیز تر، تیز ترین

(5) (क) سبزی والا (ख) دکان والا (ग) تانگے والا

(घ) اچھے مزاج والے (च) محنت کرنے والے

इकाई 4

(1) (क) پانچ (ख) چھ (ग) دس (घ) نو سو (च) گیارہ

(2) (क) क्रमसूचक संख्यॉक (ख) क्रमसूचक संख्यॉक

(ग) क्रमसूचक संख्यॉक (घ) गुणात्मक संख्यॉक

(च) क्रमसूचक संख्यॉक

(3) (क) پہلا (ख) دوسرا (ग) بارہواں (घ) سولہواں (च) پرسوں

(4) (क) کئی مرتبہ (ख) کئی گنا (ग) کئی بار (घ) دفعہ (च) دگنا

....

खंड 3

इस खंड में आप उर्दू में इस्तेमाल होने वाली क्रिया–रूपों के बारे में पढ़ेंगे। किसी भी वाक्य के क्रिया पदबंध का क्रिया एक महत्त्वपूर्ण भाग होती है। क्रिया का रूप वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा के संदर्भ में पुरुष, वचन, लिंग भेद और क्रिया के अपने काल, वाच्य वृत्ति आदि के अनुसार बदलता रहता है। इस खंड में क्रिया के विभिन्न रूपों का विवरण उदाहरणों के द्वारा दिया गया है। इस खंड में निम्नलिखित इकाईयाँ हैं :

इकाई 1 — वर्तमान काल तथा भूतकाल (सामान्य, घटमान, स्वाभाविक, संभावनार्थक तथा भविष्य कालिक रूप)

इकाई 2 — पूर्णकालिक (पूर्णतावाची) रूप

इकाई 3 — हेतुमद, संभावी और भावार्थक वाक्य एवं वृत्तिवाचक सहायक क्रिया रूप

इकाई 4 — अकर्मक, सकर्मक, व्युत्पन्न सकर्मक तथा प्रेरणार्थक रूप

प्रत्येक इकाई के अंत में **स्वयं–परीक्षण** अभ्यास के रूप में अभ्यास–1 दिया गया है जिसे इकाई के पठन उपरान्त पूरा करना है। प्रश्नों की कुंजी खंड के अंत में दी गई है। **स्वयं परीक्षण** अभ्यास के अतिरिक्त **अभ्यास**–2 दिया गया है जिसके उत्तर विद्यार्थी एक अलग पृष्ठ पर लिखकर काउन्सिल को भेजें। प्रयुक्त शब्दों के अर्थ शब्दावली के रूप में पुस्तक के अंत में दिए गए हैं।

इकाई 1

वर्तमान काल एवं भूतकाल

(सामान्य, घटमान और संभावनार्थ तथा भविष्य रूप)

संरचना :

3.1.0 उद्देश्य

3.1.1 भूमिका

3.1.2 लिंग भेद एवं वचन अनुसार क्रिया रूप

3.1.3 [illegible] के वर्तमान काल एवं भूतकालिक क्रियारूप

3.1.4 सामान्य वर्तमान एवं कालिक, स्वाभाविक वर्तमान काल

3.1.4.1 सामान्य वर्तमान काल

3.1.4.2 अभ्यस्त वर्तमान काल

3.1.5 सामान्य भूत और अपूर्ण स्वाभाविक

3.1.6 भविष्य काल

3.1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढने के उपरांत आप जान पाएँगे कि क्रिया रूप निम्नलिखित कारणों से परिवर्तित होते हैं :

- लिंग एवं वचन
- सामान्य वर्तमान काल एवं सामान्य भूतकाल
- वर्तमान घटमान एवं भूत घटमानकाल
- भविष्य काल

3.1.1 भूमिका

क्रिया, क्रिया पदबंध का महत्वपूर्ण घटक है। इस पुस्तक के खंड – 1 में बताया गया है कि क्रिया पदबंध वाक्य के विधेय के समान होता है। इसमें क्रिया धातु के साथ वृत्ति, काल, पक्ष, लिंग, वाच्य, वचन और लिंग, क्रिया विशेषण एवं वृत्तिवाचक सहायक क्रियाएं भी शामिल होती हैं :

(1) احمد کتاب پڑھ رہا ہے

अहमद किताब पढ रहा है।

(2) احمد بہت تیز دوڑ رہا ہے

अहमद बहुत तेज दौड रहा है।

वाक्य (1) में کتاب پڑھ رہا ہے क्रिया पदबंध है। इसमें کتاب कर्म (संज्ञा) तथा پڑھ رہا ہے क्रिया रूप हैं। वाक्य (2) में بہت تیز دوڑ رہا ہے क्रिया पदबंध है जिसमें بہت تیز क्रिया विशेषणात्मक तथा دوڑ رہا ہے क्रिया रूप हैं।

कर्म संज्ञा अथवा सर्वनाम से बनता है। इस इकाई में केवल क्रिया के संबध में ही चर्चा होगी जो वाक्य का एक महत्वपूर्ण घटक है।

इस इकाई में वर्तमान एवं भूतकालिक सामान्य तथा घटमान संभावनार्थ एवं भविष्य काल संबधी क्रिया के बारे में विवरण दिया गया है।

3.1.2 लिंग एवं वचनानुसार क्रिया रूप

उर्दू भाषा में क्रिया की अन्विति कर्ता के लिंग एवं वचन से होती है। नीचे के वाक्यों में چلنا (चलना) क्रिया के विभिन्न रूप देखिए :

शब्दाँत ا، ی، ے، یں ध्वनियाँ काल तथा लिंग की द्योतक हैं,

स्त्रीलिंग		पुल्लिंग	पुरुष	
چلی	/	چلا	میں	मैं चला / चली
چلی	/	چلا	تو	तू चला / चली
چلی	/	چلے	تم	तुम चले / चली
چلی	/	چلا	وہ	वो चला / चली
چلیں	/	چلے	ہم	हम चलें / चलीं
چلیں	/	چلے	تم	तुम चले / चलीं
چلیں	/	چلے	آپ	आप चले / चलीं
چلیں	/	چلے	وہ	वो चले / चलीं

(उर्दू में **वह** और **वे** के लिए एक ही सर्वनाम रूप **'वो'** है)

3.1.3 ہونا के वर्तमान एवं भूतकालिक क्रिया रूप

उर्दू में क्रिया के वर्तमान, भूत एवं भविष्य रूप बनाए जा सकते हैं। आईये पहले ہونا के वर्तमान एवं भूतकालिक क्रिया रूपों को देखें। इसके उपरांत संभावनार्थ रूपों पर चर्चा होगी।

ہونا का वर्तमान क्रिया रूप की अन्विति कर्ता अथवा सर्वनाम के वचन–पुरुष से होती है :

एक वचन :

उत्तम पुरुष	میں ہوں	मैं हूँ	(पुल्लिंग / स्त्रीलिंग)
मध्यम पुरुष	تم ہو (تو ہے) / آپ ہیں	आप हैं / तुम हो (तू है)	” ”
अन्य पुरुष	وہ ہے	वो है	” ”

बहुवचन

उत्तम पुरुष	ہم ہیں	हम है	(पुल्लिंग / स्त्रीलिंग)
मध्यम पुरुष	آپ ہیں	आप हैं	” ”
अन्य पुरुष	وہ ہیں	वो हैं	” ”

ہونا का भूतकालिक क्रियारूप تھا है। नीचे के वाक्य देखिये :

एक वचन

उत्तम पुरुष	میں تھا / تھی	मैं था / थी	(पुल्लिंग / स्त्रीलिंग)
मध्यम पुरुष	تم تھے / تھیں	तुम थे / थीं	” ”
	تو تھا / تھی	तू था / थी	
	آپ تھے / تھیں	आप थे / थीं	
अन्य पुरुष	وہ تھا / تھی	वो था / थी	” ”

बहुवचन

उत्तम पुरुष	ہم تھے / تھیں	हम थे / थीं	(पुल्लिंग / स्त्रीलिंग)
मध्यम पुरुष	تم تھے / تھیں	तुम थे / थीं	” ”
	آپ تھے / تھیں	आप थे / थीं	
अन्य पुरुष	وہ تھی / تھیں	वो थी / थीं	” ”

چلنا के संभावनार्थक क्रिया रूप की अन्विति कर्ताद्योतक संज्ञा अथवा सर्वनाम के पुरुष अनुसार होती है। संभावनार्थक वृति के द्वारा संदेहार्थ भाव प्रकट किया जाता है। इसमें उत्तम पुरुष क्रिया रूप लगभग वर्तमान क्रियारूप के समान ही होते हैं :

एक वचन :

उत्तम पुरुष	میں چلوں	मैं चलूँ	(पुल्लिंग / स्त्रीलिंग)
मध्यम पुरुष	تم چلو	तुम चलो	" "
	تو چلے	तू चले	
	آپ چلیں	आप चलें	
अन्य पुरुष	وہ چلے	वो चले	" "

बहुवचन :

उत्तम पुरुष	ہم چلیں	हम चलें	(पुल्लिंग / स्त्रीलिंग)
मध्यम पुरुष	تم چلو	तुम चलो	" "
	آپ چلیں	आप चलें	" "
अन्य पुरुष	وہ چلیں	वो चलें	" "

3.1.4 स्वाभाविक वर्तमान एवं घटमान वर्तमानकाल

स्वाभाविक वर्तमान क्रिया रूप से आम प्रक्रिया अथवा स्थिति का पता चलता है। इसमें क्रिया के मूल रूप के साथ अपूर्ण द्योतक تا ، تے अथवा تی तथा वर्तमान कालिक सहायक क्रिया जुड़ती है। नीचे लिखे वाक्यों में جانا के सामान्य वर्तमान कालिक क्रिया रूपों को देखिये :

एक वचन

उत्तम पुरुष	میں جاتا ہوں	मैं जाता हूँ	(पुल्लिंग)
	میں جاتی ہوں	मैं जाती हूँ	(स्त्रीलिंग)
मध्यम पुरुष	تم جاتے ہو/جاتی ہو	तुम (तू) जाते हो / जाती हो	(पुल्लिंग / स्त्रीलिंग)
	تو جاتا ہے	तू जाता है	(पुल्लिंग)
	تو جاتی ہے	तू जाती है	(स्त्रीलिंग)
	آپ جاتے ہو/جاتی ہیں	आप जाते हो / जाती हैं	" "

अन्य पुरुष	وہ جاتا ہے	वो जाता है	(पुल्लिंग)
	وہ جاتی ہے	वो जाती है	(स्त्रीलिंग)

बहुवचन :

उत्तम पुरुष	ہم جاتے ہیں	हम जाते हैं	(पुल्लिंग)
	ہم جاتے ہیں	हम जाते हैं	(स्त्रीलिंग)
मध्यम पुरुष	تم جاتے ہو	तुम जाते हो	(पुल्लिंग)
	تم جاتی ہو	तुम जाती हो	(स्त्रीलिंग)
	آپ جاتے ہیں	आप जाते हैं	(पुल्लिग)
	آپ جاتی ہیں	आप जाती हैं	(स्त्रीलिंग)
अन्य पुरुष	وہ جاتے ہیں	वो जाते हैं	(पुल्लिंग)
	وہ جاتی ہیں	वो जाती हैं	(स्त्रीलिंग)

उदाहरण :

(1) ہماری کلاس نو بجے شروع ہوتی ہے
हमारी क्लॉस नौ बजे शुरू होती है।

(2) گرمیوں میں ہم شملہ جاتے ہیں
गर्मियों में हम शिमला जाते हैं।

(3) تم ہر روز کیا کرتے ہو؟
तुम हर रोज क्या करते हैं?

घटमान वर्तमानकाल निरंतर चल रही (घट रही) प्रक्रिया दर्शाता है। इसमें क्रिया रूप के उपरांत رہا، رہی अथवा رہے जुड़ने के उपरांत सहायक क्रिया ہونا का वर्तमान रूप इस्तेमाल होता है। क्रिया की अन्विति कर्ता के अनुसार होती है। नीचे के उदाहरणों में جانا के सामान्य वर्तमान क्रिया रूप देखिए .

एक वचन :

उत्तम पुरुष	میں جا رہا ہوں	मैं जा रहा हूँ	(पुल्लिंग)
	میں جا رہی ہوں	मैं जा रही हूँ	(स्त्रीलिंग)

मध्यम पुरुष	تو جا رہا ہے	तू जा रहा है	(पुल्लिंग)
	تو جا رہی ہے	तू जा रही है	(स्त्रीलिंग)
	تم جا رہے ہو/ جا رہی ہو	तुम जा रहे हो/ जा रही हो	(पुलिंग/ स्त्रीलिंग)
	آپ جا رہے ہیں/ جا رہی ہیں	आप जा रहे है/ रही हैं	(पुलिंग/ स्त्रीलिंग)
अन्य पुरुष	وہ جا رہا ہے	वो जा रहा है	(पुल्लिंग)
	وہ جا رہی ہے	वो जा रही है	(स्त्रीलिंग)

बहुवचन .

उत्तम पुरुष	ہم جا رہے ہیں	हम जा रहे हैं	(पुल्लिंग)
	ہم جا رہے ہیں	हम जा रहे है	(स्त्रीलिंग)
मध्यम पुरुष	تم جا رہے ہو	तुम जा रहे हो	(पुल्लिंग)
	تم جا رہی ہو	तुम जा रही हो	(स्त्रीलिंग)
	آپ جا رہے ہیں	आप जा रहे है	(पुल्लिग)
	آپ جا رہی ہیں	आप जा रही हैं	(स्त्रीलिग)
अन्य पुरुष	وہ جا رہے ہیں	वो जा रहे हैं	(पुल्लिग)
	وہ جا رہی ہیں	वो जा रही हैं	(स्त्रीलिग)

उदाहरण :

(4) احمد اب گھر جا رہا ہے

अहमद अब घर जा रहा है।

(5) اس وقت میں کتاب پڑھ رہا ہوں

इस वक्त मैं किताब पढ रहा हूँ।

(6) رادھا اور سیما کھانا کھا رہی ہیں

राधा और सीमा खाना खा रही हैं।

3.1.5 स्वाभाविक भूत और घटमान भूत कालिक क्रिया रूप

स्वाभाविक भूत से अभिप्राय वह क्रिया रूप है जिससे भूतकाल में किसी

प्रक्रिया के होने का संकेत मिलता है। इसमें क्रिया के मूल रूप के साथ अपूर्ण द्योतक تا ، تے अथवा تی जुड़ता है तथा भूतकालिक सहायक क्रिया जो कर्ता के वचन–पुरुष के अनुसार होती है, अंत में जुड़ती है। جانا क्रिया के भूतकालिक क्रिया रूपों का इस्तेमाल नीचे दिए गए उदाहरणों में देखिये :

एकवचन :

उत्तम पुरुष	میں جاتا تھا	मैं जाता था	(पुल्लिंग)
	میں جاتی تھی	मैं जाती थी	(स्त्रीलिंग)
मध्यम पुरुष	تو جاتا تھا	तू जाता था	(पुल्लिंग)
	تو جاتی تھی	तू जाती थी	(स्त्रीलिंग)
	تم جاتے تھے / جاتی تھیں	तुम जाते थे / जाती थीं	(पुल्लिंग / स्त्रीलिंग)
	آپ جاتے تھے / جاتی تھیں	आप जाते थे / जाती थीं	(पुल्लिंग / स्त्रीलिंग)
अन्य पुरुष	وہ جاتا تھا	वो जाता था	(पुल्लिंग)
	وہ جاتی تھی	वो जाती थी	(स्त्रीलिंग)

बहुवचन

उत्तम पुरुष	ہم جاتے تھے	हम जाते थे	(पुल्लिंग)
	ہم جاتے تھے	हम जाते थे	(स्त्रीलिंग)
मध्यम पुरुष	تم جاتے تھے	तुम जाते थे	(पुल्लिंग)
	تم جاتی تھیں	तुम जाती थीं	(स्त्रीलिंग)
	آپ جاتے تھے	आप जाते थे	(पुल्लिंग)
	آپ جاتی تھیں	आप जाती थीं	(स्त्रीलिंग)
अन्य पुरुष	وہ جاتے تھے	वो जाते थे	(पुल्लिंग)
	وہ جاتی تھیں	वो जाती थीं	(स्त्रीलिंग)

उदाहरण :

(1) دو سال پہلے ہم دلّی میں رہتے تھے

दो साल पहले हम दिल्ली में रहते थे।

(2) پچھلے سال میں اسکول میں کام کرتا تھا

पिछले साल मैं स्कूल में काम करता था।

(3) پہلے لڑکیاں گھر پر ہی رہتی تھیں

पहले लडकियाँ घर ही रहती थीं।

घटमान भूतकालिक क्रिया से अभिप्राय उस क्रिया से है जिससे भूतकाल में किसी कार्य के जारी रखने की तरफ संकेत हो। इस क्रिया में मूल क्रिया रूप के साथ رہا، رہی अथवा رہے एवं भूतकालिक सहायक क्रिया जुडती है :

एकवचन :

उत्तम पुरुष	میں جا رہا تھا	मैं जा रहा था	(पुल्लिंग)
	میں جا رہی تھی	मैं जा रही थी	(स्त्रीलिंग)
मध्यम पुरुष	تو جا رہا تھا	तू जा रहा था	(पुल्लिंग)
	تو جا رہی تھی	तू जा रही थी	(स्त्रीलिंग)
	تم جا رہے تھے	तुम जा रहे थे	(पुल्लिंग /
	تم جا رہی تھیں	तुम जा रही थीं	स्त्रीलिंग)
	آپ جا رہے تھے	आप जा रहे थे	(पुल्लिंग /
	آپ جا رہی تھیں	आप जा रही थीं	स्त्रीलिंग)
अन्य पुरुष	وہ جا رہا تھا	वो जा रहा था	(पुल्लिंग)
	وہ جا رہی تھی	वो जा रही थी	(स्त्रीलिंग)
उत्तम पुरुष	ہم جا رہے تھے	हम जा रहे थे	(पुल्लिंग)
	ہم جا رہے تھے	हम जा रहे थे	(पुल्लिंग)
मध्यम पुरुष	تم جا رہے تھے	तुम जा रहे थे	(पुल्लिंग)
	تم جا رہی تھیں	तुम जा रही थीं	(स्त्रीलिंग)
	آپ جا رہے تھے	आप जा रहे थे	(पुल्लिंग)
	آپ جا رہی تھیں	आप जा रही थीं	(स्त्रीलिंग)
अन्य पुरुष	وہ جا رہے تھے	वो जा रहे थे	(पुल्लिंग)
	وہ جا رہی تھیں	वो जा रही थीं	(स्त्रीलिंग)

उदाहरण :

(1) اِس وقت کل میں بس میں سفر کر رہا تھا

इस वक्त कल मैं बस में सफर कर रहा था।

(2) پچھلے ہفتے آج کے دن ہم پہاڑ پر چڑھ رہے تھے

पिछले हफ्ते आज के दिन हम पहाड पर चढ रहे थे।

(3) وہ اس وقت کل امتحان کی تیاری کر رہی تھیں

वो इस वक्त कल इम्तिहान की तैयारी कर रही थी।

3.1.6 भविष्य काल

भविष्य कालिक क्रिया रूप संभावनार्थक क्रिया रूप में گا، گی अथवा گے जुड कर बनता है। भविष्य द्योतक की कर्ता सज्ञा अथवा सर्वनाम के वचन पुरुष के अनुसार अन्विति होती है। नीचे के वाक्यों में جانا (जाना) के भविष्य क्रिया रूपों को देखिये :

एकवचन :

उत्तम पुरुष	میں جاؤں گا	मैं जाऊँगा	(पुल्लिंग)
	میں جاؤں گی	मैं जाऊँगी	(स्त्रीलिंग)
मध्यम पुरुष	تو جائے گا	तू जाएगा	(पुल्लिंग)
	تو جائے گی	तू जाएगी	(स्त्रीलिंग)
	تم جاؤ گے	तुम जाओगे	(पुल्लिंग)
	تم جاؤ گی	तुम जाओगी	(स्त्रीलिंग)
अन्य पुरुष	وہ جائیں گے	वो जाएँगे	(पुल्लिंग)
	وہ جائیں گی	वो जाएँगी	(स्त्रीलिंग)
	وہ جائے گا	वो जाएगा	(पुल्लिंग)
	وہ جائے گی	वो जाएगी	(स्त्रीलिंग)

बहुवचन :

उत्तम पुरुष	ہم جائیں گے	हम जाएँगें	(पुल्लिंग)
	ہم جائیں گی	हम जाएँगे	(स्त्रीलिंग)
मध्यम पुरुष	تم جاؤ گے	तुम जाओगे	(पुल्लिंग)

	تم جاؤ گی	तुम जाओगी	(स्त्रीलिंग)
	آپ جائیں گے	आप जाएँगे	(पुल्लिंग)
	آپ جائیں گی	आप जाएँगी	(स्त्रीलिंग)
अन्य पुरुष	وہ جائیں گے	वो जाएँगे	(पुल्लिंग)
	وہ جائیں گی	वो जाएँगी	(स्त्रीलिंग)

उदाहरण :

(1) میں کل آگرہ جاؤں گا

मैं कल आगरा जाऊँगा।

(2) ہم کتابیں کل خریدیں گے

हम किताबे कल खरीदेंगे।

(3) اب وہ لوگ ایک سال بعد آئیں گے

अब वो लोग एक साल बाद आएँगे।

अभ्यास – 1

1. नीचे लिखे वाक्यों में काल की पहचान करे :

(क) حامد بازار گیا

(ख) بچے میدان میں کھیل رہے تھے

(ग) میں اپنا سبق یاد کر رہا ہوں

(घ) تم تماشا دیکھ رہے ہو

2. नीचे लिखे क्रिया पदबंधों से खाली स्थान भरें :

کام کر رہے تھے دوڑ رہے تھے ہو رہا تھا گر گئے

کھیل رہے تھے کھانا کھا رہے تھے جا رہے تھے

(क) مزدور شام کو ....

(ख) وہ لوگ سڑک پر ....

(ग) تم گاڑی کی طرف ....

(घ) اس وقت ہم ....

(च) میدان میں تماشا ....

(छ) وہ درخت سے ....

(ज) بچے اسکول میں..........................

3. नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया के काल की पहचान करके दिए गए स्थान में लिखें :

نکل جائے گا پہنچ رہا ہے دیکھیں گے نکل جائے گا

سو جا بھاگ گیا چھوڑ جائیں گے

....

....

....

....

....

....

....

अभ्यास – 2

1. नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया के काल की पहचान करके दिए गए स्थान में लिखें :

(क) ساجدہ اس مدرسے میں پڑھتی ہے

....

....

(ग) ظفر اس دکان میں کام کرتا تھا

....

....

(ग) آج شام حامد بنارس جائے گا

....

....

2. नीचे लिखी क्रियाओं से वर्तमान, भूत एव भविष्य काल संबंधी पन्द्रह वाक्य बनाईए :

جانا خریدنا پڑھنا لکھنا بولنا

3. वर्तमान/भूतकालिक क्रियारूपों से ख़ाली स्थान भर कर वाक्य पूरा करें :

(1) ساجدہ بازار میں ....

(2) اس نے مجھ سے..............................

(3) کل سے مسلسل بادل ....

(4) وہ برسوں سے اس کارخانے میں ....

(5) نیک انسان ہر زمانے میں ....

(6) کل رات لال قلعہ کے مشاعرہ میں اس شاعر نے ....

(7) اُردو زبان آئندہ زمانے میں بھی ....

....

इकाई 2

पूर्णकालिक क्रिया रूप

संरचना :

3.2.0 उद्देश्य

3.2.1 भूमिका

3.2.2 पूर्ण वर्तमान कालिक रूप

3.2.3 पूर्ण भूतकालिक रूप

3.2.4 पूर्णकालिक कृदंत विशेषण

3.2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढने के उपरांत आप नीचे लिखे क्रिया रूपों को समझ लेंगे:

- वर्तमान पूर्णकालिक
- भूत पूर्णकालिक
- पूर्णकालिक कृदंत घटक

3.2.1 भूमिका

भूतकाल संबंधी घटना से उत्पन्न स्थिति अथवा पूर्णरूप से संपन्न हुए कार्य की अभिव्यक्ति पूर्णकालिक क्रियारूप से होती है। इस प्रकार की क्रिया को पूर्णकालिक कृदंत घटक कहते हैं और इसके अंत में विभक्ति सहायक क्रिया जुडती है।

अपूर्ण कालिक क्रियाए अन्विति में कर्ता अथवा सर्वनाम की संज्ञा के पुरुष एवं वचन अनुसार होती हैं, जैसे,

(1) سیما بازار جائے گی

सीमा बाजार जाएगी।

(2) احمد بازار جائے گا

अहमद बाजार जाएगा।

उपरोक्त वाक्यों में देखिए कि कर्ता की अन्विति क्रिया अनुसार होती है। जैसे, سیما ، جائے گی और احمد ، جائے گا के साथ आता है। पूर्ण क्रियाओं मे यह अन्विति क्रियाओं के अकर्मक एवं सकर्मक रूप पर निर्भर होती है चूँकि आप जानते हैं कि अकर्मक क्रिया बिना कर्म और सकर्मक क्रिया कर्म के साथ आती है। अगर पूर्णकाल में अकर्मक क्रिया प्रयुक्त है तो इसकी अन्विति कर्ता के साथ होगी, जैसे :

(3) لڑکا گھر چلا گیا

लडका घर चला गया।

(4) لڑکی گھر چلی گئی

लडकी घर चली गई।

ऊपर लिखे वाक्यों में क्रिया की अन्विति कर्ता के साथ है। گھر (घर) क्रिया विशेषण है क्योंकि यह प्रश्न کہاں گیا/گئی ہے؟ (कहाँ गया / गई है) का उत्तर है। अपितु कुछ उदाहरण ऐसे भी हैं :

(5) لڑکے نے دودھ پیا

लडके ने दूध पिया।

(6) لڑکی نے دودھ پیا

लडकी ने दूध पिया।

इन वाक्यों में پیا (पिया) की अन्विति केवल دودھ (दूध) से है जोकि दोनो वाक्यों में कर्म है जिसके उपरांत نے आया है और यह तिर्यक कारक है। यह भी गौर तलब है कि जब भी क्रिया के उपरांत परसर्ग, प्रायः کو (को) आता है तो क्रिया पुल्लिंग होती है, जैसे :

(7) میں نے کتاب پڑھی

मैंने किताब पढी।

(8) میں نے کتاب کو پڑھا

मैंने किताब को पढा।

(9) احمد نے لڑکیوں کو دیکھا

अहमद ने लडकियों को देखा।

अंतिम दोनों वाक्यों में क्रिया پڑھا (पढा) और دیکھا (देखा) पुल्लिंग रूप हैं जबकि दोनों कर्म کتاب (किताब) और لڑکیاں (लडकियां) स्त्रीलिंग हैं और इनके उपरांत परसर्ग نے इस्तेमाल हुआ है। ऐसे वाक्यों मे परसर्ग کو (को) के कारण क्रिया पुल्लिंग रूप में प्रयुक्त होती है। पूर्णकाल में अन्विति के नियम निम्नलिखित हैं :

(1) अगर संज्ञा के बाद क्रिया आती है तो क्रिया का रूप इस सज्ञा के पुरुष एवं वचन के अनुसार होता है।

(2) अगर क्रिया से पहले कोई संज्ञा नहीं है अथवा संज्ञा का रूप 1 भी नहीं है तो क्रिया की अन्विति अन्य पुरुष पुल्लिंग एकवचन से होती है।

अत पूर्ण कालिक क्रियाओं में पूर्ण क्रिया रूप ऊपर लिखे सिद्धांत अनुसार बिना सहायक क्रिया के होता है। पूर्णकाल से अभिप्राय भूतकाल में किसी निश्चित समय पर संपन्न हुआ कार्य है :

(10) لڑکا سینما دیکھنے گیا

लडका सिनेमा देखने गया।

(11) اُس نے جلدی سے کام کیا

उसने जल्दी से काम किया।

3.2.2 पूर्ण कालिक वर्तमान रूप

निकट भूत में पूर्ण हुआ कार्य अथवा स्थिति पूर्ण वर्तमान रूप में अभिव्यक्त की जाती है। चूंकि पूर्ण हुए कार्य का संबंध वर्तमान के साथ कायम रहता है इसी वजह से इसमें वर्तमान सहायक की क्रिया मुख्य क्रिया के बाद जुड़ती है। नीचे लिखे वाक्यों में جانا (जाना) क्रिया के पूर्ण वर्तमान रूप देखिए :

एकवचन :

उत्तम पुरुष	میں گیا ہوں	मैं गया हूँ	(पुल्लिंग)
	میں گئی ہوں	मैं गई हूँ	(स्त्रीलिंग)

मध्यम पुरुष	تو گیا/گئی ہے	तू गया / गई है	(पुल्लिंग / स्त्रीलिंग)
	تم گئے ہو/گئی ہو	तुम गए हो / गई हो	(पुल्लिंग / स्त्रीलिंग)
	آپ گئے ہیں/گئی ہیں	आप गये हैं / गई हैं	(पुल्लिंग / स्त्रीलिंग)
अन्य पुरुष	وہ گیا ہے	वह गया है	(पुल्लिंग)
	وہ گئی ہے	वह गई है	(स्त्रीलिंग)

बहुवचन :

उत्तम पुरुष	ہم گئے ہیں	हम गए हैं	(पुल्लिंग)
	ہم گئے ہیں	हम गए हैं	(स्त्रीलिंग)
मध्यम पुरुष	تم گئے ہو	तुम गए हो	(पुल्लिंग)
	تم گئی ہو	तुम गई हो	(स्त्रीलिंग)
	آپ گئے ہیں	आप गए हैं	(पुल्लिंग)
	آپ گئی ہیں	आप गई हैं	(स्त्रीलिंग)
अन्य पुरुष	وہ گئے ہیں	वो गए हैं	(पुल्लिंग)
	وہ گئی ہیں	वो गई हैं	(स्त्रीलिंग)

उदाहरण :

(1) وہ آج بنارس گیا ہے

वो आज बनारस गया है।

(2) آج میں نے کھانا نہیں کھایا ہے

आज मैंने खाना नहीं खाया है।

(3) اس نے کتاب پڑھی ہے

उसने किताब पढी है।

3.2.3 पूर्ण भूतकालिक रूप

पूर्ण भूतकालिक क्रिया रूप वह है जिसमें कार्य सम्पन्न दूरस्थ भूतकाल में हो चुका है। इसमें पूर्णकालिक रूप भूतकालिक सहायक क्रिया के साथ इस्तेमाल होता है। अगर क्रिया अकर्मक है तो क्रिया की अन्विति कर्ता के साथ अन्यथा सकर्मक में मुख्य कर्म के साथ होती है। नीचे लिखे वाक्यों में جانا (जाना) के पूर्ण

भूतकालिक क्रिया रूप का इस्तेमाल देखिए :

एकवचन :

उत्तम पुरुष	میں گیا تھا	मैं गया था	(पुल्लिंग)
	میں گئی تھی	मैं गई थी	(स्त्रीलिंग)
मध्यम पुरुष	تو گیا تھا/گئی تھی	तू गया था / गई थी	(पुल्लिंग / स्त्रीलिंग)
	تم گئے تھے/گئی تھیں	तुम गए थे / गई थीं	(पुल्लिंग / स्त्रीलिंग)
	آپ گئے تھے/گئی تھیں	आप गए थे / गई थीं	(पुल्लिंग / स्त्रीलिंग)
अन्य पुरुष	وہ گیا تھا	वो गया था	(पुल्लिंग)
	وہ گئی تھی	वो गई थी	(स्त्रीलिंग)

बहुवचन :

उत्तम पुरुष	ہم گئے تھے	हम गए थे	(पुल्लिंग)
	ہم گئی تھیں	हम गई थीं	(स्त्रीलिंग)
मध्यम पुरुष	تم گئے تھے	तुम गए थे	(पुल्लिंग)
	تم گئی تھیں	तुम गई थीं	(स्त्रीलिंग)
	آپ گئے تھے	आप गए थे	(पुल्लिंग)
	آپ گئی تھیں	आप गई थी	(स्त्रीलिंग)
अन्य पुरुष	وہ گئے تھے	वो गए थे	(पुल्लिंग)
	وہ گئی تھیں	वो गई थीं	(स्त्रीलिंग)

उदाहरण :

(1) وہ عید پر گھر آیا تھا

वो ईद पर घर गया था।

(2) اُس نے دیوالی پر بہت مٹھائی کھائی تھی

उसने दीवाली पर बहुत मिठाइ खाई थी।

(3) پچھلے جلسے میں ہم سب نے گانے گائے تھے

पिछले जलसे में हम सबने गाने गाए थे।

3.2.4 पूर्णकालिक कृदंत विशेषण

पूर्णकालिक कृदंत विशेषण बनाने के लिए धातु में परप्रत्यय یں، ی، ے، ا، یا लगाया जाता है, जैसे :

رکنا (रुकना)	→	رکا (रुका)
سننا (सुनना)	→	سنا (सुना)

رکنا का पुल्लिंग पूर्णकालिक कृदंत विशेषण एक वचन رکا और बहुवचन رکے (रुके) है जबकि स्त्रीलिंग एकवचन رکی (रुकी) और बहुवचन رکیں (रुकीं) बनेगा। धातु रूप में अंत्यासर ا...... (आ) होने की स्थिति में ا...... (आ) से पूर्व ی (य) जुड़ेगा, जैसे :

کھایا	←	(खाया)	کھا+ا (खाया)
سویا	←	(सोया)	سو+ا (सोया)
پیا	←	(पिया)	پی+ا (पिया)

लेकिन धातु रूप में अंत्याक्षर ی (ई) होने की स्थिति में जब +ی (ई) जुडती है तो शब्द में केवल एक ی (ई) रह जाती है, जैसे :

پی (पी) ← پی+ی (पी)

अभ्यास – 1

1. नीचे के वाक्यों में काल रूप की पहचान कर दिए गए स्थान में लिखिए :

(क) احمد بازار سے اردو کا قاعدہ لایا ہے

....

(ख) وہ کل بنارس چلا گیا ہے

....

(ग) شیام نے اپنا سبق حفظ کر لیا تھا

....

(घ) لڑکے نے سیب کھایا تھا

....

(च) فہمیدہ نے غزل سنائی ہے

....

2. नीचे दी गई क्रियाओं में से उचित क्रिया भर कर वाक्यों को पूरा कीजिए :

پہنچ گیا   چھوٹ گئی تھی   آ گئی تھی

تعریف کی   حفظ کر چکا تھا   سنائی

(क) وہ وقت پر ....

(ख) کل ساجدہ کی گاڑی ....

(ग) استاد نے شاگرد کی ....

(घ) حامد غالب کا دیوان ....

(च) موہن نے ایک عجیب و غریب داستان..................

3. नीचे दी गई मूल क्रियाओं के भूत/वर्तमान कालिक रूप इस्तेमाल कर वाक्य बनाईए :

جانا   چڑھنا   صبر رکھنا   شعر کہنا

لکھنا   سوار ہونا

4. नीचे दिए गए पैराग्राफ में वर्तमान/भूतकालिक क्रिया अथवा पूर्णकालिक कृदंत विशेषण बताईए :

رات کو جب وہ روٹیاں دے کر چلی گئی تو دونوں رسیاں چبانے لگے۔ لیکن رسّی موٹی تھی۔ اچانک دروازہ کھلا اور وہی لڑکی باہر نکلی، دونوں سر جھکا کر اس کے سامنے کھڑے ہوگئے۔ اس نے ان کی پیشانی سہلائی اور بولی ''کھول دیتی ہوں، چپکے سے بھاگ جاؤ نہیں تو یہ لوگ تمھیں مار ڈالیں گے۔ آج گھر میں مشورہ ہو چکا تھا کہ تمھاری ناک میں ناتھ ڈال دی جائے گی''

(پریم چند)

अभ्यास – 2

1. नीचे लिखे वाक्यों में पूर्णकालिक क्रिया रूप भी पहचान कर दिए गए स्थान में लिखिए :

(क) حامد اپنا سبق حفظ کر چکا تھا

....

(ख) ہم نے آج صبح سامان خرید لیا ہے

....

(ग) کل کے اخبار میں یہ خبر چھپ چکی تھی

....

(घ) شاگردوں نے استاد سے کتابیں حاصل کرلی تھیں

....

(च) ہمارے ملک میں اناج کی پیداوار بڑھ چکی ہے

....

2. नीचे दी गई मूल क्रियाओं के वर्तमान, पूर्ण भूतकालिक रूप लिखिए एवं उनसे वाक्य भी बनाईए :

خریدنا، پہچاننا ، سبق یاد کرنا ، خوش آمدید کہنا ، حفاظت کرنا ،

3. नीचे के वाक्यों को उचित क्रिया रूपों से पूरा कीजिए :

(क) احمد اسکول سے ....

(ख) آج ہمارے محلّے میں ایک جلسہ ....

(ग) تمھارے والد کل بمبئی سے ....

(घ) اُن کے چچا نے کل سے ایک نئے دفتر..............................

(च) آپ کی والدہ ہمارے بھائی کے ساتھ آگرہ ....

4. नीचे के वाक्यों में अकर्मक क्रिया को पहचान करके लिखें :

(क) حامد میدان میں کرکٹ کھیل چکا ہے

(ख) شیام کتاب پڑھ رہا ہے

(ग) کل رات ساجدہ اپنی ہمشیرہ کے گھر سو گئی تھی

(घ) کتا سڑک پر دوڑ رہا تھا

(च) ٹرین نئی دہلی سے چھوٹ گئی تھی

....

इकाई 3

आश्रित, संभाव्य, आज्ञार्थक, भावार्थक एवं वृत्ति

संरचना :

3.3.0 उद्देश्य

3.3.1 भूमिका

3.3.2 आश्रित वाक्यों में क्रिया रूप

3.3.3 पूर्वमान्यता बोधक क्रिया रूप

3.3.4 अंतःकरण भाव, आज्ञा, प्रार्थना एवं विनम्रता सूचक क्रियारूप

3.3.5 वृत्ति

3.3.6 भावार्थक वाक्यों में क्रिया रूप

3.3.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढने से आप जानेंगे ,

- शर्तसूचक वाक्यों में क्रिया रूप
- आज्ञार्थक वाक्यों में क्रिया रूप
- भावार्थक वाक्यों में क्रिया रूप
- वृत्ति एवं वृत्ति सहित प्रयुक्त क्रिया रूप

3.3.1 भूमिका

भिन्न वाक्य रचनाओं में विभिन्न क्रिया रूप इस्तेमाल होते हैं। विभिन्न रूपों से रचित समरूपी क्रिया रूप भी प्रयुक्त हो सकते हैं, जैसे भविष्य कालिक क्रिया रूप, शर्तसूचक वाक्य में अथवा आज्ञासूचक वाक्य आज्ञा देने अथवा याचना हेतु

अथवा विनम्रता के लिए इस प्रकार के क्रिया रूप एवं वृत्ति रूप इस इकाई मे बताए गए हैं।

3.3.2 आश्रित वाक्यों में क्रिया रूप

उर्दू में आश्रित वाक्य के दो उपवाक्य होते हैं। اگر (अगर) उपवाक्य (शर्तसूचक) तथा تو (तो) उपवाक्य (परिणाम बोधक उपवाक्य)। उपवाक्य वाक्य की तरह संपूर्ण इकाई होते हैं यद्यपि वे वाक्य की तरह स्वतंत्र नहीं होते। नीचे लिखे वाक्य पढ़िये :

(1) اگر وہ آئے گا تو میں اُسے کتاب دوں گا

अगर वो आएगा तो मैं उसे किताब दूंगा।

इस वाक्य में اگر (अगर) उपवाक्य اگر وہ آئے گا

और تو میں اسے کتاب دوں گا उपवाक्य है।

उपवाक्य में अगर भविष्यकालिक अथवा संभावनार्थक रूप اگر का उपयोग किया जाए तो भविष्य काल संभावना अथवा अज्ञार्थ रूप تو उपवाक्य में मिलते है, जैसे :

(2) اگر تم محنت کروگے تو ضرور کامیاب ہو جاؤگے

अगर तुम मेहनत करोगे तो जरूर कामयाब हो जाओगे।

(3) اگر آپ چاہیں تو ہم سب ساتھ چلیں گے

अगर आप चाहे तो हम सब साथ चलेंगे।

(4) اگر آپ یہاں آئیں تو صرف اردو میں بولیں

अगर आप यहा आयें तो सिर्फ उर्दू में बोलें।

(5) اگر وقت ہو تو میرے ساتھ چلو

अगर वक्त हो तो मेरे साथ चलो।

اگر उपवाक्य में पूर्णकाल जैसे آیا भी प्रयुक्त होता है, जैसे :

(6) اگر احمد آیا تو ہم سب ساتھ چلیں گے

अगर अहमद आया तो हम सब साथ चलेंगे।

(7) اگر کار ملی تو ہم بس سے نہیں جائیں گے

अगर कार मिली तो हम बस से नहीं जायेंगे।

ऊपर लिखे सभी वाक्य संभावित कार्य को दर्शाते है। लेकिन यदि दोनों उपवाक्यों में संभावना सूचक تا (ता) लगाया जाए तो पूरा वाक्य सशर्त होगा जो संभावना से दूरी को व्यक्त करता है, जैसे :

(8) اگر میں امیر ہوتا تو محل میں رہتا

अगर मैं अमीर होता तो महल में रहता।

(9) اگر آپ کی جگہ میں ہوتا تو کبھی انکار نہیں کرتا

अगर आपकी जगह मैं होता तो कभी इंकार नहीं करता।

यह वाक्य काल दृष्टि से भूतकाल का भी माना जा सकता है अर्थात् :

اگر میں آپ کی جگہ ہوتا تو انکار نہیں کرتا

अगर मैं आपकी जगह होता तो इंकार नहीं करता

3.3.3 पूर्वमान्यता बोधक क्रिया रूप

पूर्वमान्यता व्यक्त करने के लिए पूर्वमान्यता सूचक क्रिया रूप का इस्तेमाल किया जाता है। उर्दू में ہونا (होना) का भविष्य कालिक रूप, अपूर्ण भविष्य, भविष्य अविच्छन्न तथा पूर्ण भविष्य को पूर्वमान्यता व्यक्त करने के लिए इस्तेमाल करते हैं, जैसे :

(1) آج کل اسکولوں کی فیس بہت زیادہ ہے

आजकल स्कूलों की फीस बहुत ज्यादा है।

(2) وہ لمبا لڑکا آپ کا دوست ہوگا

वो लम्बा लड़का आपका दोस्त है।

(3) وہ ابھی آتا ہوگا

वो अभी आता होगा।

(4) احمد حامد کا دوست ہے، وہ اس کی مدد کرتا ہوگا

अहमद, हामिद का दोस्त है वो उसकी मदद करता होगा।

(5) آپ اکیلے جا رہے ہوں گے

आप अकेले जा रहे होंगे।

(6) آپ کے لیے کتاب ایران سے آ رہی ہوگی

आप के लिए किताब ईरान से आ रही होगी।

(7) آپ امتحان میں پاس ہو گئے ہوں گے

आप इम्तहान में पास हो गए होंगे।

(8) ابّا آپ کے لیے جاپان سے کتابیں لائے ہوں گے

अब्बा आपके लिए जापान से किताबें लाये होंगे।

3.3.4 अंतःकरण भाव, आज्ञा, प्रार्थना एवं विनम्रता सूचक क्रिया रूप

अंतःकरण के भावार्थ को संभावनार्थक क्रिया द्वारा व्यक्त किया जाता है। इसी क्रिया रूप द्वारा प्रस्ताव भी प्रस्तुत किये जाते हैं :

(1) کیا ہم باہر چلیں؟

क्या हम बाहर चलें?

(2) آپ اندر آئیں

आप अन्दर आयें

(3) ہو سکتا ہے کہ وہ نہ آئے

हो सकता है कि वो न आये।

अवश्यंभावी भावार्थ के लिए :

(4) یہ ضروری ہے کہ وہ اچھی طرح پڑھے

यह जरूरी है कि वो अच्छी तरह पढ़े।

आज्ञार्थक भाव, आदेश अथवा प्रार्थना द्वारा व्यक्त होता है। अतः यह केवल मध्यम पुरुष एकवचन तथा बहुवचन के लिए प्रयुक्त होता है। नीचे दिये गए वाक्यों की तुलना कीजिये :

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(तू खा)	تو کھا	تم کھاؤ	آپ کھائیے	آپ کھائیے گا
(तू चल)	تو چل	تم چلو	آپ چلیں	آپ چلیں گے
(तू जा)	تو جا	تم جاؤ	آپ جائیے	آپ جائیے گا

(तू कर)	تو کر	تم کرو	آپ دیجیے	آپ دیجیے گا
(तू दे)	تو دے	تم دو	آپ دیجیے	آپ دیجیے گا
(तू पी)	تو پی	تم پیو	آپ پیجیے	آپ پیجیے گا

देखिये कि (क) में तुमर्थ का धातु रूप इस्तेमाल हुआ है, जैसे جانا से جا :

(5) تو یہاں سے جا

तू यहां से जा।

تو का प्रयोग उर्दू में केवल अतिघनिष्ठ अथवा कनिष्ठ या भर्तसना हेतु ही होता है।

(ख) में و (ओ) जोडा गया है। تم (तुम) प्रयोग एकवचन तथा बहुवचन दोनों के लिए मान्य है :

(6) تم یہاں سے جاؤ

तुम यहां से जाओ।

دینا तुमर्थ में देखिये कि इसका रूप دے+دو तथा इसी प्रकार لینا का لےلو परिवर्तित होता है।

(ग) में یے (इये) धातु रूप में کھا जोडे जाने पर جایئے बनता है। याद रखें कि यह रूप नियमित नहीं है, जैसे :

کیجیے ← کر+یے **(कीजिए) नम्रता हेतु**

پیجیے ← پی+یے **(पीजिए) नम्रता हेतु**

ये क्रिया रूप नम्रता प्रकट करने के लिए प्रयुक्त होते हैं।

(घ) रूप जिनमें یے के स्थान पर یجیے (इजिए) जुड़ा है अतिविनम्र अतिविनम्रता प्रदर्शित करता है।

(7) آپ پانی پیجیے

आप पानी पीजिये।

(8) آپ پانی پیجیے گا

आप पानी पीजिएगा।

3.3.5 वृत्ति

वृत्ति कहलाने वाली सहायक क्रियाओं को भी वक्ता की योग्यता बताने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। उर्दू में मुख्य वृत्तियां سکنا तथा چکنا، پانا، چاہنا हैं। इन वृत्तियों के साथ सदैव मुख्य क्रिया का मूल रूप जुड़ता है, जैसे جاسکنا (जा सकना), جاچکنا (जा चुकना), کرپانا (कर पाना)। इनमें मुख्य क्रिया केवल मूल रूप में प्रयुक्त हो रही है। संख्या एवं लिंग की अन्विति कर्ता से होती है तथा अंत में काल सूचक सहायक क्रिया, जैसे ہے (है) अथवा تھا (था) जुडती है। लेकिन چاہنا (चाहना) कारक में मूल धातु जुडती है। जैसे جاناچاہئے (जाना चाहिए), ملنا چاہئے (मिलना चाहिए)। आईये संक्षिप्त में इन वृत्तियों अथवा सहायक क्रियाओं को पढें।

سکنا (सकना) सहायक क्रिया योग्य होने, घटना के संभाव्य घटन की द्योतक है, जैसे .

(1) میرا پیر ٹھیک ہوگیا ہے اب میں چل سکتا ہوں
मेरा पैर ठीक हो गया है अब मैं चल सकता हूं।

(2) دونوں فوجیں آمنے سامنے ہیں جنگ چھڑ سکتی ہے
दोनों फौजें आमने सामने हैं जंग छिड सकती है।

چکنا (चुकना) सहायक क्रिया वाक्य में उल्लेखनीय कार्य के समापन को इंगित करती है, जैसे,

(3) گاڑی آ چکی ہے
गाडी आ चुकी है।

(4) جب ہم اسٹیشن پہنچے تو گاڑی آچکی تھی
जब हम स्टेशन पहुंचे तो गाडी आ चुकी थी।

پانا (पाना) सहायक क्रिया से किसी कार्य के होने की संभावना की अभिव्यक्त होती है। कुछ विभिक्तियों में यह नकारात्मक अर्थ का द्योतक भी है, जैसे,

(5) ایسے موسم میں کھیل پانا مشکل ہے
ऐसे मौसम में खेल पाना मुश्किल है।

(6) جلسے میں اتنا شور ہوا کہ کچھ بھی سن نہ پائے

जलसे में इतना शोर हुआ कि कुछ भी सुन न पाये।

(7) اُسے چوٹ لگی ہے کل کا میچ وہ نہ کھیل پائے گا

उसे चोट लगी है वो कल का मैच न खेल पायेगा।

چاہیے (चाहिए) सहायक क्रिया आदेशात्मक उपदेशात्मक अभिव्यक्ति के लिए इस्तेमाल होती है :

(8) آپ کو یہاں رہنا چاہیے

आपको यहां रहना चाहिए।

(9) آپ کو اُردو سیکھنی چاہیے

आपको उर्दू सीखनी चाहिए।

उल्लेखनीय है कि इन सहायक क्रियाओं से पूर्व मुख्य क्रिया तुमर्थ रूप में प्रयोग होती है। क्रिया की अन्विति तुमर्थ पूर्व संज्ञा से होती है, जैसे वाक्य में संज्ञा اردو (उर्दू) स्त्रीलिंग है अतः तुमर्थ का अंतिम अक्षर نی (नी) है। यद्यपि कुछ अभिव्यक्तियों में اردو (उर्दू) के साथ نا (ना) का भी इस्तेमाल हो सकता है।

3.3.6 भाववाच्य वाक्यों में क्रिया रूप

उर्दू के भाववाच्य वाक्यों में क्रिया की अन्वित्ति वाक्य के मुख्य कर्म से होती है, और वाक्य में कर्ता के उपरौंत इस्तेमाल किया जाता है, जैसे,

(1) بچہ رنگ برنگے کھلونے پسند کرتا ہے

बच्चा रंग बिरंगे खिलौने पसन्द करता है।

(2) بچے کو رنگ برنگے کھلونے پسند ہیں

बच्चे को रंग–बिरंगे खिलौने पसन्द हैं।

प्रथम वाक्य में भाववाच्य क्रिया का इस्तेमाल हुआ है अर्थात پسند کرتا ہے कर्ता بچہ (बच्चा) के लिंग एवं संख्या अनुसार है। दूसरे वाक्य में क्रिया की अन्विति कर्म رنگ برنگے کھلونے (रंग बिरंगे खिलौने) से है।

भाववाच्य वाक्य की संरचना में तुमर्थ तथा ہے (है) का प्रयोग हुआ है। जबकि چاہیے (चाहिए) तथा तुमर्थ का प्रयोग ज़रूरत एवं नसीहत के लिए क्रमशः इस्तेमाल हुआ है, जैसे,

(3) ہمیں دلّی جانا ہے

हमें दिल्ली जाना है।

(4) ہم سب کو یہ کتاب پڑھنی چاہیے

हम सबको यह किताब पढ़नी चाहिए।

इसी तरह तुमर्थ + پڑھنا (पढ़ना) रूचि को अभिव्यक्त करता है, जैसे,

(5) ہم سب کو امتحان کے لیے پڑھنا پڑے گا

हम सबको इम्तहान के लिए पढ़ना पड़ेगा।

(6) مجھے شاعری کے لیے یہ کتاب پڑھنا پڑی

मुझे शायरी के लिए यह किताब पढ़नी पड़ी।

अभ्यास – 1

1. नीचे दिए गए वाक्यों को पूरा कीजिए :

(क) اگر وہ اسٹیشن وقت پر پہنچ جاتا ....

(ख) اگر آپ چاہیں..............................

(ग) اگر ان کا خط مجھے کل مل جاتا ....

(घ) اگر آج غروب آفتاب تک وہ لوگ نہیں آئے..............................

(च) اگر ان کے والد ہمارے گھر آجاتے..............................

2. हेतुमद्, संभावना तथा वृत्ति द्योतक क्रियाओं पर आधारित दस वाक्य बनाइए :

3. नीचे लिखे वाक्यों में वृत्ति की पहचान कीजिए :

(क) جب میں اس کے یہاں پہنچا وہ اپنا گھر کا کام ختم کر چکا تھا

(ख) گھر میں اتنا شور و غل ہو رہا تھا کہ وہ کسی سے کچھ نہ کہہ پایا

(ग) اگر اس محلّے کے سارے بچے کھیلتے رہیں گے تو ضرور سب فیل ہو جائیں گے

(घ) اگر ہم ذرا سی توجہ دیں تو ہمارا شہر صاف ستھرا اور خوبصورت رہ سکتا ہے

(च) اگر تم وقت پر آجاتے تو خالو سے مل سکتے تھے

4. नीचे लिखी मूल धातु क्रियाओं को प्रयोग करते हुए दस वाक्य बनाईए:

آ سکنا، ہونا، کرچکنا، چل سکنا، پہنچنا، بول پانا، حاصل کرلینا
پڑھ پانا، لکھ سکنا، ادا کرنا

अभ्यास – 2

1. खाली स्थान भरें :

(क) .... تو ہم سب ساتھ گھومنے چلیں گے

(ख) اگر وہ لوگ ہمیں نہیں ملے ....

(ग) .... تم کھانا کھا لینا

(घ) .... وہ اسکول میں ہی رہ جاتا

(च) اگر ہمارے استاد نے اچھی طرح تعلیم نہ دی ہوتی ....

2. भाववाचक एवं संभावना द्योतक क्रिया रूपों से दस वाक्य बनाएँ।

3. नीचे के वाक्यों में इस्तेमाल क्रिया रूप की पहचान करें तथा उन क्रिया रूपों से वाक्य बनाएँ :

(क) اگر فرصت ہو تو میرے ساتھ سیر کو چلو

(ख) اگر بس مل جاتی تو میں وقت پر دفتر پہنچ جاتا

(ग) اگر وہ میری جگہ ہوتا تو اس پیشکش کو ضرور قبول کر لیتا

(घ) ممکن ہے اسے خط ملا ہی نہ ہو

(च) شاید آج اس کے چچا آگرہ سے آنے والے ہیں

(छ) اگر آپ کو کافی اچھی نہ لگے تو مت پیجئے گا

....

इकाई 4

सकर्मक, अकर्मक, व्युत्पन्न सकर्मक तथा प्रेरणार्थक रूप

संरचना :

3.4.0	उद्देश्य
3.4.1	भूमिका
3.4.2	सकर्मक एवं अकर्मक रूप
3.4.3	व्युत्पन्न सकर्मक
3.4.4	प्रेरणार्थक रूप

3.4.0 उद्देश्य

इस इकाई को ध्यानपूर्वक पढने के उपरांत आप जानेंगे :

- सकर्मक तथा अकर्मक क्रिया रूपों में भेद
- अकर्मक रूपों से कुछ सकर्मक क्रिया रूपों की व्युत्पत्ति
- प्रेरणार्थक क्रिया रूपों की रचना

3.4.1 उद्देश्य

जैसा कि खंड–1 की इकाई–1 में बताया गया है कि क्रिया की दो मुख्य श्रेणियां हैं : सकर्मक तथा अकर्मक। इन दोनों के द्वारा वाक्य भिन्न प्रकार से रचा जाता है। क्योंकि सकर्मक क्रियाओं में कर्म आवश्यक अवयव होता है। जबकि अकर्मक में कर्म की जरूरत नहीं होती। इसके अतिरिक्त कुछ सकर्मक रूप अकर्मक क्रियाओं से व्युत्पन्न होते हैं तथा प्रेरणार्थक की व्युत्पत्ति दोनों से होती है। इस इकाई में आप सकर्मक, अकर्मक तथा प्रेरणार्थक रूपों को उदाहरण सहित पढ़ेंगे।

3.4.2 सकर्मक एवं अकर्मक रूप

उर्दू में क्रिया रूप मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं : सकर्मक एवं अकर्मक। अकर्मक रूप में कर्म की आवश्यकता नहीं होती है (देखिये इकाई –1) सकर्मक क्रिया रूप में कर्ता के ऊपर ध्यान केन्द्रित होता है जबकि अकर्मक में पूर्णतः परिणाम पर, उदाहरण :

(1) احمد سیب کھاتا ہے

अहमद सेब खाता है।

(2) سیب گر پڑا

सेब गिर पड़ा।

दूसरे वाक्य में سیب گر پڑا (सेब गिर पड़ा) अकर्मक क्रिया है तथा इसमें سیب (सेब) कर्ता है। प्रथम वाक्य में मुख्य रूप यह है कि अहमद क्या कर रहा है। यहाँ سیب کھاتا ہے सकर्मक क्रिया रूप है अतः यहाँ कर्म की आवश्यकता है। यहां विषय है कि अहमद को क्या हुआ। अकर्मक क्रिया में प्रायः अनैच्छिक क्रिया को प्रकट किया जाता है, जैसे :

(3) احمد سے سیب گر پڑا

अहमद से सेब गिर पड़ा।

> इकाई – 1 में स्पष्ट किया जा चुका है कि सकर्मक क्रिया की अन्विति कर्ता से होती है जबकि अकर्मक क्रिया के अपूर्ण कालिक रूपों में कर्ता की अन्विति क्रिया से होती है। अपूर्णकालिक रूपों में कर्ता के उपरांत में परसर्ग نے (ने) आता है तथा क्रिया की अन्विति (रूप–1) कर्म से होती है। (देखिये इकाई–1)

(4) احمد نے ایک روٹی کھائی

अहमद ने एक रोटी खाई।

ऊपर के वाक्य में क्रिया کھائی (खाई), روٹی (रोटी) कर्म के वचन एवं लिंग से अन्विति है जोकि एकवचन तथा स्त्रीलिंग है। ध्यान दीजिये कि क्रियार्थक रूप ऐच्छिक एवं अनैच्छिक दोनों हो सकता है।

3.4.3 व्युत्पन्न सकर्मक

उर्दू में सकर्मक एवं अकर्मक क्रियाओं का आपस में नैकट्य संबंध है। अकर्मक क्रियाओं से सकर्मक क्रियायें नीचे वर्णित रूपों में बनाई जाती हैं :

(क) अगर अकर्मक क्रिया धातु लघु स्वर वाले एकल अक्षर तथा अंत में व्यंजन पर आधारित हो तब उसमें آ (आ) जोड़कर सकर्मक क्रिया बनती है। नीचे के 'क' तथा 'ख' देखिए :

ا+نا	(क)		(ख)	
بننا	بن	बन	بنا/بنانا	बना / बनाना
بچنا	بچ	बच	بچا/بچانا	बचा / बचाना
چلنا	چل	चल	چلا/چلانا	चला / चलाना
اُٹھنا	اُٹھ	उठ	اُٹھا/اُٹھانا	उठा / उठाना

'क' में क्रिया بن अकर्मक जबकि بنا सकर्मक रूप بنا←بن+ا (आ) जोड़कर बनाया गया है, जैसे

کھانا بن رہا ہے　　अकर्मक　　(1)

खाना बन रहा है।

سارا کھانا بنا رہی ہے　　सकर्मक　　(2)

सारा खाना खा रही है।

(ख) यदि अकर्मक धातु के दीर्घ स्वर हो एवं वह व्यंजन के साथ अंत करता हो तो स्वर, लघु (छोटा), हो जाता है एवं अ/आ जोड़कर सकर्मक क्रिया बनाया जाता है।

I		II	
سوکھنا	सूखना	سُکھانا	सुखाना
بولنا	बोलना	بُلانا	बुलाना
بیٹھنا	बैठना	بِٹھانا	बैठाना
جاگنا	जागना	جگانا	जगाना

अगर तुमर्थ चिन्ह نا के उपरोंत दोनों भागों से हटा दिया जाए तो سوکھ ← سُکھا धातु रूप शेष रह जायेगा। देखिये कि मूल दीर्घ स्वर /ऊ/ लघु स्वर /उ/ में परिवर्तित हो गया तथा सकर्मक क्रिया बनाने हेतु इसके अंत में /आ/ जोड़ा गया। अन्य रूपों में /ई/ अथवा /आ/ को लघु स्वर /इ/ अथवा /अ/ में बदलकर अंत प्रत्यय /आ/ जोड़ा जाता है। परन्तु بولنا (बोलना) और بیٹھنا (बैठना) के दीर्घ स्वर /औ/ तथा /ऐ/ के स्थान पर लघु स्वर /उ/ तथा /ई/ में क्रमशः प्रयुक्त होते हैं।

उदाहरण :

راج کلاس میں بیٹھا अकर्मक (3)

राज क्लॉस में बैठा।

راج نے اپنے دوست کو کلاس میں بٹھایا सकर्मक (4)

राज ने अपने दोस्त को क्लास में बैठाया।

(ग) जब अकर्मक धातु में अन्तिम स्वर लघु होता है एवं धातु व्यंजन समाप्त होता है तो उस स्थिति में (आ–) को अन्तिम स्वर के साथ मध्यसर्गित कर उसे दीर्घ बनाया जाता है। (कभी कभी उसके रूपों में भी परिवर्तन होता है।) उदाहरणत :

तुमर्थ	प्रथम रूप	द्वितीय रूप	व्युत्पन्न तुमर्थ
کٹنا	کٹ	کاٹ	کاٹنا
कटना	कट	काट	काटना
نکلنا	نکل	نکال	نکالنا
निकलना	निकल	निकाल	निकालना
کھلنا	کھل	کھول	کھولنا
खुलना	खुल	खोल	खोलना
رُکنا	رُک	روک	روکنا
रुकना (स्वय)	रुक (स्वय)	रोक (किसी व्यक्ति अथवा वस्तु को)	रोकना (किसी व्यक्ति अथवा वस्तु को)
چھدنا	چھد	چھید	چھیدنا
छिदना	छिद	छेद	छेदना
بِکنا	بِک	بیچ	بیچنا
बिकना	बिक	बेच	बेचना

अकर्मक क्रिया से व्युत्पन्न सकर्मक क्रिया बनाते समय प्रथम एवं द्वितीय रूपों में स्वर की दीर्घता देखिये। प्रथम दो उदाहरणों में लघु स्वर /अ/, /आ/ में जबकि तीसरे एवं चौथे उदाहरण में लघु स्वर /उ/ दीर्घ स्वर /ऊ/ में तथा पाँचवें तथा छठे उदाहरण में लघु स्वर /इ/ दीर्घ स्वर /ई/ में परिवर्तित हो जाता है। वाक्य उदाहरण :

بس رُک گئی . **अकर्मक** (5)

बस रुक गई।

راج نے بس کو روکا **सकर्मक** (6)

राज ने बस को रोका।

(घ) कुछ स्वर अंत वाले तुमर्थ धातु रूप हैं जिनके अन्तिम दीर्घ स्वर लघु स्वर + ﻻ से बदल जाते हैं, जैसे :

तुमर्थ	प्रथम	द्वितीय	व्युत्पन्न तुमर्थ
سونا	سو	سُلا	سُلانا
सोना	सो	सुला	सुलाना
رونا	رو	رُلا	رُلانا
रोना	रो	रुला	रुलाना

ऊपर लिखे उदाहरणों के अन्तिम दीर्घ स्वर /ऊ/ सकर्मक वाक्यों /उला/ में बदल जाता है।

لڑکا سو رہا ہے **अकर्मक** (7)

लडका सो रहा है।

لڑکے کو سُلا دو **सकर्मक** (8)

लडके को सुला दो।

अपवाद :

कुछ सकर्मक क्रियाएं जैसे لانا (लाना) जिसकी पूर्ण कालिक क्रिया रूपों में نے (ने) नहीं जुडता है। उदाहरणतः

میں کتابیں لایا (9)

मै किताबें लाया।

3.4.4 प्रेरणार्थक

प्रेरणार्थक क्रिया रूपों से प्रेरणा जनक कार्यों का वर्णन मिलता है। सभी प्रेरणार्थक रूपों के सकर्मक रूप होते हैं। अतः ا... (ऊ) से सकर्मक तथा وا (वा)

अथवा او (अवा) जुडने पर प्रेरणार्थक क्रिया रूप बनता है। उदाहरणतः

प्रेरणार्थक	*सकर्मक*	*अकर्मक*
بنوانا	بنانا	بننا
बनवाना	बनाना	बनना
نکلوانا	نکالنا	نکلنا
निकलवाना	निकालना	निकलना
اُٹھوانا	اُٹھانا	اُٹھنا
उठवाना	उठाना	उठना
ملوانا	ملانا	ملنا
मिलवाना	मिलाना	मिलना

(1) احمد نے مزدوروں سے اپنا مکان بنوایا
अहमद ने मजदूरों से अपना मकान बनवाया।

(2) آپ مجھے اپنے دوست سے ملوائیں
आप मुझे अपने दोस्त से मिलवायें।

कुछ प्रेरणार्थक रूपों की व्युत्पत्ति او (अवा) के जुडने से होती है, जैसे :

پلوانا ←	پلانا ←	پینا
पिलवाना	**पिलाना**	**पीना**
رُلوانا ←	رُلانا ←	رونا
रुलवाना	**रुलाना**	**रोना**
سُلوانا ←	سُلانا ←	سونا
सुलवाना	**सुलाना**	**सोना**

उदाहरण :

(3) احمد نے سب کو چائے پلوائی
अहमद ने सबको चाय पिलवाई।

(4) ماں نے بچے کو آپا سے سلوایا
माँ ने बच्चे को आपा से सुलवाया।

अभ्यास – 1

1. नीचे दिये गए तुमर्थ रूपों से सकर्मक एवं प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनाओ।

ہنسنا، بننا، سننا، رونا، اُڑنا، اُٹھنا، دوڑنا

2. नीचे के वाक्यों में प्रयुक्त क्रिया रूप की पहचान करके दिये गए खाली स्थान पर लिखें :

(क) ساجدہ نے پرندے کو اُڑا دیا ....

(ख) مالی نے باغ میں کئی درخت کاٹ دیئے ....

(ग) ماں بچے کو سُلا رہی ہے ....

(घ) حامد میدان میں دوڑ رہا ہے ....

(च) شیام میری بات پر ہنس رہا تھا ....

3. खाली स्थानों में उपयुक्त क्रियाएं भरें :

(क) شاگرد کلاس میں ....

(ख) مجھے آج گھر جلدی ....

(ग) حامد کے والد نے بازار سے ....

(ख) میں نے اپنے دوست کو اپنے ابا سے ....

(च) وہ غروب آفتاب کے وقت مسجد میں ....

4. नीचे लिखी क्रियाओं को इस्तेमाल करते हुए दस वाक्य (पांच सकर्मक तथा पांच अकर्मक) बनाएँ :

کھیلنا، چڑھنا، کرنا، جیتنا، ہنسنا

अभ्यास – 2

1. नीचे दिये गए वाक्यों की क्रिया रूपों को पहचान कर लिखें :

(क) آج میں نے اپنے دوست کو فون کروایا

(ख) تمھارے بھائی نے مجھے تمھارے چچا سے ملوایا

(ग) حامد نے شیام کو گھر سے بلایا

(घ) اس کا ہاتھ مشین میں پھنس گیا

(च) والد نے نئی وصیت لکھوائی

2. नीचे लिखी क्रियाओं को इस्तेमाल कर प्रेरणार्थक/सकर्मक क्रिया रूपों वाले पन्द्रह वाक्य बनाएँ :

بھیجنا کھیلنا سونا پینا مرنا پہنچنا کہنا

3. खाली स्थान भर कर वाक्य पूरा करें :

(क) شاہد درخت سے ....

(ख) رام نے دروازہ ....

(ग) بس اسٹینڈ پر نہیں ....

(घ) خزاں میں پتے..............................

(ग) آج بازار میں سبزی..............................

4. नीचे दिए गए पैराग्राफ में प्रेरणार्थक क्रियाओं को रेखांकित करें तथा उनसे वाक्य बनाएँ :

آج صبح میں نے بچوں کے لیے کھانا بنوایا۔ ان کو اپنے ساتھ لے کر بس اسٹینڈ پر گیا اور ان کو بس میں چڑھوایا۔ آج کل سڑک پر بہت بھیڑ رہتی ہے۔ والدین کو بچوں کو بس میں حفاظت سے بٹھانا پڑتا ہے۔ تعلیم کے لیے بھی اعلیٰ انتظام کروانے پڑتے ہیں۔ چونکہ گاؤں میں تعلیمی ذرائع دسترس میں نہیں ہوتے اس لیے بچوں کو شہر کے اسکولوں میں داخل کروانا پڑتا ہے۔

....

अभ्यास – 1 उत्तर

खंड – 3

इकाई 1

1 (क) सामान्य भूतकाल گیا   (ख) अपूर्ण भूत رہے تھے

(ग) अपूर्ण वर्तमान (नित्यद्योतक) رہا ہوں   (घ)अपूर्ण वर्तमान (नित्यद्योतक) رہے ہو

2 (क) کام کر رہے تھے   (ख) رہے تھے

(ग) دوڑ رہے تھے   (घ) کھانا کھا رہے تھے

(च) ہو رہا تھا   (छ) گر گئے

(ज) کھیل رہے تھے

इकाई 2

1 (क) पूर्ण वर्तमान   (ख) पूर्ण वर्तमान

(ग) पूर्ण भूत   (घ) पूर्ण भूत

(च) पूर्ण वर्तमान

2 (क) پہنچ گیا   (ख) چھوٹ گئی تھی

(ग) تعریف کی   (घ) حفظ کر چکا تھا

(च) سنائی

4 چلی گئی، چبانے لگے، کھلا، کھڑے ہوگئے، سہلائی،

بولی، بھاگ جاؤ، مشورہ ہو چکا تھا، ڈال دی جائے گی

इकाई 3

1 (क) تو گاڑی پکڑ لیتا (ख) تو میں ان کو کتاب بھیج دوں گا
(ग) تو میں انھیں یہاں بلالیتا (घ) تو میں اپنے شہر واپس چلا جاؤں گا
(च) تو اپنے دوست سے مل لیتے

2 (क) ختم کر چکا تھا (ख) نہ کہہ پایا
(ख) فیل ہو جائیں گے (घ) خوبصورت رہ سکتا ہے
(च) مل سکتے تھے

इकाई 4

2 (क) सकर्मक (ख) सकर्मक
(ग) सकर्मक (घ) अकर्मक
(च) अकर्मक

3 (क) پڑھ رہا ہے (ख) پہنچا ہے
(ग) کھلونے خریدوائے (घ) ملوایا
(च) داخل ہوا

खंड – 4

इस खंड में आप परसर्ग, कर्मवाच्य रचना, सामान्य, संयुक्त एवं संयोजी क्रियाएँ एंव क्रिया–विशेषण के बारे में पढ़ेंगे। भिन्न–भिन्न परसर्ग विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं जब वे कर्म को क्रिया के साथ संयोजित करते हैं। कर्मवाच्य संरचना की भी काफी गंभीरता से अध्ययन की जरूरत है। कई अन्य प्रकार की मिश्रित क्रियाओं का भी अच्छी तरह उल्लेख किया किया गया है। तथ्य को स्पष्ट करने के लिए उचित उदाहरण भी दिए गए हैं। यह खंड निम्नलिखित इकाईयों में विभाजित किया गया हैं :

इकाई	I	परसर्ग
इकाई	II	कर्मवाच्य संरचना
इकाई	III	सामान्य, सयुक्त एवं संयोजी क्रियाएँ
इकाई	IV	क्रिया विशेषण

प्रत्येक इकाई के अंत में **स्वयं–परीक्षण** अभ्यास के रूप में अभ्यास–1 दिया गया है जिसे इकाई के पठन उपरॉत पूरा करना है। अभ्यास–1 प्रश्नों की कुंजी खंड के अंत में दी गई है। स्वयं परीक्षण अभ्यास के **अतिरिक्त अभ्यास–2** दिया गया है जिसके उत्तर विद्यार्थी एक अलग पृष्ठ पर लिखकर काउन्सिल को भेजें। प्रयुक्त शब्दों के अर्थ शब्दावली के रूप में पुस्तक के अंत में दिए गए हैं।

इकाई 1

परसर्ग

संरचना :

4.1.0 उद्देश्य

4.1.1 भूमिका

4.1.2 परसर्ग

4.1.3 میں तथा اندر का उपयोग

4.1.4 پر तथा اوپر का उपयोग

4.1.5 کا، کے، کی तथा کو का उपयोग

4.1.6 نے का उपयोग

4.1.7 سے का उपयोग

4.1.8 کے के साथ संयुक्त होने वाले अन्य परसर्ग

4.1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढने के उपरान्त आप समझेंगे कि

- उर्दू वाक्य में परर्सग का स्थानायोजन
- विभिन्न परसर्गों की पहचान तथा उनका प्रयोजन
- کا، کے، کی तथा کو परसर्गों की प्रकृति
- نے का विशेष प्रयोग

4.1.1 भूमिका

उर्दू तथा संवर्गीय भाषाओं में परसर्ग विद्यमान हैं जबकि अन्य भाषाओं जैसे अंग्रेजी में उपसर्ग होते हैं। वस्तुतः परसर्ग एक वाक्य की संज्ञा अथवा सर्वनाम अन्य संज्ञा अथवा सर्वनाम के संबंध का द्योतक होता है। उर्दू में परसर्ग उन संज्ञा अथवा सर्वनाम के बाद लिखे जाते हैं जिनका संबंध अन्य संज्ञा के साथ परसंग द्वारा व्यक्त किया जाता है। चूँकि अंग्रेजी में ऐसे शब्द संज्ञा के पूर्व आते हैं इसलिए पूर्व सर्ग कहलाते हैं।

1. अंग्रेजी — The book is on the table
2. उर्दू — کتاب میز پر ہے
   किताब मेज पर है।

देखिये कि अंग्रेजी वाक्य मे संबंध सूचक शब्द संज्ञा वर्ग टेबल से पूर्ण आया है। अतः पूर्वसर्ग कहलाता है। जबकि उर्दू वाक्य में समानार्थी शब्द پر संज्ञा میز के उपरौंत आया है। अतः यह परसर्ग कहलाता है। इस इकाई में आप उर्दू के खास परसर्गो के बारे में पढेंगे।

4.1.2 परसर्ग

आप जान चुके हैं कि परसर्ग संज्ञा अथवा सर्वनाम तथा अन्य संज्ञा एवं सर्वनाम के मध्य का संबंधसूचक होता है। उर्दू में प्रचलित मुख्य परसर्ग निम्न लिखित है :

स्थान सूचक	اوپر، پر، میں، اندر
काल सूचक	پر میں
संबंध सूचक	کو، کے، کی، کا

उर्दू के वाक्यों में ऊपर लिखित परसर्गो की मुख्य भूमिका का उल्लेख अगले भाग में होगा।

4.1.3 میں का प्रयोग

1. میں (में) और اندر (अन्दर) के निम्नलिखित प्रकार्य हैं, जैसे :

رام کمرے کے اندر ہے (1)

राम कमरे के अन्दर है।

(2) دراز میں کتاب رکھی ہے

दराज में किताब रखी है।

(ख) :अवधिद्योतक, जैसे,

(3) حامد دو دن میں دہلی پہنچا

हामिद दो दिन में दिल्ली पहुंचा।

(4) یہ کام دو دن کے اندر ہو جائے گا

यह काम दो दिन के अन्दर हो जाएगा।

(5) صابرہ پانچ منٹ میں چائے بنا لیتی ہے

साबिरा पांच मिनट में चाय बना लेती है।

(ग) :मूल्यद्योतक, जैसे,

(6) ایک لیٹر دودھ کتنے میں آتا ہے

एक लीटर दूध कितने में आता है।

(7) ایک لیٹر دودھ پانچ روپیہ میں آتا ہے

एक लीटर दूध पांच रूपये में आता है।

(8) یہ کتاب دس روپیہ میں ملتی ہے

यह किताब दस रूपये में मिलती है।

4.1.4 پر तथा اوپر का प्रयोग

(क): پر उपसर्ग का प्रयोग वक्त बताने के लिए :

(1) گاڑی پانچ بجکر دس منٹ پر آئی

गाड़ी पांच बजकर दस मिनट पर आई।

(ख): स्थान एवं स्थिति बताने के लिए, जैसे,

(2) کتاب میز پر ہے

किताब मेज पर है।

(3) ٹوپی سر پر ہے

टोपी सिर पर है।

(4) وہ گھوڑے پر سوار ہے
वो घोड़े पर सवार है।

(5) احمد دروازے پر کھڑا ہے
अहमद दरवाजे पर खड़ा है।

(ग): कर्म के प्रति मेहरबानी, यकीन, गुस्सा या हंसी के भाव आदि भी پر के प्रयोग से दर्शाए जाते हैं, जैसे,

(6) اُس پر خدا کی مہربانی ہو
उस पर खुदा की मेहरबानी है।

(7) مجھے اُس پر بہت ہنسی آئی
मुझे उस पर बहुत हंसी आई।

(घ): कई जगह پر और اوپر एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, जैसे,

(8) میں میز کے اوپر بیٹھ گیا
मैं मेज के ऊपर बैठ गया।

(9) میرے فلیٹ کے اوپر ایک فلیٹ ہے
मेरे फ्लेट के ऊपर एक फ्लेट है।

(10) چھت کے اوپر جاکر بیٹھ جاؤ
छत के ऊपर जाकर बैठ जाओ।

4.1.5 کا، کے، کی का प्रयोग

کا، کے، کی ये सभी अलग प्रकार के उपसर्ग हैं। ध्यान दें कि ये तीनों विशेषण रूपी एवं समानार्थी हैं, जैसे, اچھا (अच्छा), اچھے (अच्छे), اچھی (अच्छी)। इसका रूप भी विशेषण की तरह ही संज्ञा के प्रयोग से निंधारित होता है, जैसे, رام کا گھر (राम का घर)। इस वाक्य में گھر (घर) पुल्लिंग होने के कारण کا (का) प्रयोग हुआ है। رام کی دوکان (राम की दुकान) में دوکان (दुकान) स्त्रीलिंग के कारण کی (की) का प्रयोग उपयुक्त है।

ठीक इसी प्रकार کالا (काला) जहां की विशेषण अपने रूपों के आधार पर अपनी अवस्था को दर्शाता है। जैसे, کالا (काला), کالے (काले), کالی (काली)।

यहां भी तीन रूप एक तरह प्रयुक्त हो रहे हैं। हम लोग जानते हैं कि पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग विशेषण किसी में भी कोई अलग रूप नहीं है। अतः کا रूप उर्दू में एक विशेषण की तरह प्रयुक्त होता है। रूप के आधार पर کا विशेषण की तरह प्रतीत होता है परन्तु अर्थ के आधार पर यह एक परसर्ग सा प्रतीत होता है क्योंकि इसका अपना कोई अर्थ नहीं होता है। यह सिर्फ संज्ञाओं को आपस में संयोजित करता है। کا रूप का क्रिया के साथ कोई संबंध नहीं होता, जैसे, پر (पर), نے (ने), سے (से) आदि। کا रूप के प्रकार्य पर ध्यान दें।

(क) अधिकार / स्वामित्व :

(1) ساجد کا قلم اچھا ہے

साजिद का कलम अच्छा है।

(2) حامد کے کپڑے صاف ہیں

हामिद के कपडे साफ हैं।

(ख) संबंध :

(3) راجن کا بھائی دلّی میں رہتا ہے

राजन का भाई दिल्ली में रहता है।

(4) رادھا کی بہن آگرہ میں رہتی ہے

राधा की बहन आगरा में रहती है।

(5) دانش کے بھائی احمد آباد میں رہتے ہیں

दानिश के भाई अहमदाबाद में रहते हैं।

(6) راشد کی بہن لکھنؤ میں رہتی ہے

राशिद की बहन लखनऊ में रहती है।

(ग) द्रव्य :

(7) سونے کا ہار قیمتی ہے

सोने का हार कीमती है।

(8) لکڑی کی میز خوبصورت ہے

लकडी की मेज खूबसूरत है।

(9) چاندی کے گلاس سستے ہیں

چांदी के ग्लास सस्ते हैं।

(घ) कीमत :

(10) کتاب دس روپے کی ہے

किताब दस रूपये की है।

(11) پچاس پیسے کا نمک لاؤ

पचास पैसे का नमक लाओ।

کا के कुछ अन्य प्रयोगों को ध्यान से देखें :

(च) समय :

(12) چار سال کا بچہ اسکول جاتا ہے

चार साल का बच्चा स्कूल जाता है।

(13) فاروق کی دس سال کی نوکری باقی ہے

फारूक की दस साल की नौकरी बाकी है।

(छ) माप / आयत :

(14) چادر دو گز کی ہے

चादर दो गज की है।

(15) دو کمرے کا مکان خالی ہے

दो कमरे का मकान खाली है।

(ज) उद्देश्य :

(16) پینے کا پانی صاف ہے

पीने का पानी साफ है।

(17) کھانے کی ٹرے کمرے میں رکھو

खाने की ट्रे कमरे में रखो।

(झ) संज्ञा के साथ विशेषता बताने के लिए :

(18) بچے کو ماں کا پیار چاہیے

बच्चे को मां का प्यार चाहिए।

(19) کتے کی وفاداری مشہور ہے

कुत्ते की वफादारी मशहूर है।

(20) تاج محل کی خوبصورتی اپنے آپ میں انوکھی ہے

ताजमहल की खूबसूरती अपने आप में अनोखी है।

کو का प्रयोग

(क) जब कर्ता का वाक्य क्रिया के साथ अन्विति को दर्शाता है तब کو (को) रूप – 2 (तिर्यक कारक) के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। ध्यान दें (1) और (2) में वास्तविक कर्ता حامد (हामिद) एवं خالد (खालिद) हैं लेकिन क्रिया की अन्विति उनके साथ नहीं है बल्कि सबसे नजदीकी स्त्रीलिंग संज्ञा (भूख) तथा पुल्लिंग संज्ञा غصہ (गुस्सा) के साथ है, क्योंकि परसर्ग वास्तविक कर्ता के साथ अन्वित को अवरोधित करता है।

(1) حامد کو بھوک لگی

हामिद को भूख लगी।

(2) خالد کو غصہ آیا

खालिद को गुस्सा आया।

(ख) کو का कर्म के बाद प्रयोग

(3) سارا پھولوں کو دیکھتی ہے

सारा फूलों को देखती है।

(4) احمد لڑکے کو ڈھونڈتا ہے

अहमद लड़के को ढूडता है।

उपर्युक्त उदाहरणों में जब परसर्ग کو कर्म के बाद होता है तो क्रिया, कर्ता के वचन एवं लिंग के साथ अन्विति होती है।

(ग) यह गौण कर्म के साथ भी प्रयुक्त होता है।

(5) رادھا مینا کو خط لکھتی ہے

राधा मीना को ख़त लिखती है।

(6) اماں بچے کو روٹی دیتی ہے

अम्मां बच्चे को रोटी देती है।

(घ) वक्त दर्शाने के लिए संज्ञा के बाद प्रयुक्त होता है।

(7) ساجد شام کو گھر آیا

साजिद शाम को घर आया।

(8) عادل دو تاریخ کو گھر لوٹا ہے

आदिल दो तारीख़ को घर लौटा है।

(9) سیما منگل کو آئے گی

सीमा मंगल को आयेगी।

(10) حامد دوپہر کو آتا ہے

हामिद दोपहर को आता है।

4.1.6 نے का प्रयोग

पूर्ण कालिक तथा सकर्मक क्रिया में نے सदैव कर्ता के उपरांत आता है तथा इसके रूप–1 से होने पर क्रिया की अन्विति निकटवर्ती कर्म से होती है, जैसे,

(1) سیما نے سیب کھایا

सीमा ने सेब खाया।

(2) سیما نے چائے پی

सीमा ने चाय पी।

ध्यान दें वाक्य (1) में क्रिया अपने पुल्लिंग रूप में है क्योंकि سیب (सेब) भी पुल्लिंग है एवं एक ही रूप में है। वाक्य (2) में چائے (चाय) स्त्रीलिंग है अतः क्रिया پیا (पिया) भी स्त्रीलिंग है।

(3) سارا نے احمد کو دیکھا

सारा ने अहमद को देखा।

(4) سارا نے کہا

सारा ने कहा।

(5) احمد نے کہا

अहमद ने कहा।

ध्यान दें, سارا نے احمد کو دیکھا (सारा ने अहमद को देखा) वाक्य में संज्ञा के किसी भी प्रथम रूप का प्रयोग नहीं किया जाता है अगर क्रिया

دیکھا (देखा) का प्रयोग کو (को) के पश्चात किया जाता है। ठीक इसी तरह की घटना वाक्य (6), (7) में देखी जा सकती है। विशेष जानकारी के लिए दोनों तरह के वाक्यों की तुलना करें।

(6) لڑکے نے کھایا

लड़के ने खाया।

(7) لڑکیوں نے کھایا

लड़कियों ने खाया।

(8) لڑکوں نے کھایا

लडकों ने खाया।

ध्यान दें, उपयुर्क्त वाक्य (6),(7) एवं (8) में क्रिया का रूप केवल समान کھانا (खाना) ही है। यद्यपि इस बात का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता कि संज्ञा स्त्रीलिंग/पुल्लिग है। एकवचन/बहुवचन है। यदि क्रिया किसी संज्ञा के साथ किसी वाक्य में प्रयुक्त होती है तो उसका रूप निम्नलिखित रूपों नें बदलता है।

(9) لڑکے نے یہ بات کہی

लडके ने यह बात कही।

(10) لڑکے نے یہ شعر پڑھا

लड़के ने ये शे'र पढा।

(11) لڑکی نے یہ چٹھی پڑھی

लडकी ने ये चिठ्ठी पढी।

(12) لڑکی نے یہ خط پڑھا

लडकी ने ये ख़त पढा।

विशिष्ट प्रकार के सकर्मक क्रिया जो इस तरह की संरचना को ग्रहण करते हैं– پڑھنا (पढना), لکھنا (लिखना), لینا (लेना), دینا (देना), سیکھنا (सीखना), کھانا (खाना), پینا (पीना) आदि। क्रियाएं जैसे لانا (लाना), بھولنا (भूलना), بولنا (बोलना) आदि के कुछ अपवाद हैं।

(13) بھائی بازار جانا بھول گیا

भाई बाजार जाना भूल गया।

(14) بھائی نے بازار جانا بھول گیا

भाई ने बाजार जाना भूल गया।

(15) حامد زور سے بولا

हामिद जोर से बोला।

(16) حامد نے سب سے کہا

हामिद ने सब से कहा।

वाक्य (14) एवं (15) अव्याकारणिक एव अस्वीकार्य हैं।

4.1.7 سے का प्रयोग

سے का प्रयोग समय की अवधि या स्थान बताने के लिए होता है। इसके प्रयोग से निम्नलिखित की अभिव्यक्ति होती है।

(क) साधन :

(1) احمد قلم سے لکھتا ہے

अहमद कलम से लिखता है।

(2) صابرہ چاقو سے پھل کاٹتی ہے

साबिरा चाकू से फल काटती है।

(ख) रीतिवाचक :

(3) حامد اردو آسانی سے پڑھ لیتا ہے

हामिद उर्दू आसानी से पढ लेता है।

(4) سیما مشکل سے کام کر پائی

सीमा मुश्किल से काम कर पाई।

(ग) संधि :

(5) پنکھا چھت سے لٹکا ہے

पंखा छत से लटका है।

(6) احمد نے حامد سے ہاتھ ملایا

अहमद ने हामिद से हाथ मिलाया।

(घ) अलगाव / पृथक्करण :

(7) لڑکا سائیکل سے گر پڑا
लड़का साईकिल से गिर पड़ा।

(8) بُری صحبت سے بچو
बुरी सोहबत से बचो।

(9) برے لوگوں سے دور رہو
बुरे लोगों से दूर रहो।

(च) अंतर एवं तुलना :

(10) شاہد سے حامد بڑا ہے
शाहिद से हामिद बड़ा है।

(11) حامد کی قمیض کا ڈیزائن سب سے الگ ہے
हामिद की कमीज का डिजाइन सबसे अलग है।

بولنا (बोलना), کہنا (कहना) एवं سننا (सुनना) क्रियाओं के साथ भी गौण कर्म में इसका प्रयोग होता है।

(12) احمد نے رام سے کہا
अहमद ने राम से कहा।

(13) سیما نے حنا سے سوال پوچھا
सीमा ने हिना से सवाल पूछा।

(14) حامد نے ساجد سے کتاب لی
हामिद ने साजिद से किताब ली।

4.1.8 کے के साथ प्रयुक्त होने वाले कुछ परसर्ग

کے के साथ प्रयुक्त होने वाले कुछ और परसर्ग :

'کے اندر' **(के अन्दर)**

(1) کتاب دراز کے اندر ہے
किताब दराज के अन्दर है।

'کے سامنے؛ 'کے آگے' **(के सामने : के आगे)**

(2) کار بس کے سامنے ہے

कार बस के सामने है।

(3) وہ اس کے آگے کھڑا تھا

वो उसके आगे खड़ा था।

'کے پیچھے' (के पीछे)

(4) لڑکا دیوار کے پیچھے چھپا ہے

लड़का दीवार के पीछे छिपा है।

'کے اوپر' (के ऊपर)

(5) کتاب میز کے اوپر رکھو

किताब मेज के ऊपर रखो

کے نیچے (के नीचे)

(6) درخت کے نیچے شیر بیٹھا ہے

दरख़्त के नीचे शेर बैठा है।

(7) بلی پلنگ کے نیچے سوئی ہوئی تھی

बिल्ली पलंग के नीचे सोई हुई थी।

کے بعد (के बाद)

(8) ساجد حامد کے جانے کے بعد آیا

साजिद, हामिद के जाने के बाद आया।

अभ्यास – 1

---

1. निम्नलिखित वाक्यों से परसर्ग निकालकर उपयुक्त जगहों पर लिखें।

(क) حامد بازار میں گھوم رہا تھا

....

(ख) موہن میدان میں کرکٹ کھیلتا ہے

....

(ग) احمد نے ایک نئی کتاب خریدی

....

(घ) شیام کو بڑا انعام ملا

....

2. निम्नलिखित वाक्यों में परसर्ग रेखांकित कर उसे अपने वाक्य में प्रयोग करें।

(क) رام نے شیام کے سر پر تاج رکھا..

(ख) مداری نے بچوں کو بھالو کا ناچ دکھایا..

(ग) آج میری والدہ ہوائی جہاز سے آرہی ہیں..

(घ) شاگرد نے استاد کو سبق سنایا..

(च) سیلاب کی وجہ سے شہر میں پانی بھر گیا..

3. निम्नलिखित खाली जगहों को प्रयुक्त परसर्गों से भरें।

(क) سارا گھر .... چھت .... گر گئی

(ख) اسپتال .... ڈاکٹر .... مریض .... علاج کیا

(ग) کل ٹرین وقت .... نہیں آئی

(घ) کمرے .... کھڑکی نہیں کھلی

अभ्यास – 2

1. निम्नलिखित वाक्यों में परसर्गों को पहचान कर उसे अपने वाक्यों में प्रयोग करें।

(क) انسان کو دوسروں کے ساتھ نیکی کرنی چاہیے

....

(ख) حامد تفریح کے لیے پہاڑ پر گیا

....

(ग) پریم چند کے افسانوں میں مزدوروں کی حالت پڑھنے کے لائق ہے

....

(घ) فیض کی شاعری میں غریب طبقے پر ہونے والے مظالم کی تصویر ملتی ہے

....

(च) برسات کے موسم میں آم خوب کھائے جاتے ہیں

....

2. निम्नलिखित खाली स्थानों को प्रयुक्त परसर्गों से भरें।

(क) میرے استاد ہمیشہ ٹرین.........دوسرے درجے.........سفر کرتے ہیں

(ख) غالب ....شاعری عام آدمی.........سمجھ.........آ ہی جاتی ہے

(ग) تم الٰہ آباد یونیورسٹی......... طالب علم ہو۔

(घ) اس ....اپنی شجاعت اور ہمت .... قلعہ .... فتح کیا

(च) بچوں .... ادب اور تہذیب سکھانی چاہیے

3. निम्नलिखित उपसर्गों को अपने वाक्यों में प्रयोग करें।

کا، کے، کی، میں، پر، نے، سے، اوپر، کو

....

इकाई 2
कर्म वाच्य रचना

संरचना

4.2.0 उद्देश्य

4.2.1 भूमिका

4.2.2 कर्मवाच्य रचना

4.2.3 समस्त पदों के कर्मवाच्य

4.2.4 निर्वैयक्तिक कर्मवाच्य – भाववाच्य

4.2.0 उद्देश्य

इस इकाई को ध्यानपूर्वक पढ़ने पर ज्ञात होगा :

- उर्द के कर्मवाच्क वाक्यों की पहचान
- कर्मवाच्यों में प्रयुक्त क्रिया रूप
- कर्मवाच्य प्रकृति में निर्वैयक्तिक होते हैं

4.2.1 भूमिका

कर्मवाच्य में क्रिया के ऐसे कृत्य को व्यक्त किया जाता है जिसका संबंध सीधे रूप से प्रत्यक्ष कर्म से होता है। वस्तुतः कर्मवाच्य आधारभूत वाक्य सही होता है। यह सम्मिश्र होता है तथा इसके क्रिया रूप परिवर्तनशील हैं। जैसे कि नीचे दिया गया है :

4.2.2 कर्मवाच्य रचना

भूतकालिक कृदंत विशेषण में सहायक पद جا (जा) युग्म करने से कर्मवाच्य रूप बनता है। यह جانا (जाना) का समस्वन है। कर्मवाच्य वाक्य के कर्ता में अवयव کے ذریعے (के ज़रिए) अथवा سے (से) बढाया जाता है, जैसे;

(1) احمد سے کھانا کھایا نہیں جا رہا ہے

अहमद से खाना खाया नहीं जा रहा है।

(2) حامد سے گاڑی نہیں چلائی جا رہی ہے

हामिद से गाडी नहीं चलाई जा रही है।

(3) اس سے چلا نہیں جا رہا ہے

उससे चला नहीं जा रहा है।

(4) احمد سے کتاب نہیں پڑھی گئی

अहमद से किताब नहीं पढी गई।

(5) خط ڈاک سے بھیجا گیا تھا

खत डाक से भेजा गया था।

(6) حامد کے ذریعے پیغام بھیجا گیا تھا

हामिद के जरिए पैगाम भेजा गया था।

(7) اُن کا بھلا ہمارے ہاتھوں ہوگا

उनका भला हमारे हाथों होगा।

उपरोक्त वाक्यों में केवल (5), (6) तथा (7) ही वस्तुतः कर्मवाच्य हैं।

4.2.3 समस्त पदों के कर्मवाच्य

उर्दू कर्मवाच्यों में समस्त क्रिया पद रूपों का उपयोग प्रायः मिलता है। ऐसे कारकों में दी गई क्रियाओं के साधारण अथवा संयोजक रूप के बाद सहायक क्रिया का कर्मवाच्य रूप लगता है। उदाहरणतः

(1) خط ڈاک سے بھیج دیا جائے گا

खत डाक से भेज दिया जाएगा।

(2) اردو میں ہزاروں کتابیں لکھی گئیں

उर्दू में हजारों किताबें लिखी गईं।

(3) ساری کلاس سے کام لیا گیا تھا
سारी क्लॉस से काम लिया गया था।

4.2.4 भाववाच्य

ऐसे रूप अकर्मक तथा सकर्मक दोनों क्रिया पदों में मिलते हैं। अन्विति में यह प्राकृतिक रूप है। प्रायः कर्मवाचक कर्ता की अनुपस्थिति में अन्य पुरुष पुल्लिंग के उपयोग से प्रकृत रूप व्यक्त किया जाता है। जैसे,

(1) یہاں چاقو بنائے جاتے ہیں
यहां चाकू बनाये जाते हैं।

(2) یہاں گیہوں بیچا جاتا ہے
यहां गेहूं बेचा जाता है।

(3) یہاں اردو پڑھائی جاتی ہے
यहां उर्दू पढाई जाती है।

ऐसी संरचनाएं संपादकीय भाषा में जो कि प्रकृत रूप में निर्वैयक्तिक होती हैं, मिलती हैं, जैसे ,

سُنا جاتا ہے کہ ......
सुना जाता है कि..........

کہا جاتا ہے کہ ......
कहा जाता है कि ....

لوگ کہتے ہیں کہ ......
लोग कहते हैं कि ....

इन्हें कर्मवाच्य रचनाएँ कहा जा सकता है। देखिये इनमें कर्मवाच्य की रचना किस प्रकार हुई है :

पूर्णकालिक क्रिया रूप + جا (जा) + काल द्योतक

یہاں دودھ بیچا جاتا ہے
यहां दूध बेचा जाता है

यह ध्यान रहे कि कर्मवाच्य क्रिया रूप केवल सकर्मक क्रिया रूप से ही बनते हैं।

अभ्यास – 1

1. नीचे के कर्मवाच्य रूपों को रेखांकित कर दिये गए खाली स्थान में लिखें :

(क) شاہد غزل لکھوا رہا ہے

....

(ख) رام نے گھر کا دروازہ بنوا لیا ہے

....

(ग) میں نے باغ میں درخت لگوا دیا ہے

....

(घ) سارا سامان ٹرک میں بھر دیا گیا ہے

....

(च) شبیر نے کتابیں منگوالی ہوں گی

....

2. खाली स्थान में कर्मवाच्य रूप भर वाक्य पूरा कीजिए :

(क) آج مجھ سے خط ....

(ख) تم سے کار نہیں ....

(ग) اس نے پہلے ہی یہ داستان ....

(घ) حکیم سے ساجدہ کا ....

(च) اسے انعام ....

3. नीचे दिए गई क्रियाओं से कर्मवाच्य वाक्य बनाएँ :

بنانا، چلانا، دینا، بیٹھانا، سنانا

अभ्यास – 2

1. खाली स्थान में कर्मवाच्य रूप लिखकर वाक्य पूरा करें :

(क) حامد سے لنگڑا کر ....

(ख) اس آدمی سے یہ راستہ ....

(ग) درزی کے ذریعہ اُس نے یہ قمیض ....

(घ) مزدور سے سارا کام..............................

(च) یہ کام اس سے ....

3. کے ذریعہ तथा سے प्रयुक्त करके नीचे के वाक्यों को कर्मवाच्य रूप में परिवर्तित करें :

(क) سیما اُردو لکھ رہی ہے

(ख) شاکر عمارت بنا رہا ہے

(ग) کرشن بازار میں کتابیں بیچ رہا ہے

(घ) وہ مسجد میں نماز پڑھ رہا ہے

(च) صادق نے احمد آباد میں کپڑے خریدے

4. नीचे लिखी क्रिया–पदों से दस कर्मवाच्य रूप वाले वाक्य लिखें :

پڑھوایا گیا	بنایا جارہا تھا	بیچا جارہا تھا
کھلایا گیا	لکھا جارہا تھا	بنوایا جارہا تھا
پسوایا جائے گا	آواز دی جارہی تھی	سنایا جارہا تھا

....

इकाई 3

सामान्य, संयुक्त एवं संयोजी क्रियाएं

संरचना

4.3.0	उद्देश्य
4.3.1	भूमिका
4.3.2	सामान्य क्रियाएँ
4.3.3	संयुक्त क्रियाएँ
4.3.4	संयोजी क्रियाएँ

4.3.0 उद्देश्य

इस इकाई को ध्यानपूर्वक पढ़ने से निम्नलिखित क्रियाओं के भेद का पता चलेगा :

- सामान्य क्रियाएँ
- संयुक्त क्रियाएँ
- संयोजी क्रियाएँ

4.3.1 भूमिका

उर्दू के क्रिया रूप काफी जटिल एवं सम्मिश्र हैं। कभी–कभी वाक्य में केवल क्रिया रूप, सहायक क्रिया अथवा बिना सहायक क्रिया کھانا ہے/کھایا (खाना है/खाना) प्रयुक्त होता है, ऐसे रूप सामान्य क्रिया रूप कहलाते है। जब दो क्रियाएं सहायक अथवा बिना सहायक क्रिया के एकल क्रिया रूप में प्रयुक्त हों तो ऐसी क्रियाएं संयुक्त क्रियाएँ कहलाती हैं।

इसी प्रकार वे क्रिया रूप जिनमें सहायक क्रिया گیا تھا/گیا अथवा बिना सहायक क्रिया के प्रयुक्त हों वे संयोजी क्रिया रूप कहलाती हैं।

4.3.2 सामान्य क्रियाएँ

सामान्य क्रिया रूप मूल क्रिया रूप पर आधारित होता है। मूल क्रिया रूप मूल धातु रूप से उद्धरित होते हैं :

کھانا، اُٹھنا، جانا، چلنا

इनसे निम्न लिखित वाक्य बनाए जा सकते हैं :

(1) لڑکا آم کھاتا ہے

लड़का आम खाता है।

(2) لڑکا کرسی سے اُٹھا

लडका कुर्सी से उठा।

(3) لڑکا کرسی پر بیٹھا

लड़का कुर्सी पर बैठा।

(4) لڑکا بازار گیا

लडका बाज़ार गया।

(5) لڑکا بازار کی طرف چلا

लडका बाज़ार की तरफ़ चला।

4.3.3 संयुक्त क्रियाएँ

संयुक्त क्रियाएँ मूल क्रिया तथा सहायक क्रिया, जिन्हें रंजक क्रिया भी कहा जाता है, से बनती हैं। रंजक क्रिया काल तथा अन्विति के लिए प्रयुक्त होती हैं, जैसे,

کھالینا	خرید لینا	سو جانا	گر پڑنا
खा लेना	ख़रीद लेना	सो जाना	गिर पड़ना
لکھ دینا	اُتر آنا	چلا جانا	آجانا
लिख देना	उतर आना	चला जाना	आ जाना
مل جانا	چلّا پڑنا	روک دینا	رو اُٹھنا
मिल जाना	चिल्ला पडना	रोक देना	रो उठना
مل بیٹھنا	کر ڈالنا	اُچھل پڑنا	لڑ بیٹھنا
मिल बैठना	कर डालना	उछल पड़ना	लड़ बैठना
	آدھمکنا	رکھ چھوڑنا	
	आ धमकना	रख छोड़ना	

उदाहरणतः

(1) وہ سوتے سوتے گر پڑا
वह सोते सोते गिर पड़ा।

(2) وہ آج کل جلدی سو جاتا ہے
वह आजकल जल्दी सो जाता है।

(3) اردو کی کتاب بازار سے خرید لو
उर्दू की किताब बाजार से खरीद लो।

(4) خط میں لکھ دو کہ میں وہاں پہنچ نہیں پاؤں گا
खत में लिख दो कि मैं वहां पहुंच नहीं पाऊँगा।

4.3.4 संयोजी क्रियाएँ

सयोजी क्रियाएँ विशेषण अथवा संज्ञा के उपरोंत प्रयुक्त होने वाली क्रिया से बनती हैं, जैसे,

صاف کرنا	آواز دینا	دکھائی دینا	بند ہونا
साफ करना	आवाज देना	दिखाई देना	बंद होना
منظور ہونا	بحث کرنا	معلوم ہونا	حفاظت کرنا
मंजूर होना	बहस करना	मालूम होना	हिफाज़त करना
شور مچانا			
शोर मचाना			

उदाहरणतः

(1) اس نے کمرہ صاف کیا
उसने कमरा साफ किया।

(2) دانش نے احمد کو دور سے آواز دی
दानिश ने अहमद को दूर से आवाज़ दी।

(3) تیز ہوا سے دروازہ بند ہو گیا
तेज हवा से दरवाजा बंद हो गया।

(4) اس کی درخواست منظور ہو گئی ہے
उसकी दरखास्त मंज़ूर हो गई है।

(5) آپ سے بحث کرنا فضول ہے

आप से बहस करना फिजूल है।

(6) مجھے معلوم تھا کہ وہ اب نہیں آئے گا

मुझे मालूम था कि वो अब नहीं आयेगा।

(7) شور مت مچاؤ

शोर मत मचाओ।

अभ्यास – 1

1. नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया रूपों की पहचान कर दिए गए खाली स्थान में लिखें :

(क) آج بازار بند ہے ....

(ख) کوئی دروازہ کھٹکھٹا رہا ہے ....

(ग) میں نے ان کی معلومات سے بہت فائدہ اٹھایا ....

(घ) اسکولوں میں اردو کی کتابیں بہت کم قیمت پر مل رہی ہیں ....

(च) وہ اپنے سامان کی خود حفاظت کر سکتا ہے ....

2. खाली स्थानों में उचित संयुक्त/संयोजी क्रिया रूप लिख कर वाक्यों को पूरा करें :

(क) اس نے اپنا سبق پوری طرح ....

(ख) مجرم کو عدالت نے ....

(ग) احمد کو پرنسپل نے بہترین شاگرد کا ....

(घ) اُردو اس کتاب کے ذریعہ بہ آسانی..............................

(च) حامد نے سالانہ امتحان میں ....

3. नीचे दिए गए क्रिया रूपों से दस वाक्य बनाईए :

حاصل ہونا، صاف کرنا، قتل کرنا، انعام ملنا، فتح کرنا

تباہ کرنا، انجام دینا، اُڑنا، پہنچنا، داخل کرنا

अभ्यास – 2

1. नीचे लिखे वाक्यों में प्रयुक्त क्रिया रूपों की पहचान कर उनसे अपने वाक्य लिखिए :

(क) قومی آواز میں یہ خبر نہیں چھپی ہے

(ख) اُردو رسم الخط میں لکھو

(ग) بازار میں اُردو کی کتابیں دستیاب ہیں

(घ) غزل سننا سب پسند کرتے ہیں

(च) پریم چند کے افسانوں میں کرداروں کے نام تلاش کرو

2. उचित क्रिया रूप लिखकर नीचे दिये गए वाक्यों को पूरा कीजिए :

(क) غالب کی غزلیں..............................

(ख) اُردو شاعری میں ....

(ग) اُردو زبان ہندستان میں ....

(घ) اخبارات کے ذریعہ ہم..............................

(च) انسان تعلیم یافتہ ہو کر..............................

3. नीचे दी गई क्रियाओं से दस वाक्य बनाईए :

خوشیاں منانا، مبارکباد دینا، حسد کرنا، بازی مار لے جانا،

خبر دینا، گفتگو کرنا، آواز دینا، چلانا، مار ڈالنا، پرورش کرنا

....

इकाई 4

क्रिया विशेषण

संरचना :

4.4.0 उद्देश्य
4.4.1 भूमिका
4.4.2 क्रियाविशेषण एवं क्रिया विशेषणात्मक
4.4.3 कालवाचक क्रिया विशेषणात्मक
4.4.4 स्थानवाचक क्रिया विशेषण
4.4.5 रीतिवाचक क्रिया विशेषण
4.4.6 क्रियाविशेषण रूपी विशेषण
4.4.7 संयोजन रूपी कार्य विशेषण

4.4.0 उद्देश्य

इस इकाई को ध्यान पूर्वक पढने पर ज्ञात होगा कि :

- क्रियाविशेषणों की पहचान तथा प्रयोग
- क्रियाविशेषण तथा क्रिया विशेषणात्मक में भेद
- विभिन्न क्रिया विशेषणों के भेद

4.4.1 भूमिका

क्रियाविशेषण वह अवयव है जिससे क्रिया विशेषण तथा अन्य क्रिया विशेषणों को विकृत किया जाता है। क्रिया तथा क्रियाविशेषणात्मक में अन्तर तथा क्रिया विशेषणों के विभिन्न भेद कालवाचक, स्थानवाचक, रीतिवाचक की व्याख्या

भी इस इकाई में की जाएगी। क्रियाविशेषण भी संकल्पना को उदाहरणों द्वारा वर्जित किया जाएगा।

4.4.2 क्रियाविशेषण एवं क्रिया विशेषणात्मक

क्रियाविशेषण क्रियार्थक प्रक्रिया के सूचक हैं। इन्हें रीतिवाचक, स्थान वाचक तथा कालवाचक में विभक्त किया जा सकता है। बृहत रूप में कार्य करने वाली क्रियाविशेषण संबंधी इकाई को क्रिया विशेषण पद तथा क्रिया विशेषणात्मक वाक्यांश/उपवाक्य भी कहते हैं।

क्रियाविशेषण का संबंध शब्द से तथा क्रिया विशेषणात्मक का पद तथा उपवाक्य से होता है, जैसे,

(1) وارث اچانک چلا گیا
वारिस अचानक चला गया।

(2) حامد فوراً آ گیا
हामिद फौरन आ गया।

इनमें اچانک (अचानक) तथा فوراً (फौरन) क्रियाविशेषण तथा آ گیا (आ गया) एवं چلا گیا (चला गया) क्रमशः क्रिया भेद के द्योतक हैं। इनसे क्रियार्थक प्रकार अथवा کیسے (कैसे) के प्रश्न का उत्तर नीचे दिए गए रूप में मिलता है :

(3) وہ کیسے چلا گیا؟
वो कैसे चला गया?

(4) وہ اچانک چلا گیا
वो अचानक चला गया।

(5) رام نے ہوشیاری سے کام کیا
राम ने होशियारी से काम किया।

अंतिम वाक्य में ہوشیاری سے (होशियारी से) کام کیا (काम किया) के प्रश्न को विशेषणात्मक रूप से वर्जित करता है।

(6) کیسے کام کیا؟
कैसे काम किया?

اچانک एक मूल क्रिया विशेषण है जबकि ہوشیاری سے दो शब्दों के युग्म

से बना एक संयुक्ताक्षर– क्रिया विशेषणात्मक वाक्यांश है।

क्रिया विशेषणात्मक को निम्नलिखित कोटियों में विभक्त किया जा सकता है:

4.4.3 कालवाचक क्रियावाचक

कालवाचक क्रिया विशेषण/क्रिया विशेषणात्मक के द्वारा किसी कृत के होने का समय अथवा काल का ज्ञान होता है। कुछ कालवाचक क्रियाविशेषण निम्नलिखित हैं :

صبح کو	رات کو	چار بجے	صبح	کل	آج
सुबह को	रात का	चार बजे	सुबह	कल	आज

(1) آج عید کا دن ہے

आज ईद का दिन है।

(2) وہ کل دلی جائے گا

वो कल दिल्ली जाएगा।

(3) رات کو اخبار پڑھوں گا

रात को अखबार पढ़ूंगा।

(4) صبح دفتر جانا ہے

सुबह दफ्तर जाना है।

4.4.4 स्थानवाचक क्रियाविशेषण

स्थानवाचक क्रियाविशेषण अथवा क्रिया विशेषणात्मक से कृत स्थान का पता चलता है। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

گھر میں	بازار میں	یہاں وہاں
घर में	बाजार में	यहां वहां
باہر اندر	مدرسے میں	میز پر
अन्दर बाहर	मदरसे में	मेज़ पर

پہاڑ پر	دریا کے کنارے،
पहाड़ पर	दरिया के किनारे

(1) آپ وہاں جائیے

आप वहां जाईये।

(2) یہاں سے لال قلعہ دیکھیے
यहां से लाल किला देखिये।

(3) بازار میں بہت رونق ہے
बाजार में बहुत रौनक है।

(4) گھر میں بجلی نہیں ہے
घर में बिजली नहीं है।

(5) میز پر پھل رکھے ہیں
• मेज पर फल रखे हैं।

4.4.5 रीतिवाचक क्रियाविशेषण / क्रिया विशेषणात्मक वाक्यांश

रीतिवाचक क्रिया विशेषणात्मक वाक्यांश से रीतिवाचक संबंधी कृत का ज्ञान होता है। इनके मुख्यतः प्रकार निम्नलिखित हैं :

اچانک فوراً	مشکل سے	خوشی سے	صبح سویرے
अचानक फौरन	मुश्किल से	खुशी से	सुबह सवेरे
آہستہ سے	اس طرح	اُس طرح	دھیرے دھیرے
आहिस्ता से	इस तरह	उस तरह	धीरे धीरे

उदाहरणत :

(1) یوں کھیلو
यूं खेलो

(2) اس طرح پڑھو
इस तरह पढो

(3) ہم خوشی سے کام کریں گے
हम खुशी से काम करेंगे

(4) وہ صبح سویرے یہاں سے چلا گیا
वह सुबह सवेरे यहां से चला गया

4.4.6 विशेषण रूपी क्रियाविशेषण

कुछ विशेषण ऐसे हैं जो क्रियाविशेषण के रूप में कार्य करते हैं, जैसे,

چند	پہلے	بہت	تھوڑا	تیز
चन्द	पहले	बहुत	थोड़ा	तेज़

उदाहरणतः

(1) لڑکا تیز دوڑتا ہے

लड़का तेज दौडता है।

(2) تھوڑا تیز چلو

थोडा तेज चलो।

(3) لڑکا بہت تیز چل رہا ہے

लडका बहुत तेज चल रहा है।

(4) اگر آپ پہلے چلیں تو اچھا ہوگا

अगर आप पहले चलें तो अच्छा रहेगा।

कुछ वाक्यांश ऐसे हैं जिनका प्रयोग क्रियाविशेषण/क्रिया विशेषणात्मक रूप में होता है। नीचे दिये गए वाक्य देखिये :

(5) حامد ہاتھ میں کتاب لیے جا رہا تھا

हामिद हाथ में किताब लिये जा रहा था।

(6) احمد نے اسکول سے لوٹتے ہوئے حامد کو کتاب دی

अहमद ने स्कूल से लौटते हुए हामिद को किताब दी।

(7) اُس نے مجھے بہت اہم باتیں بتائیں

उसने मुझे बहुत अहम बातें बताईं।

इनमें ہاتھ میں کتاب لیے (हाथ में किताब लिये) क्रिया विशेषणात्मक वाक्यांश حامد کیسے جا رہا تھا؟ (हामिद कैसे जा रहा था?) के प्रश्न का उत्तर है। इसी प्रकार لوٹتے ہوئے (लौटते हुए) वाक्यांश का प्रश्न निम्नलिखित है :

(8) کتاب کب دی؟

किताब कब दी?

अतः ہاتھ میں کتاب لیے (हाथ में किताब लिये) रीतिवाचक तथा لوٹتے ہوئے (लौटते हुए) काल वाचक क्रिया विशेषणात्मक है।

4.4.7 संयोजन रूपी क्रियाविशेषण

शब्द समूह रूपी क्रिया विशेषण क्रिया विशेषणात्मक कहलाते हैं। मूल क्रिया रूप में کر लगा कर भी ये बनाये जा सकते हैं। नीचे के वाक्यों को देखिये :

(1) کھانا کھا کر سب لوگ چلے گئے

खाना खाकर सब लोग चले गये।

(2) احمد نے اٹھ کر میز سے کتاب اٹھالی

अहमद ने उठकर मेज से किताब उठा ली।

कुछ क्रियाविशेषण पुनरुक्त रूप होता है, उदाहरणतः

اِدھر اُدھر	یہاں وہاں	جوں جوں
इधर उधर	यहां वहां	जूं जूं
جیسے تیسے	ہو بہو	جوں کا توں
जैसे तैसे	हू–ब–हू	जूं का तूं

(3) وہ بازار میں اِدھر اُدھر گھوم رہا تھا

वह बाजार में इधर उधर घूम रहा था।

(4) دھلائی کے باوجود قمیض پر دھبے جوں کے توں رہے

धुलाई के बावजूद कमीज पर धब्बे जूं के तूं रहे।

(5) جوں جوں میں کام کرنے لگا کام آسان ہونے لگا

जूं जूं मैं काम करने लगा काम आसान होन लगा।

(6) لوٹنے پر میں نے میز کا سامان جوں کا توں پایا

लौटने पर मैंने मेज का सामान जूं का तूं पाया।

अभ्यास – 1

1. नीचे लिखे वाक्यो मे क्रियाविशेषण को रेखांकित कीजिए :

(क) شمع فوراً بجھ گئی

....

(ख) حامد اچانک الہٰ آباد چلا گیا

....

(ग) تین حادثے ایک دم ہو گئے

....

(घ) شہر میں یکایک ہنگامہ مچ گیا

....

(च) احمد تیزی سے وہاں پہنچ گیا

....

2. नीचे लिखे वाक्यों में काल/स्थान वाचक क्रियाविशेषण पहचान कर दिये गये स्थान में वाक्य लिखिए :

(क) ادھر اُدھر لوگ ہی لوگ تھے

....

....

(ख) چاروں طرف سبزہ اُگا ہوا تھا

....

....

(ग) کتب خانے میں ہر طرف طلبہ پڑھ رہے ہیں

....

....

(घ) بازار میں کم جگہوں پر کتابیں بک رہی تھیں

....

....

(च) اُردو غزل کا شوق ہر طرف پھیل رہا ہے

....

....

3. विशेषण रूपी क्रिया विशेषण को रेखांकित कर दिये गये स्थान में उनसे वाक्य बनाकर लिखिए :

(क) وہ تیزی سے دوڑ رہا تھا

....

(ख) اس نے پہلے ہی اُستاد سے اجازت لے لی تھی

....

(ग) چور ہوشیاری سے فرار ہوگیا تھا

....

(घ) اُس نے چالاکی سے اُسے سب کچھ بتا دیا

....

(च) حامد نے فوراً دست بستہ ہوکر معافی مانگ لی

....

4. निम्नलिखित काल/स्थानवाचक क्रिया विशेषण लगाकर नीचे के वाक्यों

को पूरा कीजिए :

نصف شب کو، آدھے دن سے، پرسوں، آج کل

(क) .... وہ اسکول کے باہر کھڑا ہوا ہے

(ख) میرے والد .... گھر پہنچے

(ग) .... میرا بھائی لندن سے آرہا ہے

(घ) .... اسے اپنی خبر نہیں رہتی

अभ्यास – 2

---

1. नीचे दिये गए वाक्यों में रीतिवाचक/कारणवाचक क्रिया विशेषण/क्रिया विशेषणात्मकों की पहचान कीजिए :

(क) اس نے یہ امتحان آسانی سے پاس کر لیا

(ख) وہ لڑکی باغ میں خراماں چل رہی تھی

(ग) وہ بچہ چپکے سے آکر میرے پاس بیٹھ گیا

(घ) رام چپکے چپکے کلاس میں داخل ہوا

(च) اس نے قلم سے تیر کا کام لیا

(छ) یہ جوتا مشین سے نہیں بنا ہے

(ज) ساجد نے چاقو سے کاغذ کاٹ ڈالا

(झ) مالی نے پھاوڑے سے گڑھا کھودا

2. निम्नलिखित क्रियाविशेषण रूपों से वाक्य बनाईए :

خوشی سے زلزلہ سے رنجیدہ ہوکر ہوا سے ضعف سے

کمزوری سے اتنے میں سے پہلے کے بعد کے پہلے

3. नीचे दिये गए वाक्यों में प्रयुक्त क्रिया विशेषणात्मक रूपों वाले वाक्यो के संमुख दिये गये स्थान में ✓ या ✗ का चिन्ह लगाईए।

(क)	حامد بازار سے آکر اسکول چلا گیا	
(ख)	شاہد دھیرے دھیرے ٹہل رہا تھا	
(ग)	بچے پتھر مار کر بھاگ گئے	
(घ)	نوکر کھانا دے کر باہر چلا گیا	
(च)	میں تھک ہار کر بیٹھ گیا	

4. निम्नलिखित क्रिया विशेषण पुनरुक्त रूपों से वाक्य बनाईए :

جیسے تیسے، یہاں وہاں، جوں جوں، جوں کا توں، اِدھر اُدھر، ہو بہو

....

अभ्यास – 1 उत्तर

खंड – 4

इकाई 1

1. (क) میں (ख) میں

   (ग) نے (घ) کو

2. (क) نے، کے، پر (ख) نے، کو، کا

   (ग) سے (घ) نے، کو، کا

   (च) کی، سے، میں

3. (क) کی، سے (ख) میں، نے

   (ग) پر (घ) کی

इकाई 2

1. (क) لکھوا رہا ہے (ख) بنوا لیا ہے

   (ग) لگوا دیا ہے (घ) بھر دیا گیا ہے

   (च) منگوالی ہوں گی

2. (क) لکھا نہیں جا رہا ہے (ख) چلائی جا رہی ہے

   (ग) نہیں پڑھوائی ہے (घ) علاج نہیں ہو پا رہا ہے

   (च) نہیں دیا جا رہا ہے

इकाई 3

1. (क) सामान्य क्रिया　　(ख) सामान्य क्रिया

(ग) संयोजी क्रिया　　(घ) संयुक्त क्रिया

(च) संयोजी क्रिया

2. (क) حفظ کر لیا ہے　　(ख) سزا سنائی

(ग) خطاب دیا　　(घ) سیکھی جاسکتی ہے

(च) کامیابی حاصل کی

इकाई 4

1. (क) فوراً　　(ख) اچانک　　(ग) ایک دم

(घ) یکایک　　(च) تیزی سے

2 (क) اِدھر اُدھر　　(ख) چاروں طرف　　(ग) ہر طرف

(घ) کم جگہوں، پر　　(च) ہر طرف

3. (क) تیزی سے　　(ख) پہلے ہی　　(ग) ہوشیاری سے

(घ) چالاکی سے　　(च) دست بستہ ہوکر

4. (क) آدھے دن سے　　(ख) نصف شب کو　　(ग) پرسوں

(घ) آج کل

....

खंड 5

इस खंड में आप उर्दू भाषा के वाक्य संरचना के बारे में पढ़ेंगे। उर्दू में चार प्रकार की वाक्य संरचना पाई जाती है। मुख्यतः निर्देशक प्रश्नवाचक, विस्मयादिबोधक एवं आज्ञार्थक। खंड निम्नलिखित इकाईयों में बांटा गया है :

इकाई – 1 : उर्दू की वाक्य संरचना – I

इकाई – 2 : उर्दू की वाक्य संरचना – II

इकाई – 3 : संयुक्त वाक्य

इकाई – 4 : मिश्रित वाक्य

इकाई –1, निर्देशक वाक्यों के बारे में विस्तार से वणर्न करेगी एवं कुछ अन्य रूपों के बारे में भी संक्षेप में उदाहरण प्रस्तुत करेगी। इकाई – 2, प्रश्नवाचवक, विस्मयादिबोधक एवं आज्ञार्थक वाक्यों के बारे में विस्तार से वर्णन करेगी। इकाई – 3, एवं इकाई – 4 मिश्रित वाक्य जो एक से अधिक उपवाक्यों से बने होते हैं, का वर्णन करेगी।

प्रत्येक इकाई के अंत में **स्वयं–परीक्षण** अभ्यास के रूप में **अभ्यास**–1 दिया गया है जिसे इकाई के पठन उपरान्त पूरा करना है। **अभ्यास**–1 के प्रश्नों की कुंजी खंड के अन्त में दी गई है। स्वयं परीक्षण अभ्यास के अतिरिक्त अभ्यास–2 दिया गया है जिसके उत्तर विद्यार्थी एक अलग पृष्ठ पर लिख कर काउन्सिल को भेजें। प्रयुक्त शब्दों के अर्थ शब्दावली के रूप में पुस्तक के अंत में दिए गए हैं।

इकाई 1

उर्दू की वाक्य अभिरचना – 1

संरचना :

5.1.0 उद्देश्य

5.1.1 भूमिका

5.1.2 वाक्य अभिरचना

5.1.3 निर्देशात्मक / घोषणात्मक वाक्य

5.1.3.1 अस्तिवाचक / स्वरूपवाचक वाक्य

5.1.3.2 नकारात्मक वाक्य

5.1.4 प्रश्नात्मक वाक्य

5.1.5 आज्ञार्थक वाक्य

5.1.6 विस्मयादिबोधक वाक्य

5.1.0 उद्देश्य

यदि आप इस इकाई को ध्यान पूर्वक पढते हैं तो आप

- उर्दू के विस्तृत वाक्य अभिरचना के बारे में जान पाऐंगे
- विभिन्न प्रकार के वाक्यों को पहचान पाएंगे
- विभिन्न प्रकार के वाक्यों के प्रयोजन को जान पाऐंगे
- स्वरुपवाचक वाक्य एंव नकारात्मक वाक्यों को पहचान लेंगे और उनका प्रयोग कर सकेंगे

5.1.1 भूमिका

जैसा कि आप जानते हैं कि उर्दू में वाक्य का बुनियादी क्रम कर्ता–कर्म–क्रिया है। यद्यपि कुछ वाक्य रूप ऐसे भी होते हैं जिनमें कुछ परिवर्तित रूप देखे जा सकते हैं। उदाहरणतः कुछ वाक्य जैसे आज्ञार्थक, जिनका प्रयोग आदेश, प्रार्थना आदि के लिए होता है, में कर्ता नहीं होता। इस तरह उर्दू भाषा में कई प्रकार के वाक्य रूप पाये जाते हैं।

मुख्यतः उर्दू में चार प्रकार के वाक्य हैं : निर्देशात्मक ज्ञापक, प्रश्नवाचक, आज्ञार्थक एवं विस्मयादिबोधक। इस इकाई में हम इन वाक्यों के बारे में पढ़ेंगे।

5.1.2 निर्देशात्मक ज्ञापक वाक्य

निर्देशात्मक ज्ञापक वाक्य , एक ऐसा प्रकार है जिसका प्रमुख उद्देश्य सूचना देना है। ये वाक्य तथ्यात्मक कथन होते हैं जो तथ्य को प्रदर्शित करते हैं। उदाहरणतः निम्नलिखित वाक्यों को देखें :

(1) حامد کتاب پڑھ رہا ہے

हामिद किताब पढ रहा है।

इस वाक्य में حامد कर्ता एवं کتاب कर्म है। پڑھ رہا ہے क्रिया है। यह वाक्य हामिद क्या कर कर रहा है? के बारे में एक कथन प्रस्तुत कर रहा है। निर्देशात्मक वाक्य मूलतः स्वरूपवाचक या नकारात्मक होते हैं। अब हम इन दो प्रकार के वाक्यों को देखेंगे।

5.1.2.1 अस्तिवाचक / स्वरूपवाचक वाक्य

आप जान चुके हैं कि निर्देशात्मक ज्ञापक वाक्य कुछ सूचना प्रदान करते हैं। इस तरह के वाक्यों में नकारात्मक या सकारात्मक कथन होते हैं। सकारात्मक कथन वाले वाक्यों को स्वरूपवाचक वाक्य कहते हैं। नकारात्मक कथन वाले वाक्यों को नकारात्मक वाक्य कहते हैं। निम्नलिखित कुछ स्वरूपवाचक वाक्यों को देखें :

(1) حامد سو رہا ہے

हामिद सो रहा है।

(2) لڑکوں نے کل میچ اچھا کھیلا

लडकों ने कल मैच अच्छा खेला।

(3) ہم بچوں کو مٹھائی کھلائیں گے
हम बच्चों को मिठाई खिलायेंगे।

उपर्युक्त सभी वाक्य सकारात्मक हैं। वाक्य 1 वर्तमानकाल में है, वाक्य 2 भूतकाल में एवं वाक्य 3 भविष्यकाल में हैं। अतः कोई भी कथन जो नकारात्मक न हो, स्वरूपवाचक कहलाता है।

5.1.2.2 नकारात्मक वाक्य

उर्दू में नकारात्मक वाक्य نہیں , مت के प्रयोग से बनता है। इनमें مت का प्रयोग काफी सरल है।

(1) سیما اخبار نہیں پڑھتی
सीमा अखबार नहीं पढती।

(2) ہم بازار نہیں جا سکے
हम बाजार नहीं जा सके।

ध्यान दें नकारात्मक तत्व हमेशा मुख्य क्रिया के पहले आता है जो वाक्य 1 मे پڑھنا (पढना) और वाक्य 2 मे جانا (जाना) है। लेकिन कभी कभी मुख्यतः विशेष अवस्थाओं में नकारात्मक तत्व क्रिया के बाद में आता है। उदाहरण :

(3) احمد جائے گا نہیں
अहमद जाएगा नहीं।

(4) احمد نے میرا خط پڑھا تو نہیں؟
अहमद ने मेरा खत पढ़ा तो नहीं?

वाक्य 3 एवं 4 जैसे वाक्यो मे नकारात्मक तत्व मुख्यतः क्रिया جائے گا (जाएगा) एवं پڑھا (पढा) के बाद आता है।

उर्दू में نہیں (मत/ना) जब भी किसी सार्वभौमिक सत्य/नित्य यथार्थ के साथ प्रयुक्त होता है तो वर्तमान काल निर्देशक (है हैं, हूं) नहीं प्रयुक्त होता। उदाहरण के लिए निम्न वाक्यों को देखें :

(5) ہم دودھ نہیں پیتے
हम दूध नहीं पीते।

(6) وہ لوگ کار میں نہیں جاتے
वो लोग कार में नहीं जाते।

(7) سورج مغرب سے نہیں نکلتا

सूरज मगरिब से नहीं निकलता।

(8) جھوٹ کے پیر نہیں ہوتے

झूठ के पैर नहीं होते।

उर्दू में नकारात्मक तत्व सामान्य आज्ञार्थक वाक्यों के साथ प्रयुक्त होता है।

(9) (تو) وہاں مت جا

(तू) वहां मत जा।

(10) (تم) مت جاؤ

(तुम) मत जाओ।

वाक्य 9 और 10 में प्रयुक्त सर्वनाम تو और تم आपसी जान पहचान को सूचित करते हैं एवं मुख्य क्रिया के दाहिने तरफ مت लगाकर वाक्य को नकारात्मक बनाते हैं।

निम्न आज्ञार्थक वाक्यों में نہ लगाकर वाक्य को नकारात्मक बनाते हैं :

(11) (آپ) وہاں نہ جائیے

(आप) वहां न जाईये।

(12) بہتر ہوگا کہ آپ وہاں نہ جائیں

बेहतर होगा कि आप वहां न जाएँ।

वाक्य 11 एवं 12 में विनम्र सर्वनाम प्रयुक्त हुआ है। यहां نہ नकारात्मक तत्व मुख्य क्रिया के साथ दाहिने लगाकर, नकारात्मक वाक्य बनाते हैं।

5.1.3 प्रश्नवाचक वाक्य

प्रश्नवाचक वाक्य, एक ऐसा प्रकार है जिसमें सुनने वालों से यह निवेदन किया जाता है कि वह किसी चीज़ के बारे में कुछ सूचना दें। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित वाक्यों को देखें :

(1) کیا عبدل بازار جا رہا ہے؟

क्या अब्दुल बाजार जा रहा है?

वाक्य में کیا प्रश्नवाचक शब्द है जो स्वरूपवाचक वाक्य को प्रश्नवाचक वाक्य में परिवर्तित करता है। दूसरी इकाई में हम लोग प्रश्नवाचक वाक्य के बारे में विस्तार से पढ़ेंगे। वर्तमान के लिए प्रश्नवाचक शब्द जैसे کیا

(क्या), کون (कौन), کیسے (कैसे), کب (कब) आदि को याद कर लें। इनकी व्याख्या अगले उपवर्ग में की जाएगी।

5.1.4 आज्ञार्थक

आज्ञार्थक वाक्य का प्रयोग आज्ञा/आदेश/प्रार्थना आदि को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्य देखें :

(1) دروازه بند کر دو

दरवाजा बंद कर दो।

यहां دروازه कर्म है। بند کر دو क्रिया है। सामान्यतः आदेश / प्रार्थना / विनती आदि मध्यम पुरूष वाले कर्ता के साथ ही प्रयुक्त होते हैं। अतः इस तरह के वाक्य में कर्ता कभी भी व्यक्त नहीं होता। इन वाक्यों के बारे में दूसरी इकाई में विस्तार से अध्ययन करेंगे।

5.1.5 विस्मयादिबोधक वाक्य

विस्मयादिबोधक वाक्य, विशिष्ट, मानवीय भावनाओं को व्यक्त करता है। निम्नलिखित वाक्यों को देखें :

(1) واه واه! کیا میچ جیتا ہے

वाह! वाह! क्या मैच जीता है

उर्दू में واه واه! अभिव्यक्ति स्वतः सुख एवं आनंद को व्यक्त करता है। अगली इकाई में विस्मयादिबोधक वाक्यों के बारे में भी विस्तार से बताया जाएगा।

अभ्यास – 1

1. वाक्यों के प्रकारों को पहचानें तथा दिए गए खाली स्थानों में लिखें :

(क) حامد پڑھ رہا تھا ....

(ख) ظفر بازار گیا اور کتاب خرید لایا ....

(ग) رشید آج لکھنؤ نہیں جا رہا ہے ....

(घ) واه! کیا خوبصورت عمارت بنائی ہے ....

(च) اُسے اسکول جانے دو ....

(छ) اُس نے اپنا کام پورا کیوں نہیں کیا؟ ....

2. उपर्युक्त शब्दों से खाली स्थानों की पूर्ति करें :

(क) ان کو کام ....

(ख) بازار سے قافلہ..............................

(ग) افسوس ! ہمارا سچا دوست..............................

(घ) واہ واہ ! دنیا میں بھی..............................

(च) خبردار! اس بچے کو اگر..............................

3. विस्मयादिबोधक अभिव्यक्तियों को पहचानें :

(क) کیا خوب منظر ہے! ....

(ख) واہ واہ ! کیا شعر کہا ہے ....

(ग) کتنی افسوس ناک بات ہے ....

(घ) یا خدا! میری دعا قبول کر ....

(च) یا اللہ! کیا مصیبت ہے؟ ....

4. सकारात्मक एवं नकारात्मक रूपों को चिन्हित करें एवं सकारात्मक एवं नकारात्मक रूपों के प्रयोग से वाक्य बनाएँ :

(क) اس نے آج اخبار نہیں پڑھا ....

(ख) حامد بازار سے کتاب لایا ....

(ग) صابر نے تمھیں آواز نہیں دی ....

(घ) ساجدہ اپنے بھائی کے گھر گئی ہے ....

5. आज्ञार्थक / विस्मयादिबोधक वाक्यों को पहचानें :

(क) اس خط کو روانہ کرو ....

(ख) کیا لذیذ کھانا پکایا ہے ....

(ग) اسے باہر جانے دو ....

(घ) فوراً یہ کتاب لاؤ ....

(च) واہ! مزہ آگیا ....

अभ्यास – 2

1. खाली स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क) کتنا اونچا ....

(ख) .... کیا خوب کہا ہے

(ग) .... بولو

(घ) .... روانہ کرو

(च) .... حسین ہے

2. निम्नलिखित शब्दों के प्रयोग से दस वाक्य बनाईए :

واہ   افسوس‌ناک   ممکن ہے   شاید   کتنا

کتنی   کیسی   کیا   اچھا!   یا خدا

3. सकारात्मक एवं नकारात्मक वाक्यों के प्रयोग से दस वाक्य बनाईए :

निम्नलिखित वाक्यों में विस्मयादिबोधक अभिव्यक्तियों को रेखांकित कीजिए :

(क) ہائے اللہ! یہ کمبخت کیا کہہ رہی ہے

(ख) کتنی بے حیا ہے!

(ग) واہ واہ! سن کر مزہ آگیا

(घ) یاخدا! کیسے کیسے حادثے ہو رہے ہیں!

(च) واہ! اس نے کتنی عمدہ بات کہی!

इकाई 2

उर्दू वाक्य की अभिरचना – 2

संरचना :

5.2.0 उद्देश्य

5.2.1 भूमिका

5.2.2 प्रश्नवाचक वाक्य

5.2.2.1 हां / ना प्रश्न

5.2.2.2 सूचनात्मक प्रश्न

5.2.3 विस्मयादिबोधक वाक्य

5.2.3.1 विस्मयादिबोधक

5.2.3.2 संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण का विस्मयबोधात्मक के जैसा प्रयोग

5.2.3.3 کیا और کتنا का प्रयोग

5.2.3.4 आज्ञार्थक वाक्य

5.2.0 उद्देश्य

अगर आप इस इकाई को सावधानी पूर्वक पढेंगे तो आप:

- उर्दू वाक्य विन्यास के बारे में अधिक जानेंगे / सीखेंगे
- जानेंगे कि अनेक प्रकार के प्रश्नवाचक कैसे संरचित होते हैं
- जानेंगे कि कितने प्रकार के विस्मयबोधक वाक्य संरचित होते हैं
- आज्ञार्थक वाक्यों के संरचना एवं कार्यफलन को पहचानेंगे

5.2.1 भूमिका

अब तक आप समझ चुके होंगे कि उर्दू की प्रारंभिक वाक्य संरचना में प्रश्नवाचक, विस्मयादिबोधक तथा आदेशात्मक वाक्य होते हैं।

इस पाठ में हम यह देखेंगे कि कैसे प्रश्नवाचक, विस्मयादिबोधक और आदेशात्मक वाक्य बनते हैं। हम इनके कार्यफलन का अध्ययन करेंगे। जिस प्रश्नवाचक वाक्यों का हम अध्ययन करेंगे वो हाँ/ना एवं सूचनात्मक प्रश्न हैं।

5.2.2 प्रश्नवाचक वाक्य

प्रश्नवाचक वाक्य दो प्रकार के होते हैं : हाँ/ना प्रश्न तथा सूचना प्रदान करने वाले प्रश्नवाचक वाक्य। हाँ/ना वाक्य में वक्ता हाँ/ना में उत्तर की अपेक्षा करता है जबकि सूचना प्रदान करने वाले प्रश्न में वक्ता कुछ सूचना प्राप्त करने की चेष्टा करता है। इन वाक्यों को देखें :

(1) کیا آپ لکھ رہے ہیں؟

क्या आप लिख रहे हैं?

(2) حامد کے پاس کیا ہے؟

हामिद के पास क्या है?

यहां पहला प्रश्न वाक्य हाँ/ना प्रश्न हैं और दूसरा सूचना प्राप्त करने वाला प्रश्नवाचक वाक्य हैं।

5.2.2.1 हाँ/ना प्रश्न

अब आप भली भाँति ये जान चुके हैं कि हाँ/ना प्रश्न में वक्ता केवल हाँ या ना में उत्तर की अपेक्षा करता है। निम्नलिखित हाँ/ना प्रश्नों को देखें :

(1)अ کیا آپ لکھ رہے ہیں؟

क्या आप लिख रहे हैं?

(2)अ کیا آپ مجھے وہ کتاب نہیں دیں گے

क्या आप मुझे वो किताब नहीं देंगे?

(3)अ کیا یہ بس مہرولی جائے گی

क्या यह बस महरौली जाएगी?

(1)अ, (2)अ तथा (3)अ, इन सभी प्रश्नों का उत्तर हाँ/ना में हो सकता है।

इन प्रश्नों के समानांतर वाक्य हैं।

(1)ब آپ لکھ رہے ہیں

आप लिख रहे हैं (नम्र)

(2)ब آپ مجھے وہ کتاب دیں گے

आप मुझे वह किताब देंगे (नम्र)

(3)ब یہ بس مہرولی جائے گی

यह बस महरौली जाएगी

यह देखा जा सकता है कि इन सभी वाक्यों के प्रारंभिक अवस्था में کیا शब्द आता है। यह वाक्य की अंतिम अवस्था में भी निम्नलिखित वाक्यों में हो सकता है। वाक्य (1)स, (2)स तथा (3)स के अर्थ (1)अ, (2)अ तथा (3)अ के क्रमशः हैं :

(1)स آپ لکھ رہے ہیں کیا؟

आप लिख रहे हैं क्या?

(2)स آپ مجھے وہ کتاب دیں گے کیا؟

आप मुझे वो किताब देंगे क्या?

(3)स یہ بس مہرولی جائے گی کیا؟

यह बस महरौली जाएगी क्या?

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि हाँ/ना वाक्य کیا को वाक्य के अन्त में या प्रारंभ में रख कर बनाया जाता है; हाँ/ना प्रश्नवाचक वाक्य को बनाने के लिए उर्दू में कोई और दूसरा तरीका नहीं है।

5.2.2.2 सूचना प्रदानात्मक प्रश्न

अब तक आप ये जान चुके हैं कि सूचना प्रदान करने वाले वाक्य में वक्ता श्रोता से कुछ सूचना प्राप्त करने की चेष्टा करता है।

(1) حامد کو کس نے مارا؟

हामिद को किस ने मारा?

इस वाक्य से सूचना प्राप्त हो सकती है رشید نے । यहां सूचना प्राप्त करने वाला शब्द کس (किस) था। निम्न प्रकार से उर्दू में सभी प्रश्नवाचक

शब्द ک से प्रारंभ होते हैं।

کیا	क्या
کون	कौन
کہاں	कहाँ
کب	कब
کس قدر/کتنا	किस कद्र / कितना
کیوں	क्यों
کیسے	कैसे

इन सब प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग कर्ता, प्रत्यक्ष कर्म, अप्रत्यक्ष कर्म तथा क्रिया विशेषण के समय, स्थान और शिष्टाचार द्योतक क्रिया विशेषण को जानने के लिए प्रयोग किया जा सकता है। प्रत्येक के उदाहरण को देखें।

प्रश्नवाचक के संदर्भ में अगर हमें 'कर्ता' उत्तर मिलता है, तब हम यह कह सकते हैं कि कर्ता के बारे में पूछा जा रहा है।

(2)अ کون آیا ہے؟

कौन आया था?

(3)अ یہ تصویر کس نے بنائی ہے؟

यह तस्वीर किसने बनाई है?

(2) का उत्तर رشید हो सकता है तथा (3) का उत्तर احمد हो सकता है।

(2)ब رشید آیا ہے؟

रशीद आया है?

(3)ब یہ تصویر احمد نے بنائی ہے

यह तसवीर अहमद ने बनाई है?

इन सभी में कर्ता अवस्था के उदाहरण थे। यहां احمد और رشید दोनों प्रारंभिक अवस्था में आने वाले 'कर्ता' हैं। हम यह भी देख रहे हैं कि प्रश्नवाचक शब्द کس نے और کون कर्ता के स्थान पर वाक्य में प्रारंभिक अवस्था में आते हैं।

अब हम प्रश्नवाचक वाक्यों को जरा और ध्यान से देखें। जब कर्म के

बारे में पूछा जाता है तो निम्नलिखित वाक्यों जैसे रूप होते हैं :

(4) رضیہ نے سیب کھایا

रजिया ने सेब खाया।

(5) رضیہ نے کیا کھایا؟

रजिया ने क्या खाया?

(6) احمد نے حامد کو کتاب دی

अहदम ने हामिद को किताब दी।

(7) احمد نے کسے کتاب دی؟

अहमद ने किसे किताब दी?

(8) احمد نے حامد کو کیا دیا؟

अहमद ने हामिद को क्या दिया?

वाक्य (4) और (6) कथन हैं। (4) में سیب कर्म है और जब प्रश्न पूछा जाता है तो यह शब्द वाक्य (5) में लुप्त हो जाता है और इसका स्थान प्रश्नवाचक शब्द ले लेता है।

वाक्य (6) में प्रत्यक्ष कर्म کتاب और अप्रत्यक्ष कर्म حامد हैं। वाक्य (7) में अप्रत्यक्ष कर्म के बारे में जानकारी मांगी गई है तथा इस प्रश्न का उत्तर है کتاب। ध्यान दें कि प्रश्नसूचक शब्द वाक्य में उसी स्थान पर आते हैं जहां मुख्यकर्म हैं।

इसी तरह, जब उत्तर के रूप में कर्तात्मक, स्थानात्मक अथवा रीतिवाचक क्रिया विशेषण हो, तब कहते हैं कि क्रियाविशेषण प्रश्नवाचक का केन्द्र बनता है। निम्नलिखित वाक्यों को देखें :

(9) وہ لوگ کہاں رہتے ہیں؟

वो लोग कहाँ रहते हैं?

(10) رحیم کب آئے گا؟

रहीम कब आएगा?

(11) احمد کیسے دوڑ رہا ہے؟

अहमद कैसे दौड रहा है?

वाक्य (9) में प्रश्नसूचक शब्द–स्थानात्मक क्रियाविशेषण को प्रश्न का केन्द्र

बनाता है। इसका उत्तर हो सकता है।

(12) وہ لوگ دلّی میں رہتے ہیں

वो लोग दिल्ली में रहते हैं।

(10) में کب समय क्रियाविशेषण पूछ रहा है और इसका उत्तर हो सकता है :

(13) وارثی کل آئے گا

वारसी कल आएगा।

(11) में کیسے रीतिवाचक क्रिया विशेषण पूछ रहा/पूछता है। और इसका उत्तर हो सकता है।

(14) احمد تیز دوڑ رہا ہے

अहमद तेज दौड रहा है।

उपर्युक्त सभी सूचना प्राप्त करने वाले प्रश्नों में आप पायेंगे कि प्रश्नसूचक शब्द ठीक उसी स्थान पर पाये जाते हैं/होते हैं जहां संज्ञा विषय होती है, अर्थात अगर हम कर्ता के बारे में पूछते हैं/जानना चाहते हैं तो प्रश्नसूचक शब्द कर्ता के स्थान/स्थिति में होते हैं/पाये जाते हैं। अगर हम प्रत्यक्ष कर्म के बारे में जानना चाहते हैं/पूछते है तो वह अपने ही स्थिति/स्थान में होता है। या अगर हम अप्रत्यक्ष कर्म अथवा स्थान क्रियाविशेषण, समय और रीति के बारे में जानना चाहते हैं/पूछते हैं तो प्रश्नसूचक शब्द अपने अपने वास्तविक संज्ञा के स्थान पर पाये जाते हैं।

5.2.3 विस्मयादिबोधक वाक्य

विस्मयादिबोधक वाक्य उसे कहते हैं जिसका प्राथमिक कार्य वक्ता के प्रबल अनियमित संवेगात्मक स्थिति को व्यक्त करना है। सामान्यतः यह विस्मयादिबोधक अवयव के प्रयोग के द्वारा व्यक्त किया जाता है या संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और दूसरे शब्द जैसे کتنا और کیا इत्यादि शब्दों की सहायता से।

5.2.3.1 विस्मयादिबोधक के प्रयोग

विस्मयादिबोधक ऐसे शब्दों के समूह होते हैं जो अनुभव, श्राप और मनोकामना इत्यादि को व्यक्त करता है। ये शब्द कुछ हद तक विचित्र होते हैं क्योंकि इनके विभक्ति रूप नहीं होते हैं और इन के कोई कोशीय अर्थ भी नहीं

होते हैं। प्रायः ये अनुसरणात्मक होते हैं अर्थात इनके भाव इनकी ही ध्वनि के द्वारा प्रकट किए जाते हैं, जैसा कि निम्नलिखित वाक्य में हैं :

(1)अ واہ! کتنا اچھا کھانا ہے

वाह! कितना अच्छा खाना है।

(2)अ ارے، یہ کہاں سے آیا

अरे, यह कहाँ से आया?

(3)अ اُف! کتنی افسوسناک بات ہے

उफ! कितनी अफसोसनाक बात है?

(4)अ واہ! مزہ آ گیا

वाह! मजा आ गया।

(5)अ چھی! اسے پھینک دو

छिः! इसे फेक दो।

(6)अ ہائے رے! ٹانگ میں درد ہے

हाय रे। टाग में दर्द है।

(7)अ افسوس! بےچارہ مر گیا

अफसोस! बेचारा मर गया।

वाक्य (1)अ में واہ प्रशंसा का भाव बोधक है। (2)अ में ارے आश्चर्य का, (3)अ में اُف दुख का भाव बोधक, (4)अ में واہ आनन्द/सुखद व्यक्त करते हैं, (5)अ में چھی घृणा को व्यक्त करता है। (6)अ में ہائے رے दर्द व्यक्त करता है और (7)अ में افسوس गहरा/तीव्र दुख इत्यादि व्यक्त करता है। ये अभिव्यक्तियाँ विस्मयादिबोधक कहलाती हैं। कथन में उपर्युक्त वाक्य बिना विस्मयादिबोधक के भी विस्मयाबोधक के जैसा कार्य कर सकता है। लेकिन तब इन्हें बल के साथ उच्चारण करना पडता है। इस प्रकार

(1)ब کتنا اچھا کھانا ہے!

कितना अच्छा खाना है!

(2)ब یہ کہاں سے آیا

यह कहाँ से आया?

(3)ब کتنی افسوسناک بات ہے!

कितनी अफसोसनाक बात है?

(4)ब مزہ آ گیا

मजा आ गया!

5.2.3.2 विस्मयादिबोधक के लिए संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया का प्रयोग

कभी–कभी विस्मयादिबोधक का बोध व्यक्त करने के लिए संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया का भी प्रयोग किया जा सकता है।

(1) یا خدا! یہ کیا ہو گیا

या खुदा! यह क्या हो गया?

(2) اچھا! اس نے یہ کہا

अच्छा! उसने यह कहा?

(3) کیا! وہ پھر آ گیا

क्या! वो फिर आ गया?

(4) چل ہٹ! یہاں پھر کبھی مت آنا

चल हट! यहां फिर कभी मत आना।

(1) में یا خدا! संज्ञा के साथ अभिव्यक्ति, प्रार्थना व्यक्त करता है, (2) में विशेषण اچھا! आश्चर्य व्यक्त करता है, (3) में کیا सर्वनाम भी आश्चर्य का सूचक–बोधक है और (4) में چل ہٹ क्रिया का रूप डाँट/फटकार व्यक्त करता है।

5.2.3.3 کیا और کتنا का प्रयोग

कभी–कभी विस्मयादिबोधक बनाने के लिए کیا और کتنا जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है। निम्नलिखित वाक्य देखें :

(1) یہ لڑکی کتنی حسین ہے!

ये लडकी कितनी हसीन है!

(2) کتنی اچھی طرح گانا گایا اس نے!

कितनी अच्छी तरह गाना गाया उसने!

(1) में کتنی विशेषण के पहले रखा गया है और यह बहुत का सूचक है। (2) में کتنی اچھی طرح शब्द گانا संज्ञा के पहले रखा गया है और यह

प्रशंसा का सूचक है/बोधक है। पहले वाक्य में गुण की प्रशंसा की गई है और दूसरे वाक्य में कर्म की प्रशंसा की गई है।

5.2.4 आज्ञार्थक वाक्य

मुख्यतः आज्ञार्थक वाक्य का प्रयोग समादेश या विनिमय को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। चूँकि समादेश और विनिमय का प्रयोग केवल श्रोता के लिए किया जाता है इसलिए सभी आज्ञार्थात्मक वाक्यों में मध्यम पुरुष सर्वनाम कर्ता के रूप में होता है। सांकेतिक रूप में ये प्रायः कर्ता के स्थान पर प्रयोग नहीं किया जाता है लेकिन इसी तरह समझ लिया जाता है।

उर्दू में तीन آپ، تم، تو मध्यम पुरुष के अनुरूप तीन आज्ञार्थक वाक्य हैं उदाहरणतः

(1) کتاب پڑھ

किताब पढ़।

(2) کتاب پڑھو

किताब पढो।

(3) کتاب پڑھیے

किताब पढ़िये।

(4) آپ یہ کتاب ضرور پڑھیے گا

आप यह किताब जरूर पढ़ियेगा।

वाक्य (1) में تو कर्ता है और क्रिया केवल धातु है और यह वाक्य निम्न वर्ग के लोग या कम आयु वालों के साथ आदान–प्रदान/बातचीत करने में प्रयोग किया जाता है। वाक्य (2) में تم कर्ता है और क्रिया मध्यम पुरुष एकवचन और बहुवचन के लिए विभक्त किया गया है और यह वाक्य सामान पद या परिचारिता व्यक्त करता है। वाक्य (3) में آپ छुपा हुआ सर्वनाम कर्ता है और क्रिया रूप आदशंथक मध्य पुरुष से अन्वित है और पूरा वाक्य नम्रता या विनति को व्यक्त करता है। उपर्युक्त कथन से यह भी स्पष्ट होता है कि आज्ञार्थक वाक्य में सर्वनाम कर्ता के रूप में प्रयोग नहीं किया जाता। वाक्य (4) अवधारक आज्ञार्थक रूप को व्यक्त करता है। यहाँ क्रिया में گا को जोड़ा जाता है और यह वाक्य को अवधारक और नम्र बनाता है।

अभ्यास – 1

1. उपर्युक्त प्रश्न सूचक शब्दों से वाक्यों को पूर्ण करें :

(क) آپ .... سے اردو لکھنے کی مشق کر رہے ہیں؟

(ख) تمہارے گھر سے اسکول ....ہے؟

(ग) آپ کے والد .... کارخانے میں کام کرتے ہیں؟

(घ) تمہارے شہر میں .... کتاب‌خانے ہیں

(च) آپ.................... کو خط لکھ رہے ہیں

2. کتنی ، کیا ، کس قدر ، واہ‌واہ! का प्रयोग करके निम्नलिखित वाक्यों को पूर्ण करें :

(क) ....منظر ہے

(ख) .... وہ پھر یہاں آئے گا

(ग) .... مزہ آگیا

(घ) .... عمدہ غذا تھی

(च) .... حسین لڑکی ہے

3. निम्नलिखित शब्दों / अभिव्यक्ति को प्रयोग कर वाक्य बनाएँ :

کیا ہائے واہ واہ ! واقعی کتنی کیسی کیسی

4. निम्नलिखित मे वाक्यों के प्रकार को पहचाने :

(क) ہائے وہ بھی کیا زمانہ تھا؟ ....

(ख) اسے یہاں سے بھگا دو ....

(ग) واہ واہ ! کیا عمدہ غزل ہے ....

(घ) افسوس! اسے یہ بات نہیں کہنی چاہیے تھی ....

(च) اُسے یہ کام کرنے کو کس نے کہا تھا؟ ....

अभ्यास – 2

1. निम्नलिखित विस्मयादिबोधक सूचक से वाक्य बनाएँ :

واہ واہ !، حقیقت میں!، واقعی، یا خدا!، اللہ بچائے

خدا کی پناہ، کیسے کیسے، کس قدر، کتنے، کون کون

2. निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति करें :

(क) اس کتاب میں .... اچھی معلومات ہیں!

(ख) اس دنیا میں بھی .... مخلوق ہے!

(ग) وہ .... بڑا عالم ہے!

(घ) آئندہ ادھر .... آنا

(च) .... اسے باہر جانے دو

3 प्रश्नसूचक शब्दों का प्रयोग करके निम्नलिखित वाक्यों को प्रश्न सूचक बनाएँ :

(क) آپ وہاں آ رہے ہیں

(ख) وہ ان کے جلسے میں شریک ہونے جا رہا ہے

(ग) وہ بہت خوبصورت تصویر بناتا ہے

(घ) وہ یہاں پہنچ گیا

(च) اس نے بازار سے اردو کی بہت سی کتابیں خرید لیں

....

इकाई 3

संयुक्त वाक्य

संरचना :

5.3.0 उद्देश्य
5.3.1 भूमिका
5.3.2 असंयुक्त वाक्य / सरल वाक्य
5.3.3 संयुक्त वाक्य
5.3.4 सामान्य क्रिया के साथ संयुक्तिकरण
5.3.5 समपदस्थता सूचक समुच्चयबोधक
5.3.5.1 समुच्चयबोधक
5.3.5.2 वियोजन
5.3.5.3 ऋणात्मक वियोजन
5.3.5.4 विरोधवाची समुच्चयबोधक
5.3.5.5 आशय समुच्चयबोधक
5.3.6 संयुक्त वाक्य के बारे में सामान्यीकरण

5.3.0 उद्देश्य

यदि आप इस इकाई को पढ़ेंगे तो आप इन बातों को समझने के योग्य हो जायेंगे

- सामान्य और संयुक्त वाक्य मे अन्तर
- संयुक्त वाक्य की पहचान
- संयुक्त वाक्य को बनाने के विभिन्न तरीके

5.3.1 भूमिका

उर्दू के वाक्य साधारण, संयुक्त या सम्मिश्रित हो सकते हैं। साधारण वाक्य में एक उपवाक्य होता है। उपवाक्य या साधारण वाक्य उसे कहते हैं जिसमें केवल एक कर्ता और क्रिया होती है। यदि क्रिया सकर्मक है तो साधारण वाक्य में भी एक कर्म हो सकता है। संयुक्त वाक्य उसे कहते हैं जो एक से अधिक (जोडकर) बना होता है। संयोजन की पद्धति को समपदीकरण कहा जाता है। इस खंड की अगली इकाई में आप संयुक्त वाक्य के बारे में पढ़ेंगे/जानेंगे।

5.3.2 साधारण वाक्य

साधारण वाक्य उसे कहते हैं जो एक उपवाक्य का बना होता है। इसका अर्थ यह है कि साधारण वाक्य की संरचना में एक कर्ता और संयुक्त क्रिया में एक क्रिया होती है और अगर क्रिया सकर्मक है तो उसमें एक कर्म भी होता है।

उदाहरणत:

(1) لڑکا سیب کھاتا ہے

लडका सेब खाता है।

यहां لڑکا (लडका) कर्ता, سیب (सेब) कर्म और کھاتا ہے (खाता है) क्रिया है। पूरी संरचना साधारण वाक्य के साथ साथ एक स्वतंत्र उपवाक्य भी है।

5.3.3 संयुक्त वाक्य

एक संयुक्त वाक्य में कम से कम दो मुख्य उपवाक्य होते हैं। उदाहरणत:

(1) رشید بھوکا تھا اور کھانا کم تھا

रशीद भूखा था और खाना कम था।

यहाँ एकल वाक्य में दो खंड हैं।

(क) رشید بھوکا تھا

रशीद भूखा था।

(ख) کھانا کم تھا

खाना कम था।

दो स्वतंत्र उपवाक्य को समुच्चयबोधक اور (और) के द्वारा जोडा जाता है जो इसे एक वाक्य का रूप (1) देता है। इस प्रकार के वाक्य को संयुक्त

वाक्य कहा जाता है। इसी प्रकार संयुक्त वाक्य में दो से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य हो सकते हैं :

(2) وہ اسکول گیا اور وہاں اس نے بچوں کو دیکھا

वह स्कूल में गया और वहां उसने बच्चों को देखा।

لیکن وہاں کسی سے بات نہیں کی

लेकिन वहां किसी से बात नहीं की।

यहां तीन स्वतंत्र उपवाक्य हैं।

(क) وہ اسکول گیا

वह स्कूल गया।

(ख) اس نے بچوں کو دیکھا

उसने बच्चों को देखा।

(ग) (اس نے) وہاں کسی سے بات نہیں کی

वहां (उसने) किसी से बात नहीं की।

(2) में प्रथम दो उपवाक्य को اور(और) के द्वारा जोड़ा गया है। द्वितीय उपवाक्य لیکن (लेकिन) के द्वारा जोड़ा गया है। हालांकि ये तीनों उपवाक्य स्वतंत्र हैं, लेकिन इन के बीच परस्पर सम्बंध वाक्य को संयुक्त वाक्य बना देता है।

5.3.4 सम्मिश्रण जब सामान्य क्रिया हो

कभी-कभी दो स्वतंत्र उपवाक्य इस प्रकार सम्मिश्रित हो जाते हैं कि वह वाक्य संयुक्त वाक्य नहीं लगता है।

(1) حامد اور رشید صبح کو کھانا کھاتے ہیں

हामिद और रशीद सुबह को खाना खाते हैं।

(2) وہ آج آئے گا یا کل

वह आज आएगा या कल।

वास्तव में वाक्य (1) है :

(1)क حامد صبح کو کھانا کھاتا ہے

हामिद सुबह को खाना खाता है।

(1)ख رشید صبح کو کھانا کھاتا ہے

रशीद सुबह को खाना खाता है।

दोनों वाक्यों/उपवाक्यों में उभयनिष्ट क्रिया کھاتے ہیں (खाते हैं), क्रिया विशेषण صبح کو (सुबह को) और कर्म کھانا (खाना) है जो संयुक्त वाक्य में नहीं है और ऐसा प्रतीत होता है कि कर्ता समुच्चयबोधक اور के द्वारा जोडा गया है।

वाक्य (2) में वास्तिविक वाक्य हैं :

(2)क وہ آج آئے گا

वह आज आयेगा।

(2)ख وہ کل آئے گا

वह कल आयेगा।

फिर यहां क्रिया آئے گا (आयेगा) और सर्वनाम وہ (वह) उभयनिष्ट है और ये दोबारा नहीं प्रयोग किये गए है। آج (आज) और کل (कल) में केवल एक ही सम्भव है ताकि वियोजन समुच्चयबोधक یا का प्रयोग हो सके :

(2)ग وہ آج آئے گا یا وہ کل آئے گا

वह आज आयेगा या वह कल।

पुनरावृत्ति के कारण द्वितीय उपवाक्य में وہ (वह) को हटा दिया गया है :

(2)घ وہ آج آئے گا یا کل آئے گا

वह आज आयेगा या कल आयेगा।

آئے گا (आयेगा) क्रिया द्वितीय उपवाक्य में पुनरावृत्ति के कारण हटा दिया गया है :

(2) وہ آج آئے گا یا کل

वह आज आयेगा या कल।

यह वाक्य फिर से (2)ग की तरह लिखा जा सकता है :

(2)ग وہ آج یا کل آئے گا

वह आज या कल आयेगा।

यहां क्रिया को अन्त में स्थानान्तरित कर दिया गया है और यह क्रिया विशेषण آج (आज) और کل (कल) दोनों के लिए कार्य करती है। इसी

प्रकार वाक्य (3) और (4) के लिए भी व्याख्या की जा सकती है।

(3) رام یا شیام جائے گا
राम या श्याम जायेगा।

(4) احمد چائے یا کافی پیے گا
अहमद चाय या कॉफ़ी पियेगा।

5.3.5 समपदस्थ समुच्चयबोधक

दो वाक्यों या स्वतंत्र उपवाक्यों के बीच अर्थ सम्बन्ध समुच्चयबोधक के प्रयोग को निर्धारित करता है। निम्नलिखित प्रकार से समपदस्थ समुच्चयबोधक उप–वर्गीकृत किया जा सकता है।

(क)	समुच्चयबोधक	اور	نہ صرف	न सिर्फ
		और	بلکہ	बल्कि
			ساتھ ہی	साथ ही
(ख)	वियोजन :	یا	یا تو	या तो
		या	یا	या
(ग)	ऋणात्मक	......نہ تو......نہ	न तो ...... न	
	वियोजन	ورنہ، نہیں تو	वरना, नहीं तो	
(घ)	विरोधीवाची	مگر، لیکن، پھر	پھر بھی	تاہم، باوجود، تو بھی
	समुच्चयबोधक	लेकिन	फिर भी	ताहम, बावजूद, तो भी
(च)	कारण	اس لیے	کیونکہ	
		इसलिए	क्योंकि	

नीचे के उपसर्ग में कुछ ऐसे संयुक्त वाक्यों के उदाहरण दिए गए हैं जहां पर उपर्युक्त समुच्चयबोधक प्रयोग किये जाते हैं।

5.3.5.1 समुच्चयबोधक

वाक्य (1), (2) और (3) स्वतंत्र उपवाक्यों को (1) में सामान्य संचय के भाव के प्रयोग से (2) में कुछ अतिरिक्त से, और (3) में 'साथ ही' का प्रयोग कर

जोड़ा गया है :

(1) احمد نے روٹی کھائی اور رشید نے شربت پیا

अहमद ने रोटी खाई और रशीद ने शर्बत पिया।

(2) میں نے اسے نہ صرف کتابیں دیں بلکہ پیسے بھی دیے

मैंने उसे न सिर्फ़ किताबें दी बल्कि पैसे भी दिए।

(3) احمد نے رشید کو ایک گیند دی ساتھ ہی ایک بلا بھی دیا

अहमद ने रशीद को एक गेंद दी साथ ही एक बल्ला भी दिया।

5.5.3.2 वियोजन

वियोजन वहां विकल्प व्यक्त करता है जहां कार्य करने वाला केवल एक होता है, उदाहरण

(1) میں ڈرامہ یا فلم دیکھنے جاؤں گا

मैं ड्रामा या फिल्म देखने जाऊँगा।

(2) یا تو وہ جائے گا یا میں

या तो वह जाएगा या मैं।

(1) में یا (या) ड्रामा या फिल्म जाने के बीच विकल्प का भावबोधक है। (2) में, फिर यह विकल्प के भावबोधक है लेकिन या---- या के प्रयोग से

5.3.5.3 ऋणात्मक वियोजन

वियोजन से ऋणात्मक रूप भी व्यक्त किया जा सकता है।

(1) نہ رشید جائے گا نہ حامد

न रशीद जायेगा न हामिद।

(2) اچھی طرح پڑھو ورنہ تو تم پاس نہیں ہوگے

अच्छी तरह पढो वर्ना तुम पास नहीं होगे।

(1) में न........न प्रयोग में लाया गया है और (2) में 'नहीं तो' ।

5.3.5.4 विरोधवाची समुच्चयबोधक

विरोधवाची समुच्चयबोधक स्वतंत्र उपवाक्य को जोड़ता है लेकिन एक दूसरे के विरोध में, उदाहरण :

(1) وہ دیکھنے میں سیدھا ہے مگر چالاک ہے

वो देखने में सीधा है लेकिन चालाक है।

(2) احمد غریب ہے پھر بھی خوش ہے

अहमद ग़रीब है फिर भी ख़ुश है।

(3) اس نے بہت پڑھائی کی تو بھی اچھے نمبر نہیں آئے

उसने बहुत पढ़ाई की तो भी अच्छे नम्बर नहीं आये।

(1) में لیکن (लेकिन) और پر (पर) के बदले مگر (मगर) का प्रयोग किया गया है। (2) में پھر بھی (फिर भी) और (3) में 'तो भी' (यद्यपि) का इस्तेमाल किया गया है।

5.3.5.5 आशय समुच्चयबोधक

आशय समुच्चयबोधक दो स्वतंत्र उपवाक्यों के बीच सम्बन्ध दिखाता है जहां एक निश्चयार्थक कथन और दूसरा आशय को प्रकट करता है। उदाहरण :

(1) اس نے محنت نہیں کی اس لیے وہ فیل ہو گیا

उसने मेहनत नहीं की इसलिए वह फेल हो गया।

(2) کتاب بہت بکی کیونکہ اس کی چھپائی اچھی تھی

किताब बहुत बिकी क्योंकि उसकी छपाई बहुत अच्छी थी।

5.3.6 संयुक्त वाक्य से सम्बंधित सामान्यीकरण

परिचर्चा के आधार पर संयुक्त वाक्य के बारे में तीन सामान्यीकरणों पर ध्यान देने की ज़रूरत है।

(1) दो स्वतंत्र उपवाक्य बिना किसी परिवर्तन के सामान्य रूप से संयुक्त कर दिए जाते हैं/जोड़ दिए जाते हैं। यह निम्नलिखित उदाहरण में देखा जा सकता है :

(1) بارش ہو رہی تھی بجلی چمک رہی تھی

बारिश हो रही थी बिजली चमक रही थी।

(2) بارش ہو رہی تھی اور بجلی چمک رہی تھی
बारिश हो रही थी और बिजली चमक रही थी।

(2) जब दो स्वतंत्र उपवाक्य जोड़े जाते हैं तो दूसरे उपवाक्य मे उभयनिष्ट क्रिया हट जाती है।

(2)क احمد سو رہا تھا ساجد سو رہا تھا
अहमद सो रहा था साजिद सो रहा था।

(2)ख احمد سو رہا تھا اور ساجد بھی
अहमद सो रहा था और साजिद।

(3) जब दो स्वतंत्र उपवाक्य जोड़े जाते हैं तो कर्ता या कर्म (या दोनों) जुड जाते हैं/संयुक्त हो जाते हैं और एकल क्रिया विशेषक के साथ प्रयोग किया जाता है :

(3)क سونا مہنگا ہے چاندی مہنگی ہے
सोना महंगा है, चाँदी महगी है।

(3)ख سونا اور چاندی مہنگے ہیں
सोना और चाँदी महंगे हैं।

(4)क آپ کا گھر بڑا ہے
आपका घर बड़ा है।

آپ کا گھر خوبصورت ہے
आपका घर ख़ूबसूरत है।

(4)ख آپ کا گھر بڑا اور خوبصورت ہے
आपका घर बड़ा और ख़ूबसूरत है।

वाक्य (3)ख उभयनिष्ट क्रिया के साथ संयुक्त कर्ता को दर्शाता है। (4)ख उभयनिष्ट कर्ता, उभयनिष्ट कर्म और उभयनिष्ट क्रिया के साथ संयुक्त विशेषक को दर्शाता है।

अभ्यास – 1

1. निम्नलिखित में से संयुक्त वाक्य की ✓या ✗ बॉक्स में रख कर पहचान करें :

	کھانا کھا کر لڑکا چلا گیا	(क)
	لڑکا اسکول سے آیا اور کھیلنے چلا گیا	(ख)
	احمد اور حامد نے آم کھائے	(ग)
	یہ پین بہت خوبصورت اور سستا ہے	(घ)
	جو لڑکا آ رہا ہے اُسے پانی پلاؤ	(च)

2. रिक्त स्थानों की उपयुक्त समुच्चयबोधक से पूर्ति करें :

(क) صرف احمد .... حامد بازار جائے گا

(ख) ساجد .... اس کا بھائی اسکول جائیں گے

(ग) میں نے سمجھانے کی کوشش کی............... وہ نہیں مانا

(घ) ان میں سے...........ایک کتاب لوں گا........... دو

(च) اس نے مدد کی ....پیسہ بھی دیا

(छ) میرے پیر میں درد ہے .... میں چل پڑتا

(ज) تم اردو اچھی جانتے ہو .... کتاب بھی لکھ ڈالو

3. निम्नलिखित समुच्चयबोधक को प्रयोग कर संयुक्त वाक्य बनाएँ :

کیونکہ......اس لیے، نہ صرف.......... بلکہ، ساتھ ہی، یا، یا

(क) وہ ....یہاں آیا .... سب کو تحفے بھی دیے

(ख) اس نے ابّا کے نام پیغام دیا ...... چچا کے آنے کا پروگرام بھی بتایا

(ग) .... سبق حفظ نہیں کیا تھا ....وہ کلاس میں نہیں آیا

(घ) تم کھانا کھاؤ گے .... چائے پیو گے

(च) آپ ہمارے ساتھ باہر چل رہے ہیں...............کسی اور کو لے جائیں

अभ्यास – 2

1. समुच्चयबोधक वाले कथन/वर्णन से वाक्यों की पूर्ति करें :

(क) نہ نو من تیل ہوگا ....

(ख) نہ کھلونے ہوں گے..............................

(ग) اس کے ساتھ سختی سے پیش آؤ..............................

(घ) وہ لگتا ہی سیدھا ہے ....

(च) اس کا قد بھلے ہی چھوٹا ہے ....

(छ) وہ آیا نہیں ....

(ज) آسمان میں تارے چمک رہے تھے ....

2. समुच्चयबोधक/वियोजन के प्रयोग से पन्द्रह वाक्य बनाएँ :

3. निम्नलिखित वाक्यों में कथन/वर्णन के प्रकार को पहचानें और उसे लिखें :

(क) وہ نہ صرف پڑھا لکھا ہے بلکہ عالم بھی ہے

(ख) شاہد نے کھانا کھایا اور بچوں نے دودھ پیا

(ग) تم بمبئی جاؤ گے یا آگرہ

(घ) کیونکہ اس نے مجھ سے ملنے کا وعدہ کیا تھا اس لیے میں یہاں آیا

(च) امتحان کی تیاری اچھی طرح کرو ورنہ فرسٹ کلاس نہیں آئے گی

....

इकाई 4

सम्मिश्र वाक्य

संरचना :

5.4.0 उद्देश्य

5.4.1 भूमिका

5.4.2 सम्मिश्र वाक्य

5.4.3 संबंधवाचक उपवाक्य

5.4.4 पूरक वाक्य

5.4.5 ✓ संरचना

5.4.0 उद्देश्य

यदि आप सावधानी पूर्वक इस इकाई को पढेंगे तो

- उर्दू के सम्मिश्र वाक्य की संरचना को जानेंगे/समझेंगे
- संबंधवाचक उपवाक्य के रूप को पहचानेंगे
- पूरक उपवाक्य की सरंचना को जानेंगे/समझेंगे
- ✓ संरचना के रूप को जान जाएँगे/सीखेंगे

5.4.1 भूमिका

सम्मिश्र वाक्य उस वाक्य को कहते हैं जिसमें एक मुख्य उपवाक्य और एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं। मुख्यतः उपवाक्य उसे कहते हैं जो अपने आपमें परिपूर्ण होता है, जबकि आश्रित वाक्य अपने आप में अपरिपूर्ण होता है तथा यह मुख्य उपवाक्य पर आश्रित होता है।

(1) احمد نے کہا کہ وہ اب کتاب پڑھے گا

अहमद ने कहा कि वो अब किताब पढ़ेगा।

यहां कथन کہ وہ اب کتاب پڑھے گا अपने आप में पूर्ण नहीं है। इस प्रकार यह एक आश्रित उपवाक्य है जिसे पूर्ण होने के लिए मुख्य उपवाक्य احمد نے کہا की आवश्यकता है। यह वाक्य जिसमें एक मुख्य उपवाक्य और एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं, ऐसे सम्मिश्र वाक्य की रचना को हम आगे पढने जा रहे हैं।

5.4.2 सम्मिश्र वाक्य

अब आप यह जानते हैं कि सम्मिश्र वाक्य उसे कहते हैं जिसमें एक मुख्य वाक्य तथा एक या एक से अधिक आश्रित वाक्य होते हैं। निम्नलिखित उदाहरण देखें :

(1) جو لڑکا محنت کرتا ہے وہ ضرور کامیاب ہوتا ہے

जो लड़का मेहनत करता है वो जरूर कामयाब होता है।

(2) احمد نے حامد سے کہا کہ وہ کار ضرور خرید لے گا

अहमद ने हामिद से कहा कि वो जरूर कार खरीद लेगा।

वाक्य (1) में कथन جو لڑکا محنت کرتا ہے (जो लड़का मेहनत करता है) अपने आप में एक पूरा वाक्य नहीं है। और इस प्रकार यह आश्रित उपवाक्य है। यह संबंधवाचक उपवाक्य कहलाता है। इसे पूर्ण होने के लिए मुख्य उपवाक्य وہ ضرور کامیاب ہوتا ہے (वह जरूर कामयाब होता है) पर आश्रित होना पड़ता है। सामान्य तौर आश्रित उपवाक्य को पूरक सर्वनाम जैसे جو، جس، جن، के प्रयोजन द्वारा जाना जाता है।

वाक्य (2) में उपवाक्य کہ وہ کار ضرور خرید لے گا (कि वह कार जरूर खरीद लेगा) भी आश्रित वाक्य है क्योंकि यह अपने आप में एक पूर्ण वाक्य नहीं है। इसे पूर्ण वाक्य होने के लिए मुख्य उपवाक्य احمد نے حامد سے کہا की आवश्यकता है। इस प्रकार पूरक उपवाक्य वह आश्रित उपवाक्य होता है जो मुख्य उपवाक्य में एक कर्ता या क्रिया के कर्म के रूप में कार्य करता है। (2) में यह पूरक कर्म का कार्य कर रहा है।

5.4.3 संबंधवाचक उपवाक्य

संबंधवाचक उपवाक्य आश्रित उपवाक्य होता है, जो संज्ञा या सर्वनाम पर आश्रित/निर्भर होता है, और सामान्यतः सर्वनाम से जाना जाता है। सबसे पहले हम उर्दू के संबंधावाचक उपवाक्य को समझेंगे/देखेंगे।

निम्नलिखित संबंधवाचक उपवाक्य के साथ वाले वाक्य को पढ़ें :

(1) جو لڑکی اچھا گائے گی اس کو انعام ملے گا

जो लड़की अच्छा गायेगी उसको इनाम मिलेगा।

(2) جس کرسی پر آپ بیٹھے ہیں اس کی ایک ٹانگ ٹوٹی ہوئی ہے

जिस कुर्सी पर आप बैठे हैं उसकी एक टॉग टूटी हुई है।

वाक्य (1) और (2) को इस प्रकार पढ़े/समझे जा सकते हैं :

اُس لڑکی کو (وہ لڑکی اچھا گائے گی) انعام ملے گا

उस लडकी को (वो लडकी अच्छा गायेगी) इनाम मिलेगा।

اس کرسی کی (جس کرسی پر آپ بیٹھے ہیں)ایک ٹانگ ٹوٹی ہوئی ہے

उस कुर्सी की (जिस कुर्सी पर आप बैठे हैं) एक टॉग टूटी हुई है।

यह देखा जा सकता है कि दो असयुक्त (सरल) वाक्य में उभयनिष्ट संज्ञा पदबंध होने के कारण 'अन्तरस्थ' स्वतंत्र उपवाक्य संबंधवाचक उपवाक्य बना लेता है।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि उर्दू में संबधवाचक सर्वनाम ج से प्रारंभ होता है।

جو، جس نے	जो, जिसने	جب	जब
جس کو	जिसको	جدھر، جس طرف	जिधर, जिस तरफ
جہاں	जहां	جس جگہ	जिस जगह

दूसरी बात जो ध्यान देने योग्य है वह यह है कि उर्दू वाक्य में संबंधवाचक उपवाक्य का स्थान। नीचे लिखे वाक्यों को पढ़ें :

(3) جو آدمی قابل ہے صرف وہی ترقی کر سکتا ہے

जो आदमी काबिल है सिर्फ वही तरक्की कर सकता है।

(4) صرف وہ آدمی ہی جو قابل ہے ترقی کر سکتا ہے

(5) وہ آدمی ہی صرف ترقی کر سکتا ہے جو قابل ہے

वो आदमी ही तरक्की कर सकता है जो काबिल है।

उदाहरण (3), (4) और (5) से हम यह कह सकते हैं कि उर्दू वाक्य में संबंधवाचक उपवाक्य होता है:

(क) जैसा कि (3) में (रेखांकित), मुख्य या प्रधान संज्ञा पदबंध के दाहिने में

(ख) जैसा कि (4) में, संज्ञा पदबंध के बायें में

(ग) जैसा कि (5) में, संज्ञा पदबंध से दूर

5.4.4 पूर्ण उपवाक्य

पूर्ण उपवाक्य उस आश्रित उपवाक्य को कहते हैं जो या तो कर्ता या क्रम के जैसा कार्य करता है। अब हम उर्दू के पूर्ण उपवाक्य को देखेंगे/पढेंगे। पूर्णकारी वह शब्द है जो मुख्य उपवाक्य को आश्रित उपवाक्य से जोडता है :

(1) احمد نے رشید سے کہا کہ وہ آج دیر سے آئے گا

अहमद ने रशीद से कहा कि वो आज देर से आयेगा।

(2) ہم نے سنا تھا کہ کل سے جلسہ شروع ہوگا

हमने सुना था कि कल से जलसा शुरू होगा।

(3) اس نے سوچا تھا کہ اس کی بہن یہ کام کر لے گی

उसने सोचा था कि उसकी बहन ये काम करेगी।

(1), (2) और (3) में पायेंगे कि:

(क) मुख्य उपवाक्य और आश्रित उपवाक्य पूर्णकारी کہ (कि) के द्वारा जोडा गया है/जोडे गए हैं। और यह पूर्णकारी आश्रित उपवाक्य के पहले है। और

(ख) आश्रित वाक्य मुख्य उपवाक्य के बाद आता है।

दूसरी बात जो उपर्युक्त वाक्यों में ध्यान देने योग्य है वह यह है कि मुख्य उपवाक्य की क्रिया वर्तमान काल में है जबकि आश्रित उपवाक्य की क्रिया भविष्यकाल में है। वस्तुतः हम सामान्यीकरण कर सकते हैं कि मुख्य उपवाक्य और आश्रित उपवाक्य की क्रिया के काल समान/एक होने की आवश्यकता नहीं है।

5.4.5 کر संरचना

निम्नलिखित वाक्यों को देखें :

(1) لڑکا گھر گیا اُس نے کھانا کھایا

लड़का घर गया उसने खाना खाया।

اُس نے کپڑے بدلے اور دفتر گیا

उसने कपडे बदले और दफ्तर गया।

(2) لڑکے گھر گئے انھوں نے کھانا کھایا

लड़के घर गये उन्होंने खाना खाया।

انھوں نے کپڑے بدلے اور دفتر گئے

उन्होंने कपडे बदले और दफ्तर गए।

(3) لڑکی گھر گئی اُس نے کھانا کھایا

लडकी घर गई उसने खाना खाया।

اُس نے کپڑے بدلے اور دفتر گئی

उसने कपडे बदले और दफ्तर गई।

(4) لڑکیاں گھر گئیں انھوں نے کھانا کھایا

लडकियाँ घर गई उन्होने खाना खाया।

انھوں نے کپڑے بدلے اور دفتر گئیں

उन्होंने कपडे बदले और दफ्तर गई।

(1) से (4) तक के वाक्य उर्दू में होते हैं। फिर भी ये सभी वाक्य/उपवाक्य निम्नलिखित वाक्य में बदले जा सकते हैं।

(1)क لڑکا گھر آ کر کھانا کھا کر

کپڑے بدل کر دفتر گیا

लडका घर आकर, खाना खाकर, कपडे बदल कर, दफ्तर गया।

(2)क لڑکے گھر آ کر کھانا کھا کر

کپڑے بدل کر دفتر گئے

लडके घर आकर, खाना खाकर, कपडे बदलकर दफ्तर गए।

(3)क لڑکی گھر آ کر کھانا کھا کر
کپڑے بدل کر دفتر گئی

लड़की घर आकर, खाना खाकर, कपड़े बदल कर दफ्तर गई।

(4)क لڑکیاں گھر آ کر کھانا کھا کر
کپڑے بدل کر دفتر گئیں

लडकियां घर आकर, खाना खाकर, कपड़े बदलकर, दफ्तर गई।

ध्यान दें कि वाक्य (1) में चार वाक्य हैं। हम वाक्य या उपवाक्य तब कहते हैं जब उसमें एक विधेय/समापिका क्रिया होती है। (हम पहले बता चुके हैं कि एक विधेय/समापिका क्रिया वह क्रिया रूप होता है जो कर्ता के वचन और लिंग के अनुकूल/समान होता है) पहले हम यह भी चर्चा कर चुके हैं कि نے रचना में भिन्न प्रकार से व्यवहार किया जाता है। (5) से (8) तक के वाक्य मे प्रत्येक एक वाक्य है क्योंकि उनमें केवल एक ही समापिका क्रिया है, जैसे :

دفتر گئیں، دفتر گئے، دفتر گیا، دفتر گئی

जबकि दूसरे समापिका उपवाक्य को धातु +کر संरचना मे बदल दिया गया है। यह भी ध्यान दें कि धातु +کر लिंग और कारक के साथ नही बदलते हैं। यह उर्दू में प्रायः पाया जाता है। अन्तिम उपवाक्य के पहले वाला वाक्य वर्तमान, भूत या भविष्य काल में हो सकता है। निम्नलिखित वाक्यों की तुलना करें:

(5) لڑکا گھر آتا ہے وہ کھانا کھاتا ہے

लड़का घर आता है, खाना खाता है।

وہ کپڑے بدلتا ہے اور دفتر جاتا ہے

वह कपडे बदलता है और दफ्तर जाता है।

(5)क لڑکا گھر آ کر کھانا کھا کر کپڑے بدل کر دفتر جاتا ہے

लड़का घर आकर, कपड़े बदलकर, दफ्तर जाता है।

(6) لڑکی گھر آتی ہے وہ کھانا کھاتی ہے

लडकी घर आती है, वह खाना खाती है।

وہ کپڑے بدلتی ہے اور دفتر جاتی ہے

वह कपडे बदलती है और दफ्तर जाती है।

(6)क لڑکی گھر آ کر کھانا کھا کر کپڑے بدل کر دفتر جاتی ہے

लड़की घर आकर, कपड़े बदल कर, दफ्तर जाती है।

(7) لڑکے گھر آتے ہیں وہ کھانا کھاتے ہیں

लड़के घर आते हैं, वो खाना खाना खाते हैं।

وہ کپڑے بدلتے ہیں اور دفتر جاتے ہیں

वो कपड़े बदलते हैं और दफ्तर जाते हैं।

(7)क لڑکے گھر آ کر کھانا کھا کر کپڑے بدل کر دفتر جاتے ہیں

लड़के घर आकर, खाना खाकर, कपड़े बदल कर, दफ्तर जाते हैं।

(8) لڑکیاں گھر آتی ہیں وہ کھانا کھاتی ہیں

लड़कियां घर आती हैं, वो खाना खाती हैं।

وہ کپڑے بدلتی ہیں اور دفتر جاتی ہیں

वो कपड़े बदलती हैं और दफ्तर जाती हैं।

(8)क لڑکیاں گھر آ کر کھانا کھا کر

लड़कियां घर आकर, खाना खाकर।

کپڑے بدل کر دفتر جاتی ہیں

कपड़े बदलकर, दफ्तर जाती हैं।

ध्यान दें कि धातु +کر संरचना चाहे वर्तमान, भूतकाल या भविष्य काल में हो, या कर्ता एकवचन या बहुवचन या कर्ता पुल्लिंग या स्त्रीलिंग हो, सदा एक समान रहते हैं। यह संयुक्त वाक्य हैं जहां चार वाक्य संयुक्त हो जाते हैं। کر (कर) का कोई अर्थ नहीं है, यह उस संयुक्त क्रिया के समान है जहां व्याख्या करने वाला शब्द का कोई अर्थ नहीं होता है। लेकिन केवल व्याकरणीय प्रकार्य होता है। हमें धातु +کر (कर) संरचना में दो भिन्न कर्ता नहीं मिलेंगे। उदाहरणतः निम्नलिखित वाक्यों की तुलना करें :

(9) لڑکا گھر آئے گا وہ کھانا کھائے گا

लड़का घर आयेगा, वो खाना खायेगा।

وہ کپڑے بدلے گا اور دفتر جائے گا

वो कपड़े बदलेगा और दफ्तर जायेगा।

(9)क لڑکا گھر آکر کھانا کھا کر

लडका घर आकर, खाना खाकर

کپڑے بدل کر دفتر جائے گا

कपडे बदल कर दफ्तर जायेगा।

(10) لڑکے گھر آئیں گے وہ کھانا کھائیں گے

लडके घर आयेंगे, वो खाना खायेंगे।

وہ کپڑے بدلیں گے اور دفتر جائیں گے

वो कपडे बदलेंगे और दफ्तर जायेंगे।

(10)क لڑکے گھر آکر کھانا کھا کر

लडके घर आकर, खाना खाकर

کپڑے بدل کر دفتر جائیں گے

कपडे बदल कर दफ्तर जायेंगे।

(11) لڑکی گھر آئے گی وہ کھانا کھائے گی

लडकी घर आयेगी वह खाना खायेगी।

وہ کپڑے بدلے گی اور دفتر جائے گی

वो कपडे बदलेगी और दफ्तर जायेगी।

(11)क لڑکی گھر آکر کھانا کھا کر

کپڑے بدل کر دفتر جائے گی

लडकी घर आकर, खाना खाकर, कपडे बदलकर, दफ्तर जायेगी।

(12) لڑکیاں گھر آئیں گی وہ کھانا کھائیں گی

लडकिया घर आयेंगी, वो खाना खायेंगी

وہ کپڑے بدلیں گی اور دفتر جائیں گی

वो कपडे बदलेंगी और दफ्तर जायेंगी।

(12)क لڑکیاں گھر آکر کھانا کھا کر

کپڑے بدل کر دفتر جائیں گی

लडकिया घर आकर, खाना खाकर, कपडे बदलकर, दफ्तर जायेंगी।

ध्यान दें, क्रिया में क्रिया की धातु+ کر रचना ही पाई जाती है चाहे वाक्य

वर्तमानकाल, भूतकाल या भविष्यकाल में हो, या कर्ता एकवचन हो या बहुवचन या कर्ता पुल्लिंग हो या स्त्रीलिंग। क्रिया की मूलभूत रचना एक जैसी ही रहती है।

यह एक मिश्र वाक्य है जिसमें चार वाक्य आपस में जुड़कर एक मिश्र वाक्य बनाते हैं और जिसमें کر (कर) का कोई अलग से अर्थ नहीं है। यह एक संयोजी क्रिया की तरह है। इस तरह के मिश्र वाक्य में एक ही कर्म होता है। एक ही क्रिया रूप में दो भिन्न–भिन्न कर्ता नहीं हो सकते। निम्नलिखित वाक्यों की तुलना करें :

لڑکا گھر گیا عورت نے کھانا کھایا

लड़का घर गया, औरत ने खाना खाया।

والد نے کپڑے بدلے اور دفتر گئے

वालिद ने कपड़े बदले और दफ्तर गये।

इन वाक्यों को کر संरचना में परिवर्तित नही किया जा सकता है क्योंकि प्रत्येक वाक्य में भिन्न–भिन्न कर्ता हैं।

अभयास – 1

1. नीचे दिये गए वाक्यों की उपयुक्त संबंधवाचक सर्वनाम से पूर्ति करें :

(क) وہ آدمی .... بازار میں ملا تھا آپ کے لیے خط دے گیا ہے

(ख) .... آپ کا پتہ پوچھا تھا .... آگئے ہیں

(ग) .... نے آپ کو اپنی غزل سنائی تھی .... کا دیوان شائع ہوگیا ہے

(घ) حامد نے .... یہ معاملہ دیکھا تو فوراً اُس نے پولیس میں رپورٹ کی

(च) .... بچے نے شیر کو اپنی طرف آتے دیکھا تو خوف زدہ ہوگیا

2. संबंधवाचक या पूर्णकारी सर्वनाम के प्रयोग से दस वाक्य बनाईए :

جس، جب، جنھوں نے، جس طرف، جن دنوں، جس سال، کہ،
جہاں، جیسا، جس جگہ

3. کر और اور का प्रयोग करके निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति करें :

(क) وہ نماز پڑھ .... مسجد سے باہر گیا

(ख) انھوں نے کھانا کھایا .... سیر کے لیے چلے گئے

(ग) مہمان کمرے میں سامان رکھ............دوست سے ملنے چلا گیا

(घ) حامد بازار سے آیا.....ابا سے اجازت لے..........دوستوں کے ساتھ مل............
میدان میں کھیلنے لگا

4 संबंधवाचक /पूरक उपवाक्य या کر संरचना मे से जो उपयुक्त हो उयसे रिक्त स्थान की पूर्ति करें :

(क) وہ کتاب جو گم ہوگئی تھی کل الماری میں مل گئی ....

(ख) شیام نے جس شخص کو طلب کیا تھا وہ آج آگیا ....

(ग) حامد نے کہا کہ وہ امتحان میں کامیاب ہو گیا ہے ....

(घ) امی نے فرمایا کہ اچھے بچے اپنا کام روزانہ کرتے ہیں ....

(च) شاہد اسکول سے آکر کتابیں رکھ کر سب سے مل کر کھانا کھا کر سوگیا ....

अभ्यास – 2

1 पूर्णकारी / संबंधवाचक सर्वनाम के प्रयोग करके दस वाक्य बनाऐं :

2. पूर्णकारी کر संरचना या संबंधवाचक सर्वनाम के प्रयोग से निम्नलिखित सम्मिश्र वाक्यो की पूर्ति करें।

(क) انھوں نے کہا ....

(ख) سب نے دیکھا ....

(ग) .... مشاعرہ شروع ہوا تو ....

(घ) حامد نے سنا ....

(च) شیام استاد کو ہمراہ لے .... لال قلعہ گیا اور وہ
اس علاقے میں گھوم رہا تھا .... سب دکانیں
یکا یک بند ہوگئیں۔

अभ्यास – 1 उत्तर

खंड – 5

इकाई 1

1. (क) निर्देशक / ज्ञापक (ख) निर्देशक / ज्ञापक (ग) नकारात्मक
   (घ) विस्मयादिबोधक (च) आज्ञार्थक (छ) प्रश्नवाचक
2. (क) انجام دینے دو (ख) گذر جانے دو (ग) نہیں رہا
   (घ) کیسی کیسی مخلوق ہے (च) ہاتھ بھی لگایا
3. (क) کیا خوب (ख) واہ واہ ! (ग) کتنی افسوسناک
   (घ) یا خدا! (च) یا اللہ!
4. (क) नकारात्मक نہیں پڑھا (ख) सकारात्मक لایا
   (ग) नकारात्मक نہیں لگائی (घ) सकारात्मक گھر گئی ہے
5. (क) आज्ञार्थक (ख) विस्मयादिबोधक
   (ग) आज्ञार्थक (घ) विस्मयादिबोधक

इकाई 2

1. (क) کتنے روز (ख) کتنی دور (ग) کس
   (घ) کتنے (च) کس
2. (क) کیا (ख) کیا (ग) واہ واہ !

(घ) کس قدر (च) کتنی

4. (क) विस्मयादिबोधक (ख) आज्ञार्थक (ग) विस्मयादिबोधक

(घ) विस्मयादिबोधक (च) प्रश्नवाचक

इकाई 3

1. (क) × (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) × (च) ✓

2. (क) کے ساتھ (ख) اور (ग) مگر (घ) البتہ، یا

(च) تو (छ) ورنہ (ज) تو

3. (क) نہ صرف، بلکہ (ख) ساتھ ہی (ग) کیونکہ، اس لیے

(घ) یا (च) یا

इकाई 4

1. (क) جو (ख) جس نے، وہ (ग) جس شخص، اس

(घ) جب (च) جیسے ہی

3. (क) کر (ख) اور (ग) کر

(घ) کر، کر، اور

4. (क) संबंधवाचक उपवाक्य (ख) संबंधवाचक उपवाक्य

(ग) पूरक (घ) पूरक (च) کر संरचना

....

शब्दावली

آ

آئندہ	आने वाला, अगामी, फिर

ا

استاد	अध्यापक, गुरू, शिक्षक, किसी कला मे दक्ष व्यक्ति
اطلاعات	सूचनाएँ (इत्तला का बहुवचन)
امتحان	परीक्षा

ب

بحث	वाद विवाद
بہتر	अच्छा / अच्छी
بہترین	सबसे अच्छा, अत्युत्तम
بے ایمان	
بے چارہ	बेबस, निस्सहाय
بھروسا	विश्वास

پ

پرورش	पालन – पोषण
پسندیدہ	चयनित, वर
پیداوار	फसल, उत्पादन

ت

تاریخ	इतिहास, दिनाँक
تباہ	बर्बाद
تباہ کرنا	बर्बाद करना, विनाश करना
تحفہ	उपहार
ترقی	उन्नति
تعریف	प्रशसा
تعلق	सबध
تعلیم	शिक्षा
تعلیمی	शिक्षा सबधी, शैक्षिक
تعلیم یافتہ	शिक्षित, शिक्षा प्राप्त
تلاش	खोज
تلخ	कडवा
تماشائی	दर्शक
تندرست	स्वस्थ
تیز رفتار	तेज चलने वाला, तीव्रगामी

ج

جمع	बहुवचन, एकत्रित, इकट्ठा
جمع کرنا	इकट्ठा करना
جورو	पत्नी

ح

حسد	ईर्ष्या
حسین	सुन्दर
حفاظت	सुरक्षा
حفظ	कण्ठस्थ
حوض	जलाशय

ش

شاعر	कवि
شاعری	कविता
شاگرد	विद्यार्थी
شجاع	साहसी, वीर
شعبہ	अनुभाग
شوق	रूचि
شیریں	मीठा

ص

صف	पंक्ति, लाईन

ط

طالب علم	विद्यार्थी

ظ

ظلم	अत्याचार

ع

عالم	संसार
عالم	जानने वाला, विज्ञाता
عجیب وغریب	विस्मयकारी
عمارت	भवन
عمدہ	अच्छा
عموماً	आमतौर पर, प्राय

غ

غالب	19वीं शताब्दी का प्रसिद्ध कवि, हावी

خ

خراماں	मस्त चाल चलना
خط	पत्र, लकीर, रेखा
خطاطی	सुलेखन
خوبصورت	सुन्दर
خوش آمدید	स्वागत

د

داغ	धब्बा, निशान
درخواست	प्रार्थना, प्रार्थना पत्र
دستیاب	प्राप्त, हासिल

ذ

ذریعہ	माध्यम
ذہین	बुद्धिमान, सुनिज्ञ

ر

رحم	दया
رسم الخط	लिपि
روزہ	व्रत
رونق	चमक – दमक

ز

زمانہ	समय, काल
زمین داری	भूखंड स्वामी, जमीनदार संबंधी, जमीनदारी प्रथा

س

سبق	शिक्षा, अध्याय

غذا	खाना, भोजन, खुराक
غزل	काव्य मे विद्या विशेष
غم	दुख
غمگین	दुखी, दुख का मारा

ف

فراق	विरह, जुदाई
فساد	झगड़ा, दंगा
فضول	बेकार, निष्कर्य

ق

قاعدہ	नियम
قیمت	मूल्य

ک

کتاب خانہ	पुस्तकालय
کتب خانہ (کتب جمع کتاب)	पुस्तकालय
کردار	व्यवहार
کمبخت	अभागा
کند	भोटा
کند ذہن	बुद्धू
کوشش	प्रयत्न

گ

گفتگو	बातचीत

ل

لذیذ	स्वादिष्ट

م

مدرسہ	स्कूल, गुरूकुल
مرتبہ	पद, दर्जा, स्थान
مستقبل	भविष्य
مشاعرہ	कवि सम्मेलन
مشق	अभ्यास
معروف	प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध
منظر	दृष्य
موضوع	विषय

ن

نصف	आधा
نفیس	उत्कृष्ट

و

وارث	उत्तराधिकारी
واقعی	असली वास्तविक